खण्ड–07 सत्र–02 / अंक–11

बुधवार 10 मार्च, 2021 / 19 फाल्गुन, 1942 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

दूसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–07 (भाग–1) में अंक 09 से अंक 13 सम्मिलित है।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग
EDITORIAL BOARD

सी. वेलमुरुगन
सचिव
C. VELMURUGAN
Secretary

महेन्द्र गुप्ता
उप सचिव (सम्पादन)
MAHENDRA GUPTA
Deputy Secretary(Editing)

विषय–सूची

सत्र–2(भाग–1) बुधवार, 10 मार्च, 2021 / 19 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक–11

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	3–4
2.	विशेष उल्लेख (नियम–280)	6–15
3.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात	17
4.	समिति का प्रतिवेदन	18
5.	माननीय उपराज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव एवं उस पर चर्चा	19–74
6.	सदन में अव्यवस्था	75–83
7.	अल्पकालिक चर्चा (नियम–55)	84–116

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र – 2, बुधवार, 10 मार्च, 2021 / 19 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक 11

दिल्ली विधान सभा
सदन पूर्वाह्न 11:09 बजे समवेत हुआ।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए

1.	श्री अजेश यादव	16.	श्री गिरीश सोनी
2.	श्री अखिलेश पति त्रिपाठी	17.	श्री गुलाब सिंह
3.	श्रीमती ए धनवती चंदीला ए	18.	श्री हाजी युनूस
4.	श्री अजय दत्त	19.	श्री जय भगवान
5.	सुश्री अतिशी	20.	श्री जरनैल सिंह
6.	श्री अभय वर्मा	21.	श्री जितेंद्र महाजन
7.	श्री अनिल कुमार बाजपेयी	22.	श्री करतार सिंह तंवर
8.	श्री अमानतुल्ला खान	23.	श्री कुलदीप कुमार
9.	श्री अब्दुल रहमान	24.	श्री महेंद्र गोयल
10.	श्री अजय कुमार महावर	25.	श्री मुकेश अहलावत
11.	श्रीमती बंदना कुमारी	26.	श्री मदन लाल
12.	सुश्री भावना गौड़	27.	श्री मोहन सिंह बिष्ट
13.	श्री बी.एस. जून	28.	श्री नरेश यादव
14.	श्री धर्मपाल लाकड़ा	39.	श्री ओमप्रकाश शर्मा
15.	श्री दिनेश मोहनिया	30.	श्री पवन शर्मा

31.	श्री प्रलाद सिंह साहनी	42.	श्री संजीव झा
32.	श्री प्रवीण कुमार	43.	श्री सोम दत्त
33.	श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस	44.	श्री शिव चरण गोयल
34.	श्री प्रकाश जारवाल	45.	श्री सोमनाथ भारती
35.	श्री ऋतुराज गोविंद	46.	श्री सौरभ भारद्वाज
36.	श्री रघुविंदर शौकीन	47.	श्री सही राम
37.	श्री राजेश गुप्ता	48.	श्री एस.के. बग्गा
38.	श्री राज कुमार आनंद	49.	श्री विजेंद्र गुप्ता
39.	श्रीमती राजकुमारी ढिल्लों	50.	श्री विशेष रवि
40.	श्री राजेश ऋषि	51.	श्री विनय मिश्रा
41.	श्री रोहित कुमार	52.	श्री वीरेंद्र सिंह कादियान
		53.	श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र–2, बुधवार, 10 मार्च, 2021/19 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक–11

सदन पूर्वाह्न 11.09 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक स्वागत है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाईंट ऑफ आर्डर है।

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): कल हमारे ऑनरेबल मेंबर्स कुछ विषय इस सदन के समक्ष रखना चाहते थे, आपकी रूलिंग थी, आपने आदेश दिया कि आज केवल एलजी एड्रेस पर चर्चा होगी और उसके बाद जो दो दिन और हैं उस पर बजट पर चर्चा होगी लेकिन आज ही आपने शार्ट ड्यूरेशन डिस्कशन भी साथ में रख दिया है। आप अपने फैसले को पलट रहे हैं तो मैं आपसे इस मामले में न्याय चाहता हूं आखिर मेंबर्स को बोलने का अवसर कब मिलेगा। अगर शार्ट ड्यूरेशन डिस्कशन रखना है तो कुछ।

माननीय अध्यक्षः बैठिए बिधूड़ी जी, मैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष महोदय आपका फैसला था या नहीं था कल?

माननीय अध्यक्षः मैं बोल रहा हूं न, बता रहा हूं। मैं आपकी बात स्वीकार कर रहा हूं। मैं मना नहीं कर रहा, मैंने पूछा था मुरूगन जी से कि आज शार्ट नोटिस जिस विषय पर दो दिन से लग रहा था उस पर शार्ट नोटिस नहीं आया क्या ? तो आज आपकी ओर से शार्ट नोटिस नहीं आया। एक सेकेंड, देखिए जो कानूनी प्रक्रिया उसके हिसाब से। फिर मैंने कहा है कि अभी इसके बाद एक बार ले लेंगे फिर बात करेंगे उस पर।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, हमने तो आपके आदेश का पालन किया।

माननीय अध्यक्षः हां मैं मान रहा हूं, आज शार्ट नोटिस.... नहीं आया।

........व्यवधान.......

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आपने बिल्कुल इंकार कर दिया था कि हम 3 दिन केवल एलजी एड्रेस और बजट पर चर्चा करेंगे, हमने आपके आदेश को स्वीकार किया लेकिन अब अपने आदेश को आप ही बदल रहे हैं तो ये थोड़ा मुश्किल हो रहा है।

माननीय अध्यक्षः चलिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः जी मैं ये चाहूंगा कि आज इस एलजी एड्रेस पर पूरे दिन चर्चा होनी चाहिए अब इसको आप अगले जो बाद में दो दिन हैं उसमें ले लीजिए, हमको तैयारी का मौका मिलेगा सर।

माननीय अध्यक्षः 280, सुश्री भावना गौड़।

सुश्री भावना गौड़ः अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः देखिए मेरा 280 जिनके भी लगे हैं जो जितना मेरे पास लिखित में आया है, उसी पर बोलेंगे उससे एक शब्द भी ज्यादा नहीं बोलने दूंगा, ये ध्यान रखें।

सुश्री भावना गौड़ः सर जो लिखित में है मैं वहीं बोल रही हूं।

माननीय अध्यक्षः हां प्लीज।

विशेष उल्लेख (नियम 280)

सुश्री भावना गौड़ः अध्यक्ष महोदय, आज जो 280 में जो मैं मुद्दा रख रही हूं वो लगभग मेरी विधान सभा का ही नहीं है, दिल्ली के जितने भी विधायक हैं सभी के विधान सभाओं का ये मुद्दा है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान दिल्ली की अनधिकृत कॉलोनियों में बिल्डर्स माफिया द्वारा भवन उप–नियमों

का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन करके बड़ी संख्या में बनाए जा रहे बहुमंजिला–भवन/अवैध निर्माण की ओर दिलाना चाहती हूं, जिनके परिणामस्वरूप वहॉ के निवासियों को मूलभूत नागरिक सुविधाएं जैसे पेयजल, सीवर, बिजली, पार्किंग, सड़क आदि से संबंधित संकटों से जूझना पड़ रहा है। अध्यक्ष महोदय, ये बिल्डर्स विभिन्न रिहायशी क्षेत्रों में प्लॉट खरीदकर वहॉ बहुमंजिला भवन/कमर्शियल कॉम्पलैक्स/मॉल आदि का निर्माण कर रहे हैं जिनमें भवन–निर्माण के नियमों का कोई पालन नहीं किया जा रहा। हमारी सरकार दिल्लीवासियों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल आपूर्ति के लिए सदैव प्रयासरत रहती है, परंतु ये बिल्डर्स गैर–कानूनी तरीके से बनाए जा रहे अपने भवनों में बड़े–बड़े भूमिगत वॉटर–टैंक बनाकर उनमें पानी स्टोर कर लेते हैं और भवन–निर्माण तक उस पेयजल का प्रयोग किया जाता हैं जिसके कारण क्षेत्रवासी जल–संकट से ग्रस्त रहते हैं। ये बिल्डर्स अपने भवनों में सीवर–निकासी के लिए सरकारी सीवर–लाईन में अवैध रूप से अपनी लाईनें जुड़वा लेते हैं जिनसे सीवर–जाम की समस्या भी पैदा हो रही है। इसी प्रकार से बिजली संकट भी पैदा हो रहा है जिसके कारण क्षेत्रवासियों को बिजली–आपूर्ति में अस्थिरता का सामना करना पड़ता है और ये बिल्डर्स अपने भवन निर्माण के दौरान ट्रांसफॉर्मर लगाने के लिए छोटी–सी जगह भी नहीं देना चाहते। ये बिल्डर्स अपने भवनों/कमर्शियल कॉम्प्लैक्स में पॉर्किंग हेतु बेसमेंट/ग्राउंड फ्लोर परं जगह तो छोड़ते हैं लेकिन उनका इस्तेमाल कमर्शियल तरीके से किया जा रहा है जिसके कारण भवनों और कॉम्प्लैक्स में आने वाले लोग अपने वाहन सड़कों पर खड़े करते हैं जिससे यातायात की समस्या पैदा होती है। मूलभूत सुविधाएं कॉलोनी–वासियों के लिए सीमित मात्रा में होती हैं, परंतु ये बिल्डर्स उन सुविधाओं को अवैध तरीके से दोहन कर रहे हैं। ये बिल्डर्स 15 मीटर से भी अधिक ऊंचे भवनों का निर्माण कर रहे हैं, जो कि सरासर गैर–कानूनी है। इसीलिए बिल्डर्स के इन गैर–कानूनी/अवैध कार्यों को जल्द से जल्द नियंत्रित करना आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से आदरणीय मंत्री जी से अनुरोध करती हूं कि इस मामले को गंभीरता से दृष्टिगत करते हुए बिल्डर्स के इस गैर–कानूनी धंधे को जनहित में तुरन्त रूकवाने हेतु अविलम्ब आवश्यक कार्रवाई करने की कृपा करें। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद भावना जी। अभय वर्मा जी।

श्री अभय वर्मा: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से लक्ष्मीनगर विधानसभा में पेयजल की गंभीर समस्या की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ और मंत्री जी से आग्रह करता हूं कि मेरी विधान सभा क्षेत्र में जनता पानी के लिए बहुत त्राहिमाम मचा रही है क्योंकि पानी की सप्लाई जाड़े के दिनों में भी कम रही है और इसको लेकर विश्वकर्मा पार्क वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट बन कर तैयार हो चुका है लेकिन उसको चालू नहीं किया जा रहा है और अब गर्मी का समय शुरू हो गया है। आने वाले दिनों में बहुत पानी की समस्या हमारे क्षेत्र में होने वाली है। इसलिए विश्वकर्मा पार्क में जो वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट बन कर तैयार हुआ है, उसे मंत्री जी जल्द से जल्द चालू कराएं ताकि वहां के लोगों को पानी कम से कम दो घंटा सुबह और शाम मिल सके, ये मेरी प्रार्थना है।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद। श्री प्रवीण जी।

श्री प्रवीण कुमार: अध्यक्ष महोदय, बहुत बहुत धन्यवाद, आपने अपने क्षेत्र की समस्या को उठाने के लिए मुझे मौका दिया। अध्यक्ष महोदय, आपका ध्यान मैं अपने क्षेत्र की समस्या पर आकर्षित करना चाहूंगा। मेरे क्षेत्र में निजामुद्दीन बस्ती एक क्षेत्र आता है जहां पर मैं लगातार 4 साल से रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि वहां करीबन 25 से 30 हजार लोग रहते हैं और वहां के स्टूडेंट्स जो छठवीं से उपर जो बच्चे हैं उन्हें पढ़ने के लिए अपने घर से करीबन 3–4 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है और उसके कारण छात्राओं को कई सारी परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिए मेरी 4 साल से एक रिक्वेस्ट है, एक डिमांड है उसके बारे में कई सारे ट्रांजेक्शन भी हो चुके हैं। जल बोर्ड की जिस लैंड पर मीटर टेस्टिंग का काम इस समय चल रहा है वो जमीन अभी जल बोर्ड के अधीन है और वहां के निवासी चाहते हैं कि उस जमीन पर एक स्कूल भवन का निर्माण हो सके जिससे हमारी शिक्षा नीति के तहत निजामुद्दीन बस्ती में रहने वाले छात्र छात्राएं उस नए स्कूल का लाभ उठा सकें तथा छात्राओं को बाहर जाने में समस्या न हो। अभी डिपार्टमेंट के द्वारा इस पर कुछ पत्राचार भी हुआ था। उस जमीन का लैंड यूज चेंज करने के लिए डीडीए में उसकी फाईल है लेकिन डिपार्टमेंट द्वारा उसे परस्यू न करने के कारण....

माननीय अध्यक्षः हो गया, हो गया प्रवीण जी, हो गया।

श्री प्रवीण कुमारः वो इश्यू वहीं पर अटक गया है तो इसीलिए आपके माध्यम से मैं रिक्वेस्ट करना चाहूंगा एजुकेशन डिपार्टमेंट को कि उसको फॉलो अप करे और निजामुद्दीन बस्ती में जल्द से जल्द स्कूल निर्माण का काम शुरू हो।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। अखिलेश त्रिपाठी जी। अखिलेश त्रिपाठी? अजय महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी। मेरे क्षेत्र की एक समस्या है। मैं स्वास्थ्य मंत्री जी से व्यक्तिगत तौर पर भी मिला था निवेदन करने के लिए कि तीन डिस्पेंसरीज जिसको पॉलिक्लिनिक में बदला गया है उसमें से एक भजनपुरा वाली तो शुरू हो गयी है लेकिन अधिकारिक रूप से उसका हस्तांतरण आज तक नहीं हुआ है। लेकिन 2 डिस्पेंसरी जो अरविंदनगर और यमुना विहार में हैं उन दोनों में बिल्डिंग तैयार है, फर्नीचर लगा हुआ है लेकिन लगभग सालभर से धूल फांक रहे हैं। कुछ मशीनों की कमी के कारण डॉक्टर, स्टाफ की कमी के कारण वह शुरू नहीं हो पा रहा है। जगप्रवेश हॉस्पिटल और जीटीबी हॉस्पिटल से इन्हें अटैच किया गया है। उन दोनों से भी मैंने बात की थी तो उन्होंने कहा कि हमने मंत्री जी को निवेदन किया है कुछ स्टाफ हमें यहां मुहैया करवा दें, तो हम तुरंत इसको चालू करा देंगे। मेरे क्षेत्र के बुजुर्ग बहुत परेशान हैं, कोरोना का काल है, उन्हें बहुत दूर दूर जाना पड़ता है दवाइयों के लिए। मैं अपने क्षेत्र की जनता के लिए करबद्ध निवेदन करता हूॅ कि मंत्री जी इस पर ध्यान देकर बहुत ज्यादा स्टाफ की जरूरत नहीं है इसे तत्काल प्रभाव से शुरू करवाएं जिससे मेरी क्षेत्र की जनता के बुजुर्गों को और आम नागरिक को राहत मिल सके। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः महेन्द्र गोयल जी, श्री सोम दत्त जी।

श्री सोम दत्तः अध्यक्ष जी, धन्यवाद। मैं आपका ध्यान मेरे एरिया के अंदर व्याप्त एक समस्या की ओर दिलाना चाहता हूं। मुद्दा है सिविल डिफेंस वालंटियर की ट्रेनिंग और नियुक्ति में।

माननीय अध्यक्षः सोम दत्त जी, आगे से जो भी कुछ दें वो लिख कर दिया करें, ध्यान रखें।

श्री सोम दत्तः ठीक है जी, ठीक है। अध्यक्ष जी ये सिविल डिफेंस के वालंटियर्स रजिस्ट्रेशन प्रोसेस के लिए रोजाना सुबह ऑफिसिस में बहुत संख्या में लोग आते हैं। नए बच्चे अपने आप को रजिस्ट्रेशन कराने के लिए जिन्होंने अप्लाई किया हुआ है और इसमें जो आज की डेट में जो करप्शन चल रहा है, मैं सदन का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं। बड़ी संख्या में जो नए बच्चे रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं वो आकर बताते हैं कि जी हमें रजिस्ट्रेशन कराए हुए 4 महीने, 6 महीने, 8 महीने हो गए और अभी तक हमारा ट्रेनिंग का नंबर नहीं आया। जबकि वहीं दूसरी ओर कुछ और नए एप्लीकेंट्स का एक हफ्ते में, 5 दिन में, 7 दिन में नंबर आ जाता है। तो ये सोचने की जरूरत है कि उन्होंने ऐसा क्या किया कि उनके रजिस्ट्रेशन के एक हफ्ते के अंदर ही उनकी ट्रेनिंग भी हो गयी और उनकी नियुक्ति भी हो जाती है जबकि कुछ लोग इतने इतने महीनों से इंतजार कर रहे हैं और इस प्रोसेस को चेक करने की जरूरत है, इसमें व्याप्त खामियों को चेक करने की जरूरत है, एक Transparent प्रोसेस बनाने की जरूरत है ताकि सब को equally मौका मिल सके और मेरे साथ और भी बहुत सारे साथी यहां मौजूद हैं उनके पास भी उनके आफिसिस में इस तरह से रोजाना सिविल डिफेंस वालंटियर्स रिगार्डिंग कंप्लेंट्स जरूर आती होंगी। तो मेरी आपसे ये रिक्वेस्ट है इस पर खास तौर पर ध्यान दिया जाए और इस पर एकदम Transparent पालिसी बना कर इसके अंदर सबको इक्वली ट्रीट किया जाए ।

माननीय अध्यक्षः चलिए, श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपके द्वारा नियम 280 के तहत मुझे आपने समय दिया उसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान करावल नगर विधान सभा की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। करावल नगर विधान सभा क्षेत्र ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है। यहां पर किसानों की खेती के लिए, पानी की सिंचाई के लिए ड्रेन वगैरह की इस प्रकार की व्यवस्था की गयी थी जिसमें प्रमुखतः करावल नगर विधान सभा

क्षेत्र के अंदर बिहारीपुर रिलीफ ड्रेन, बंड ड्रेन और एस्केप ड्रेन 3 ड्रेन हैं। अध्यक्ष महोदय, जब ये जमीन खेती करने के लिए किसानों को नाले के उपयोग के लिए दी गयी थी तो ये जमीन अलॉटमेंट की गयी थी और अलॉटमेंट होने के बाद इसकी सारी देखरेख, सिंचाईं विभाग करता था। अध्यक्ष जी, ये सिंचाईं विभाग के अन्तर्गत आने वाले इन ड्रेनों से जो गंदे पानी की निकासी हो रही है सर उस गंदे पानी की निकासी के बजाए उन्होंने नालों के उपर अनऑथोराइज्ड एंक्रोचमेंट कर दी है और अनऑथोराइज्ड एंक्रोचमेंट से पिछले दिनों हमने जिस प्रकार देखा आईटीओ के पास में एक बहुत बड़ी ट्रेजडी घटी वो आपके सामने जीता–जागता उदाहरण है। मेरा आपके माध्यम से मंत्री जी से एक निवेदन है कि जिन लोगों ने इन नालों की बाउंड्री में मकान बना रखे हैं उसको तुरंत उस कब्जे को हटाया जाए जिससे कभी कोई हादसा न घटे, ये मेरा आपके माध्यम से निवेदन है। अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इन बड़े बड़े नालों के माध्यम से क्षेत्र के अन्तर्गत जितनी भी अनऑथोराइज्ड कालोनी हैं इनकी पानी की निकासी की जाती है। लेकिन अब नालों में अनऑथोराइज्ड एंक्रोचमेंट होने के बाद न तो सफाई कर्मचारी वहां काम कर सकता है, न कूड़ा हटा सकता है, न ड्रेन की इस प्रकार की कोई व्यवस्था हो सकती है। अध्यक्ष महोदय, मैंने इसकी शिकायत राजस्व विभाग में इन ड्रेनों और नालों की डिमार्केशन के लिए कई बार पत्र लिख दिया लेकिन हो क्या रहा है कि राजस्व विभाग के कानों में जूं नहीं रेंग रही है। वो न तो इसका डिमार्केशन करना चाहते हैं सर, न उस अनऑथोराइज एंक्रोचमेंट को हटाना चाहते हैं। आज मेरी आपके माध्यम से एक करबद्ध प्रार्थना है अध्यक्ष जी, चूंकि राजस्व विभाग संबंधी मामला है, मंत्री जी तुरंत राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दें, उनकी डिमार्केशन की जाए और उसकी भरत के अंदर जितना वो नाले की जमीन है उसको तुरंत खाली कराया जाए जिससे कि वहां सफाई व्यवस्था वगैरह हो सके और इसके डिमार्केशन से निश्चित रूप से करावल नगर की जनता को लाभ मिलेगा और मैं चाहता हूं कि आपके डायरेक्शन के बाद इस प्रकार की कार्रवाई जरूर होगी। मैं मंत्री जी से एक निवेदन जरूर करूंगा कि तुरंत राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया जाए और जल्दी से जल्दी इसकी डिमार्केशन की जाए। बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः थैंक्यू । हाजी यूनुस जी। अनिल बाजपेयी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः माननीय अध्यक्ष जी, आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने 280 नियम के अन्तर्गत मुझे बोलने का अवसर दिया। आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि दिनांक 9 मार्च, 2021 को इसी सदन में माननीय वित्त मंत्री जी कह रहे थे कि दिल्ली में कुल 1 लाख 40 हजार सीसीटीवी कैमरे लगाए गए है।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि मेरी विधान सभा गांधी नगर में जो विधान सभा क्षेत्र–61 में आती है, एक भी सीसीटीवी कैमरा अभी तक नहीं लगाया गया। अध्यक्ष जी, जैसा कि आप जानते हैं कि मैं पहले आम आदमी पार्टी का ही सदस्य था लेकिन जब पार्टी छोड़ दी क्योंकि आम आदमी पार्टी की सरकार जनता के भरोसे पर खरी नहीं उतर रही थी। इसीलिए मैंने भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन कर ली। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार इस बात का....

........व्यवधान..........

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः देखिए मुझे पढ़ने दीजिए भाई साहब प्लीज, जब 280 के अंतर्गत है, पढ़ने तो दीजिए, इसमें क्या बात है....

........व्यवधान..........

माननीय अध्यक्षः सौरभ जी, सौरभ जी। मदन जी उनको पढ़ने दीजिए प्लीज। आप सदन का समय खराब कर रहे हैं। मेरा ये कहना है ये सदन का समय खराब हो रहा है आज बहुत महत्वपूर्ण चर्चा है यहां प्लीज।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः मैं फिर दोहरा रहा हूं अध्यक्ष जी बात अधूरी रह गई जैसा कि आप जानते हैं कि मैं पहले आम आदमी पार्टी का सदस्य था और आम आदमी पार्टी की सरकार जनता के भरोसे पर खरी नहीं उतर रही थी, इसलिए मैंने भारतीय जनता पार्टी को ज्वाइन कर लिया।

माननीय अध्यक्षः अखिलेश जी बैठिए प्लीज।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार इस बात का बदला मुझसे ले रही है। सरकार के दावे के अनुसार जहॉ पूरी दिल्ली में इतनी बड़ी संख्या में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाए जा रहे हैं वहां कुछ सी.सी.टी.वी. कैमरे गांधी नगर में भी लगाए जाने चाहिए थे। हमारी विधानसभा क्षेत्र की जनता भी दिल्ली सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने की बराबर की हकदार है। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से अनुरोध करता हूॅ कि मेरी विधानसभा क्षेत्र में भी सी.सी.टी.वी. कैमरे जल्द से जल्द लगाए जाएं और पर्याप्त संख्या में लगाये जाएं। मेरी ही विधान सभा नहीं है माननीय ओम प्रकाश जी बैठे हैं, ये भी बीजेपी के सदस्य हैं, मोहन सिंह बिष्ट जी बैठे हैं, जितेंद्र महाजन जी बैठे हैं। सर किसी के यहां नहीं लगाए गए, ये बिल्कुल दुर्व्यवहार है और हम लोगों के साथ दलगत राजनीति से मंत्री जी, माननीय मंत्री जी मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूॅ।

माननीय अध्यक्षः बाजपेयी जी आपने पढ़ दिया ना पूरा?

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः दलगत राजनीति से ऊपर उठकर हम लोगों के यहां कैमरे लगाइये, धन्यवाद।

........व्यवधान..........

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। मदनलाल जी प्लीज। अखिलेश जी, हाजी यूनूस जी और अभी महेन्द्र गोयल जी आए नहीं है। 280 में महेंद्र गोयल जी आ गए क्या? हॉ हाजी जी आ गए है। आगे भविष्य में 280 का समय, नाम बुलता है बड़ा awkward position होती है आपको समय से आना चाहिए। 280 जिन्होंने लगाया था लॉट ऑफ ड्रा में उनका आ गया। अखिलेश जी।

श्री अखिलेश पति त्रिपाठीः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने अति–महत्वपूर्ण विषय उठाने के लिए मुझे मौका दिया। मैं सदन का ध्यान दिल्ली में चल रहे सी.ई.टी.पी.टी प्लांट की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। सारे सी.ई.टी.पी.टी प्लांट में एक बड़ी समस्या आ रही है, पिछले 15 सालों से वहां पर जो गाद निकलता है वो कहीं पर निष्पादित करने का कोई अभी तक ठोस नीति अभी बन नहीं पाई है जिसकी वजह

से सारे सी.ई.टी.पी.टी प्लांटों में जो है बोरियाँ भर–भर के रखने के लिए कह दिया गया और अब हालत ये है कि किसी भी सी.ईटी.पी.टी प्लांट में थोड़ा भी जो है गाद रखने की जगह नहीं बची है और जिससे सी.ईटी.पी.टी प्लांट का संचालन भी प्रभावित होने का डर है। हमारी सरकार चूंकि पर्यावरण के लिए बहुत ही संवेदनशील सरकार है और मैं धन्यवाद भी देना चाहता हूं मुख्यमंत्री जी को, क्योंकि पर्यावरण के लिए बजट में भी बहुत कुछ किया है। अगर इस पर भी कोई ठोस नीति बन जाए माननीय मंत्री जी बैठे हैं ता सी.ईटी.पी.टी प्लांट के संचालकों को बहुत राहत मिलेगा। मैं पिछले दिनों अपने यहां जीटी करनाल रोड इंडस्ट्रीयल एरिया के सी.ईटी.पी.टी प्लांट का दौरा भी किया था और वहां के सारे संचालक मंडल और वहां के सारे फैक्ट्री के मालिक भी थे, उन्होंने जोरशोर से ये बातें कही है।

अध्यक्ष महोदयः हो गया अखिलेश जी पूरा हो गया।

श्री अखिलेश पति त्रिपाठीः तो मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी तुरंत इस पर संज्ञान लें और क्योंकि 15 वर्षों से पिछली सरकारों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। हमारी सरकार बहुत संवेदनशील सरकार है और इस पर जल्दी से जल्दी ठोस नीति बन जाए, ताकि जो ठोस कचरा निकलता है उसका निष्पादन कहीं पर जो है शीध्रता से किया जा सके, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अखिलेश जी का ये विषय है, ये बहुत महत्वपूर्ण, जब से प्लांट लगे तब से ये गाद वहीं पड़ी है, सभी प्लांटों में माननीय जैन साहब उसका उत्तर देना चाह रहे है।

माननीय स्वास्थ्य मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन) : मैं बताना चाहूंगा कि जो इसका वेस्ट इकट्ठा होता है ये Hazardous waste की category में आता है। बवाना में hazardous waste plant बन रहा है और बहुत ही जल्दी बनकर तैयार हो जाएगा, जल्दी ही उसका करा दिया जाएगा। दिल्ली सरकार ने बनाना स्टार्ट कर दिया, दो–तीन महीने में तैयार हो जाएगा, थैंक्यू।

अध्यक्ष महोदयः हाजी यूनूस जी।

श्री हाजी यूनुसः अध्यक्ष जी नमस्कार, सभी माननीय मंत्रीगण, सभी हमारे साथी सभी को नमस्कार। अध्यक्ष जी आपने मुझे 280 के तहत बोलने का मौका दिया बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं बताना चाहता हूं 2015 से मुस्तफाबाद विधान सभा में बीजेपी के विधायक थे, आम आदमी पार्टी का वहां या दूसरी पार्टी का कोई विधायक नहीं था। जहां पूरी दिल्ली पिछले 6 साल से ऐतिहासिक विकास की तरफ अग्रसर थी, वहीं मुस्तफाबाद विधानसभा का बुरा हाल है। इतना बुरा हाल है कि सैकड़ों करोड़ रूपये दिल्ली सरकार की तरफ से दिए जाने के बावजूद आज मुस्तफाबाद विधान सभा के मेन रास्ते हैं जैसे 25 फुटा, जैसे रामलीला मैदान 33 फुटा। इसी तरह बहुत से मेन रास्ते, आज उनकी हालत ये है कि गाड़ी से तो क्या पैदल भी निकलना मुश्किल है। मुस्तफाबाद विधान सभा की हालत बद से बदतर हो चुकी है। आज तक इतिहास में मैंने देश में कहीं भी किसी भी स्टेट में ऐसा नहीं देखा की जहां जो पार्टी सत्तारूढ़ हो और दूसरी पार्टी का विधायक हो और उसको इतना फंड दिया गया हो जितना मुस्तफाबाद में दिया गया था। इसके बावजूद मुस्तफाबाद के अंदर कोई भी विकास कार्य नहीं हो सके। वहीं दूसरी ओर दिल्ली दंगों में सबसे ज्यादा नुकसान मुस्तफाबाद विधान सभा क्षेत्र को हुआ था। ये पहले से ही इतना पिछड़ा हुआ था, दंगों की वजह से, कोरोना की वजह से, लॉकडाउन की वजह से और बुरा हाल हो चुका है। और ये सभी जानते हैं कि पिछले साल कोरोना जैसी महामारी से विधायकों को कोई फंड नहीं मिला। तो मेरा आपसे इस सदन के माध्यम से आग्रह है कि मुस्तफाबाद को एक स्पेशल पैकेज मिले जिससे वहां की जनता की हालत सुधर सके, वहां के हालत सुधर सकें, इसके लिए मैं आपका और सरकार का, माननीय मुख्यमंत्री जी और सभी मंत्रियों का आभार व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। अब माननीय सत्येन्द्र जैन जी।

श्री अजय दत्तः अध्यक्ष जी एक मेरा।

माननीय अध्यक्षः नहीं हो गया, अजय दत्त जी प्लीज। नहीं छोड़ जाइए। जो नियम है उसके अंतर्गत मैंने लिया। अजय दत्त जी आप बैठिए प्लीज।

श्री अजय दत्तः सफाई कर्मचारी हैं, उनकी नौकरियॉ जा रही है।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी खड़े हुए हैं। नहीं मैं कोई समय नहीं दे रहा। आपके बोलने से रिकॉल नहीं होगा ये। श्री सत्येन्द्र जैन जी माननीय मंत्री to lay copies of the following on the table of the House. CAG Audit Report on the annual accounts of the IIT Delhi, Indraprastha Institute of Information Technology श्री सत्येन्द्र जैन। अजय दत्त जी बैठिए आप, मंत्री जी खड़े है।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः हॉ बैठ जाएं। वो मैंने भेज दी एप्लीकेशन। अजय दत्त जी बैठिए मैं रिक्वैस्ट कर रहा हूं, बैठिए प्लीज।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः जिनका नम्बर से, लॉट आफ ड्रॉ से आता है उनको मिलता है, आप कल लगाइएगा। कल आ जाएगा, बैठिए प्लीज। माननीय मंत्री जी खड़े हैं इम्पोर्टेंट काम है।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः दिलिप पांडे जी बैठाइए उनको प्लीज। नहीं मैं अलाउ नहीं कर रहा हूं, बिल्कुल अलाउ नहीं कर रहा मैं। जो मेरे पास नियम के अंदर आ गए मैंने वो लिए है।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः आप नहीं हैं यहां 10 बोलने वाले है, 24 लोगों ने कल लगाये थे, अगर एक को मैं बुलाउंगा 24 के 24 खड़े होंगे। सोमनाथ जी का भी है। बैठ जाइए अब। श्री सत्येन्द्र जैन जी।

माननीय स्वास्थ्य मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन): आदरणीय अध्यक्ष महोदय मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दु क्रमांक–2 के उपबिन्दु–I में दर्शाए गए दस्तावेजों की अंग्रेजी व हिन्दी प्रतियॉ सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

2. I. 1. इन्द्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के वित वर्ष 2018–19 हेतु वार्षिक लेखों पर नियंत्रक महालेखा परीक्षक के लेखा परीक्षा प्रतिवेदन सहित कार्यवाही प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतियां)[1]

2. गुरू गोविंद सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली के वित वर्ष 2016–17 हेतु लेखा परीक्षा प्रतिवेदन सहित वार्षिक लेखे (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतियां)[2]

माननीय अध्यक्षः श्री सत्येन्द्र जैन जी to lay copies of the following on the Table of the House regarding DUSIB.

माननीय स्वास्थ्य मंत्री : आदरणीय अध्यक्ष महोदय मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दु क्रमांक–2 के उप बिन्दु–II में दर्शाए गए दस्तावेजों की हिन्दी व अंग्रेजी प्रतियॉ सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

II. 1. दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड का वर्ष 2019–20 हेतु वार्षिक प्रतिवेदन (अंग्रेजी प्रति)[3]

माननीय अध्यक्षः डीईआरसी का भी है Annual Accounts Reports of DRC.

माननीय स्वास्थ्य मंत्रीः आदरणीय अध्यक्ष महोदय मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दु क्रमांक–2 के उप बिन्दु–II में दर्शाए गए दस्तावेजों की प्रतियॉ हिन्दी व अंग्रेजी में सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं। ये क्रमांक–II का 2 है।

II. 2. दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग के वित वर्ष 2019–20 हेतु वार्षिक लेखा प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतियां)[4]

---

1 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21813 पर उपलब्ध।

2 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21814 पर उपलब्ध।

3 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21815 पर उपलब्ध।

4 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21816 पर उपलब्ध।

माननीय अध्यक्षः Presentation of the Reports:

Shri Sahi Ram Ji, Sh. Kartar Singh Tanwar ji to present the 1st Report of Committee on Welfare of Other Backward Classes

श्री सही रामः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण समिति का प्रथम प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत करता हूं।[5]

माननीय अध्यक्षः श्री सही राम जी to present the special report on Committee on Welfare of Other Backward Classes, second भी है आपकी दोनों हो गए?

श्री सही रामः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण समिति का द्वितीय प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत करता हूं।[6]

माननीय अध्यक्षः श्री मदनलाल जी, विरेन्द्र सिंह जी to present the 1st report of the Department related Standing Committee on Administrative matters.

श्री मदन लालः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से प्रशासनिक मामलों पर विभाग से संबंधित स्थायी समिति का प्रथम प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत करता हूं।[7]

माननीय अध्यक्षः Motions of thank on Hon'ble Lt. Governor's address:

Shri Gopal Rai, Hon'ble Minister of Development to move the following motion:

"that this House expresses its gratitude to Hon'ble Lieutenant Governor for his address delivered to the Assembly on 8th March, 2021." Shri Gopal Ji.

माननीय विकास मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय मैं आपकी अनुमति से प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि यह सदन दिनांक 8 मार्च, 2021 को उप

5 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21817 पर उपलब्ध।

6 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21818 पर उपलब्ध।

7 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21819 पर उपलब्ध।

राज्यपाल महोदय द्वारा विधान सभा को दिए गए अभिभाषण के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। अध्यक्ष महोदय, 8 मार्च को माननीय उप राज्यपाल महोदय ने सदन के सम्मुख पिछले एक साल के दौरान जो पूरी दुनिया के लिए, पूरी मानवता के लिए एक विषम परिस्थिति थी, उन स्थितियों में दिल्ली सरकार ने किस तरह से जनता को साथ लेकर उन परिस्थितियों का मुकाबला किया उसका विस्तृत ब्यौरा सदन के समक्ष रखा। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं उप राज्यपाल महोदय को उन्होंने जिस तरह से सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। अध्यक्ष महोदय हमारा देश और दुनिया के तमाम देशों के अंदर अलग–अलग तरह की बीमारियों से मानव सभ्यता झूझती रही है। लेकिन जिस तरह का संकट पूरे दुनिया ने और खासतौर से भारत के अंदर आया, दुनिया की महाशक्ति बनने का सपना देखने वाली ताकत चीन के अंदर से ये कोरोना वायरस पैदा हुआ और दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति अमेरिका के अंदर सबसे ज्यादा मौत का सामना लोगों को करना पड़ा। दिल्ली हमारे देश की राजधानी है, देश के अन्य हिस्सों में भी कोरोना का संकट आया, उससे लोग जूझे। लेकिन हम आप सब जानते है कि अब तक दुनिया के वर्ल्ड स्वास्थ्य आर्गनाइजेशन, दुनिया के बड़े–बड़े रिसर्च बताते है कि गरीबी से बीमारी पैदा होती है। ये दुनिया की पहली अनोखी बीमारी है जो हवाई जहाज से भारत के अंदर आई। देश की राजधानी होने के नाते, दूसरे देशो से सबसे पहले फलाइट दिल्ली आई और सबसे पहले लोग दिल्ली के अंदर कोरोना वायरस से संक्रमित हुए। केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने मिलकर उनको सुविधा देने का काम शुरू किया। सबसे पहले इस वायरस को फैलने का मौका दिल्ली के अंदर मिला। दिल्ली के अंदर एक नई तरह की चुनौती पैदा हुई, लेकिन मैं बधाई देना चाहता हूं दिल्ली के मुख्यमंत्री और दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री को, दिल्ली की जनता को बधाई देना चाहता हूं कि जिस तरह से इस महामारी का सामना पूरी मुस्तैदी के साथ सरकार ने किया आज पूरे देश के अंदर उसका एक उदाहरण बना हुआ है। दिल्ली के अंदर स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए बेड का इंतजाम किया गया, दिल्ली के अंदर लोगों को इस बीमारी से निजात दिलाने के लिए प्लाज्मा बैंक बनाया गया। दिल्ली के अंदर आइसोलेशन में इसके इलाज की प्रक्रिया शुरू की गई। डॉक्टरों की टीम बिठाई गई जो सीधे मरीज को फोन करके उनको गाइड करते थे, पूरी दिल्ली के अंदर सतर्कता के साथ–साथ इलाज कराने

का काम जिस तरह से दिल्ली सरकार ने किया आज वो एक मिसाल बना है। और इसके लिए मैं तहे दिल से उप–राज्यपाल महोदय के इस वक्तव्य का धन्यवाद करना चाहता हूं और दिल्ली के लोगों को बधाई देना चाहता हूं कि दिल्ली के लोगों ने इस महामारी का तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद मुकाबला किया और एक रोल मॉडल प्रस्तुत किया। अध्यक्ष महोदय, ना सिर्फ मुकाबला किया इस महामारी ने दिल्ली के अंदर एक साथ तीन संकट पैदा किये। पहला हमला लोगों की जिन्दगी पर था कि जिंदगी बचाई कैसे जाए। दूसरा हमला था कि जिंदगी चलाई कैसे जाए। क्योंकि जब महामारी आई तो देश के अंदर लॉकडाउन की घोषणा हुई। लॉकडाउन के बाद गरीब लोगों के लिए अपनी जिंदगी को चलाना अपने भोजन का इंतजाम करने का एक बड़ा संकट पैदा हुआ और उस समय में मैं बधाई देना चाहता हूं कि दिल्ली की सरकार ने दिल्ली के अंदर देश की पहली सरकार है जिसने दस लाख लोगों को सुबह और शाम जिनके पास अन्न का संकट था, भोजन का संकट था उन सब लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करने का काम किया और दिल्ली के इन तमाम विधायकों को मैं सलाम करना चाहता हूं। जब लोग अपने घरों में छुपे हुए थे डर के मारे हमारे माननीय विधायकों ने, तमाम दिल्ली के लोगों ने, तमाम संस्थाओं ने अपनी जान की बाजी लगा कर दिल्ली के गरीबों की सेवा करने का काम किया और सरकार से हाथ मिलाकर दिल्ली के लोगों की सेवा की और संकट से उबारा। दिल्ली सरकार ने उस समय लोगों के राशन की व्यवस्था की जिनके पास कार्ड था। लेकिन जिनके पास कार्ड नहीं था, उन लोगों को भी सूखा राशन देने के लिए कूपन जारी किया गया। दिल्ली के अंदर ऑटो ड्राईवर्स के लिए टैक्सी ड्राईवर्स के लिए सरकार ने अलग से पैकेज दिये। तमाम जो कन्सट्रेक्शन मजदूर थे उनके लिए पैकेज दिये और एक नए तरह के जो भूख का संकट था उससे भी निपटने का काम किया। लेकिन इससे भी बड़ा संकट सरकार के सामने था कि जब पूरी तरह से लॉकडाउन हुआ, पूरी अर्थव्यवस्था ठप्प हो गई तब एक बड़ी चुनौती थी कि अर्थव्यवस्था को कैसे ठीक किया जाए। कैसे इन चीजों को संचालित किया जाए। मैं इस सरकार को बधाई देना चाहता हूं और हार्दिक धन्यवाद करना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय, जब देश की तमाम सरकारों की अर्थव्यवस्था चरमरा रही थी उस समय इस सरकार ने अपने मैनेजमेंट के दम पर न सिर्फ सहायता की बल्कि दिल्ली के लोगों को जो फ्री

बिजली देने का काम था वो पूरे इस कोरोना काल में जारी रखा। लोगों को पानी देने का काम इस कोरोना काल में जारी रखा। महिलाओं की यात्रा का जो काम है वो कोरोना काल में जारी रखा। जो सुविधाएं आम आदमी को मिल रही थी इस कोरोना काल के अंदर इस सरकार ने अपने आर्थिक प्रबन्धन के दम पर हमने इसको जारी रखा और इसलिए अध्यक्ष महोदय, आज ये सरकार बधाई की पात्र है कि इन विपरीत परिस्थितियो में भी अपने आर्थिक प्रबन्धन के दम पर एक नया मॉडल खड़ा किया। तमाम जो योजनाएं थी निश्चित रूप से आप सब जानते हैं कि आर्थिक संकट की वजह से विकास के कार्य में जो रफ्तार थी वो धीमी हुई लेकिन उसके अलावा सरकार ने उस आर्थिक प्रबन्धन के दम पर चाहे हमारे अधिकारी हों, चाहे कर्मचारी हों उन सब लोगों की जिंदगी चलती रही इसकी व्यवस्था की। केवल इतना ही नहीं अध्यक्ष महोदय, देश के अंदर तमाम जगह कोरोना योद्धाओं ने शहादत दी, क्योंकि ये एक अलग तरह की लड़ाई थी। बार्डर पर तो पता होता है कि चौबीस घंटे हमारे योद्धा तैयार रहते हैं लेकिन जिस तरह का हमला घर के अंदर एक–एक व्यक्ति के ऊपर आया, परिवार के लोग परिवार से दूर रहने लगे। एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना लोगों ने बंद कर दिया। ऐसे समय में हमारे डॉक्टरों ने, हमारी नर्सो ने, सफाई कर्मचारियों ने, पुलिस के जवानों ने, तमाम कोरोना योद्धाओं ने अपनी जान की बाजी लगा कर देश की और दिल्ली के लोगों की सेवा की। देश की पहली सरकार है जो इन कोरोना योद्धाओं की शहादत पर उनके परिवारों के दुख दर्द में शामिल हुई और एक करोड़ रूपया देने का काम किया जिससे कोरोना योद्धा दिल्ली के लोगों की और देश के लोगों की जिंदगी बचाने का काम कर सकें। अध्यक्ष महोदय, सरकार ने इन तमाम चीजों को आगे बढाते हुए पिछले साल दिल्ली के अंदर जिस तरह से एक तरफ कोरोना की महामारी चल रही थी दूसरी तरफ जब अक्टूबर के महीने में प्रदूषण का हमला हुआ दिल्ली के लोगों की सांसों पर संकट आया। हम आप सब जानते हैं अध्यक्ष महोदय कि कोरोना के संकट के दौरान सबसे ज्यादा आक्सीजन की कमी सामने आई। वैसे में जब प्रदूषण का संकट आया चारों तरफ जब पराली जलना शुरू हुई और धुंए की चादर दिल्ली के ऊपर जब चारों तरफ से मंड़राने लगी, दिल्ली की सरकार और दिल्ली के मुख्यमंत्री ने मोर्चा सम्भाला और दिल्ली के अंदर 'युद्ध प्रदूषण के विरूद्ध' अभियान शुरू हुआ। दिल्ली के अंदर जो पराली की समस्या

है उसके समाधान के लिए पूसा इन्सटीट्यूट के साथ मिलकर बायो–डी–कम्पोजर का experiment किया गया और जो सफल रहा और हमें उम्मीद है कि इस साल कम से कम हमने केन्द्र सरकार के विभागों से भी बात की है कि जो पराली चारों तरफ जलती है उसका समाधान मिल पाए। उसमें एक बड़ा कदम जो है दिल्ली सरकार ने पूसा इन्सटीट्यूट के साथ मिलकर सफलतम प्रयोग किया है। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर चाहे ' रेड लाइट ऑन और गाड़ी ऑफ' का जो अभियान रहा। चाहे दिल्ली के अंदर Anti Dust Campaign रहा हो, युद्ध स्तर पर सरकार ने काम किया। दिवाली के समय में प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार ने एक सामूहिक दिवाली का आयोजन किया। मुझे लगता है अध्यक्ष महोदय, विकट परिस्थितियों में जो समस्याओं के समाधान के लिए सकारात्मक कदम बढ़ा सकते हैं उस सरकार का नाम है अरविंद केजरीवाल की सरकार। अध्यक्ष महोदय, मैं उप–राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का धन्यवाद प्रस्तुत करते हुए एक ही बात कहना चाहता हूं कि ये सरकार विकट से विकट परिस्थितियों में भी जनता के प्रति जो हमारा commitment है उस commitment के लिए हम संकल्पबद्ध है। कल भी हमने जनता के लिए खड़ा हो करके काम किया है आज भी कर रहे हैं और जो कुछ कमियां रह गई हैं उसे भविष्य में पूरा करने का काम करेंगे। बहुत–बहुत शुक्रिया। धन्यवाद। अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद गोपाल जी। श्री विशेष रवि जी।

श्री विशेष रवि: बहुत–बहुत शुक्रिया अध्यक्ष जी। आपने मुझे माननीय उप–राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने के लिए मौका दिया है । अध्यक्ष जी, यह बहुत ही खुशी का मौका है कि पूरी दिल्ली के अंदर कल जब बजट पेश हुआ है एलजी साहब के अभिभाषण के बाद। जिस तरह से लोगों की कई प्रतिक्रियाएं आ रही है जिस तरह से लोगों का response आ रहा है और लोग जिस तरह से बात कर रहे हैं बता रहे है इससे ये साफ पता लगता है कि दिल्ली के अंदर जो सरकार है उनके द्वारा सरकार के द्वारा जो काम किया गया है इसकी जितनी तारीफ की जाए, जितनी इसके बारे में प्रशंसा की जाए, वो कम है। एलजी साहब ने अपने अभिभाषण में बहुत सारी बातों का जिक्र किया। दिल्ली की सरकार के जो काम है जो अच्छे कार्य हैं उनके बारे में बताया। खुशी की बात ये है कि

जिन–जिन कामों के बारे में एलजी साहब ने जिक्र किया इसमें से ज्यादातर चीजों के बारे में जनता बहुत अच्छे से जानती है। जनता ने हर उस काम को recognise किया है और सबके ध्यान में ये चीजें अच्छे से हैं कि दिल्ली में एक सरकार जो हमारे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी की लीडरशिप में काम कर रही है वो इस विकट समय में जिस समय पूरी दुनिया एक बहुत बड़ी मुश्किल में महामारी को झेल रही थी, ऐसे समय के अंदर भी ऐसी सरकार, दिल्ली की सरकार ने जितने सक्रिय रूप से अपनी जिम्मेदारी को निभाया है इसकी तारीफ जनता के अंदर हर व्यक्ति करता है। लोगों के अंदर ये संदेश है लोगों का यह कहना है कि कोरोना महामारी के समय जब ज्यादातर सरकारें hopeless थी, उनके पास कोई नीति नहीं थी, उनके पास कोई इन्तजाम नहीं था, कोई तरीका नहीं था, उस समय दिल्ली की सरकार हर वक्त हर रोज अपने नियमों, अपने कानूनों में, अपनी नीतियों में बदलाव कर रही थी। जिस तरह से हालात बदल रहे थे उसी तरह से दिल्ली की सरकार की नीतियां बदल रही थी और दिल्ली के लोग इस बात को लेकर बहुत गौरव महसूस करते हैं कि दिल्ली के हमारे मुख्यमंत्री जिस तरह से खुद उन्होंने बागडोर सम्भाली हुई थी ऐसे मुश्किल समय के अंदर ऐसा किसी राज्य में देखने को नहीं मिला। अनेकों काम कोरोना के काल में दिल्ली की सरकार, हमारी सरकार ने किये। जिस तरह से सरकार के द्वारा लाई गई व्यवस्थाओं को दिल्ली के लोगों तक पहुंचाया गया वो बहुत सराहनीय था। क्योंकि आम तौर पर ये होता है कि ऐसे मुश्किल समय के अंदर नीतियां तो बना लेते हैं ऑफिस में बैठकर लेकिन जमीन तक उनका पहुंचना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में सरकार और उसके बाद अधिकारी, उसके बाद जो चुने हुए हमारी सरकार के लोग हैं हम सबने जिस तरह से काम किया जनता को उन सभी नीतियों का पूरा लाभ मिल पाया। मैं खुद भी infected हुआ था कोरोना के समय में और उस समय ये महामारी बहुत पीक पर थी मई के समय में। मैं बताना चाहूंगा कि जिस दिन infection हुआ था उससे पहले हमारे कार्यालय पर डेली भीड़ लगती थी, लम्बी–लम्बी लाईन लगती थी। कोई राशन के लिए आता था, कोई अपना सेनेटाईज कराने के लिए लिखवाने के लिए आता था। जो इलाके के बुजुर्ग हैं उनको मदद करने के लिए हम उनके घर तक दवाईयां पहुंचा रहे थे। जो भी हम काम कर पा रहे थे उस की वजह से हम सभी विधायक साथियों के कार्यालयों में भीड़ लग रही थी। मैं कहना चाहूंगा कि

जिस तरह से हम सभी यहां उपस्थित विधायकों ने उस मुश्किल समय में मजबूती से डट कर सामना किया है ये बड़ा सराहनीय है। एक भी अपना कार्यालय बंद नहीं किया पब्लिक के लिए। हर रोज वहां हमारे कार्यालय में लगने वाली भीड़ को हमने अटेंड किया। जैसे–जैसे मुख्यमंत्री जी के द्वारा आदेश आ रहे थे हमारे पास, हम उनका पालन कर रहे थे। मुझे लगता है कि शायद किसी और राज्य में ऐसा नहीं हुआ होगा जहां पर चुने हुए लोगों ने इतनी मेहनत करके इस मुश्किल समय के अंदर अपनी पब्लिक को सम्भाला होगा। एलजी साहब ने बहुत सारी चीजें सरकार के बारे में बताई। मैं सिर्फ एक दो पर ही आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा। एलजी साहब ने जो इस मुश्किल समय के अंदर लोगों की जो नौकरियां जाने का जिक्र किया और नौकरियां जाने के बाद जिस तरह से दिल्ली सरकार ने उसको लेकर काम करना शुरू किया। हमारे कार्यालय में रोजाना कोरोना के बाद बड़ी संख्या में महिलाएं भी पुरूष भी आ रहे थे ईवन बुजुर्ग भी आ रहे थे घरों से निकल कर। कह रहे थे कि घर में बहुत दिक्कत हो गई है। हमें कामकाज की भी दिक्कत है। हमें आप मदद कीजिए कोई रोजगार बताइए। जिस तरह से सरकार ने जो पोर्टल बनाया है उसके बाद लोगों ने वहां पंजीकरण करना शुरू किया और उसके बाद लोगों को उससे मदद मिलनी शुरू हुई। उससे भी लोग बहुत खुश रहे, उनको बहुत राहत मिली। दिल्ली के अंदर ऐसे समय में जिस समय अन्य सरकारों के पास कोई योजना नहीं थी, ऐसे समय के अंदर दिल्ली सरकार ने एक तो अपने बजट के अंदर वृद्धि की है, जहां ये अपेक्षा की जा रही थी कि हमारा बजट कम होगा। न सिर्फ हमने अपना बजट वृद्धि करते हुए दिखाया है जो कैग की रिपोर्ट भी कह रही है कि दिल्ली एक मात्र शहर है, एक मात्र राज्य है जिसका बजट हर बार मुनाफे में होता है, फायदे में होता है। इस बार भी जो बजट हमारा पेश हुआ है उसमें जो हम नई सरकार के द्वारा नई नीतियां लेकर हम आएं है उसको लेकर ये साफ समझ में आता है कि हमारी सरकार एक भी दिन चाहे कोरोना के समय से लेकर अब तक एक भी दिन वो आराम से नहीं बैठी है। उनका लगातार प्रयास रहा है कि नई नीतियों पर लोगों के लिए काम किया जाए। कल जिस तरह से ये बताया गया माननीय वित्त मंत्री के द्वारा कि हम पूरी दिल्ली के अंदर राष्ट्रीय ध्वज लगाएंगे तो मैं आपको बताना चाहूंगा कि ऑलरेडी हमारे पास लोगों के द्वारा लोकेशन्स की रिक्वेस्ट आनी शुरू हो गई है कि हमारे

इलाके में आप यहां लगाइए, हमारे इलाके में यहां लगाइए। हर लिहाज से ये बजट और एलजी साहब का अभिभाषण बधाई का पात्र है। मैं पूरे सदन की तरफ से और दिल्ली की आम जनता के साथ सहभागिता करते हुए उप–राज्यपाल महोदय के द्वारा दिये गए अभिभाषण का धन्यवाद करता हूं। आपका भी धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे इस मौके पर बोलने का अवसर दिया। धन्यवाद। बहुत–बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्षः श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपके द्वारा मुझे माननीय उप–राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के सम्बन्ध में जो आपने मौका दिया उसके लिए तो मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, ये सत्य है और माननीय उप–राज्यपाल महोदय ने जिस प्रकार से अभिभाषण को प्रस्तुत करने से पहले कई बातों का इस सदन के अंदर चर्चा की और सरकार ने उसको जिस प्रकार से बुकलेट के माध्यम से लिखित में उसको प्रस्तुत किया ये मैं मानता हूं राजनीति से उठकर बहुत सी चीजें उनकी चर्चा करना और सार्थक रूप में चर्चा हो ये इस प्रकार का विषय बिन्दु होना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों के अंदर जिस प्रकार की कोरोना जैसी कोविड–19 जैसी बीमारी दिल्ली ही नहीं पूरे देश के अंदर कहर ढा गई थी उसमें एक सरकार नही सभी सरकारें जिस प्रकार से परेशान हो गई कि किस प्रकार से लोगों की जान बचाई जाए ये बहुत बड़ी चिन्ता का विषय था। लेकिन अध्यक्ष महोदय, मैं इस अभिभाषण को बहुत ध्यानपूर्वक सुन और पढ़ रहा था। मुझे एक अच्छी बात लगी। अच्छी बात ये लगी कि दिल्ली की सरकार द्वारा कोविड जैसी महामारी को देखते हुए जिस प्रकार से संसाधनों के अभाव में मुख्यमंत्री ने एक सूझबूझ का परिचय देकर केन्द्र सरकार से दिल्ली के लोगों के हितों के बारे में और दिल्ली के लोगों के स्वास्थ्य के बारे में जो co-ordination किया वास्तव में मैं मानता हूं ये इस प्रकार की जन प्रतिनिधियों के अंदर इस प्रकार की धारणा बननी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, ये 21वी सदी के अंदर ये कोई छोटी–मोटी महामारी नहीं थी। ये बहुत बड़ी महामारी थी। भयंकर स्थिति में पूरी दुनिया इसमें अपने लोगों के स्वास्थ्य की चिंता कर रही थी। लेकिन अध्यक्ष महोदय, वास्तव में हमको कभी भी यदि किसी के माध्यम से कोई काम होता है वो बिल्कुल बोलना चाहिए कि इसके माध्यम से ये काम हुआ

उसकी चर्चा करनी चाहिए। संकोच नहीं करना चाहिए। राजनीति के अंदर क्या होता है कि काम कौन करे, प्रचार किस का हो यह इस प्रकार का होता है। अध्यक्ष महोदय, ये भी सत्य है कि दिल्ली सरकार हो, नगर निगम हो, एनडीएमसी हो और प्राईवेट संस्थाएं हैं। वास्तव में इस कोरोना जैसी महामारी से दिल्ली के लोगों के स्वास्थय को बचाने में इन्होंने जो योगदान दिया निश्चित रूप से भई हमको आभार प्रकट करना चाहिए, ये मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से ये महामारी आई और कोरोना की टेस्टिंग वगैरह जिस प्रकार से चल रही थी, गरीब आदमी कोरोना के नाम से ही उसको तुरन्त बीमारी लग जाती थी। लेकिन जब वो हॉस्पिटलों में जाता था, जो वो टेस्टिंग के खर्चे थे, अध्यक्ष महोदय 2800/—रूपया, तीन हजार रूपया वो टेस्टिंग का लिया जाता था। लेकिन केन्द्र सरकार द्वारा जिस प्रकार से उस समय दिल्ली की सरकार के साथ एक आर्डर पारित किया गया कि टैस्टिंग ज्यादा से ज्यादा हो, बीमारी को किसी भी तरह से इसको भगाया जाए ये एक बहुत बड़ा इस प्रकार का कार्य हुआ। लेकिन अध्यक्ष महोदय, ये भी सत्य था क्योंकि दिल्ली में आम पार्टी की सरकार है उनकी नैतिक जिम्मेवारी बनती है और बननी भी चाहिए क्योंकि जनता ने उनको broad majority के आधार पर वो जीत के आए हैं। निश्चित रूप से काम करना चाहिए उन्होंने उसमें किया भी है। अध्यक्ष महोदय, ये भी सत्य था कि कोरोना जैसी बीमारी हो और शुरू में तो जांच पड़ताल में थोड़ा सा हाथ को रोककर किया जा रहा था लेकिन जब टैस्टिंग प्रक्रिया चली तो निश्चित रूप से उससे बहुत से उसमें इन बीमारियों से लोगों को लाभ मिलने का एक इस प्रकार का हुआ। अध्यक्ष महोदय जैसे मैंने अपने अभिभाषण को प्रारंभ करने से पहले कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा दिल्ली की सरकार को जो वास्तव में सहयोग दिया, देना भी चाहिए क्योंकि केन्द्र में हमारी सरकार है, निश्चित रूप से दिल्ली में भले ही किसी की पार्टी की सरकार हो लेकिन जनता हम सब की है। लेकिन केन्द्र सरकार ने जिस प्रकार का काम किया वास्तव में हम को उनका भी अभिनंदन करने में कतई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, ये मैं कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, आप बिल्कुल अच्छी तरह से जानते हैं क्योंकि आप ग्रास रूट के कार्यकर्ता हैं और हम भी ग्रास रूट के कार्यकर्ता हैं। मैं खुद कोरोना से पीड़ित था। अध्यक्ष महोदय, 14 दिन मैं एम्स हास्पिटल में एडमिट रहा लेकिन उसके बाद इस बीमारी से हमको तुरंत निजात

मिली और इसका लाभ मिला, हम स्वस्थ्य हो गए। अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से प्राइवेट नर्सिंग होम का ये बहुत बड़ा ऐसा चल रहा था कि कोरोना का मरीज आ गया तो उसके घर तक बर्बाद हो जा रहे थे, सब कुछ बिका जा रहा था। आपने तो कई लोगों की मेदान्ता में जब मैं आपसे मिला तो निश्चित रूप से आपने मदद करने का जो प्रयास किया वास्तव में ये हम सब जन प्रतिनिधियों को कहीं ना कहीं ऐसी सीख लेनी चाहिए, ये मैं कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली जैसी महानगरी के अंदर सरकार ने बहुत से ऐसे काम भी किए जो गरीब लोग थे, वो हास्पिटलों में दर–दर ठोकरें ना खाएं उनको होम आइसोलेट करने का और उनको फिर जो भी साधन हो सकता है वो उस प्रकार का देने का ऑक्सीमीटर देने का प्रयास भी किया और हमारे घर के अंदर तो सारे कोरोना से पीड़ित थे और मैं और मेरी मिसेज हम दोनो हास्पिटल में ऐडमिट थे तो दोनों हास्पिटल में रहे। बच्चे घर में थे लेकिन वहां पर भी इस प्रकार का हुआ। अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें एक बात और कहना चाहता हूं जो केन्द्र सरकार द्वारा दिल्ली की सरकार के साथ मिल कर के हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा जो इस प्रकार का काम दिल्ली की सरकार के साथ मिल कर किया तो निश्चित रूप से मैं मानता हूं कि ये जनहित के अंदर नरसेवा नारायण सेवा का यदि वास्तविक कोई फार्मूला जमीन पर स्टीक ढंग से उतरता है तो वो ये है। जिस प्रकार से अपने अमित शाह जी ने खुद अपनी चिंता नहीं की, शरीर की चिंता नहीं की, खुद खड़े होकर दिल्ली के अनेक अस्पतालों के अंदर जाकर जिस प्रकार की व्यवस्था को देखा और व्यवस्था को देखने के बाद मिलकर दिल्ली की सरकार को निर्देश दिया कि इन कामों को तुरंत किया जाए, वो अद्बितीय है। अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को इसलिए कहना चाहता हूं कि सरकार को कहीं ना कहीं इस प्रकार की सोच बनानी चाहिए कि वो कोई भी हो वो सरकार में हो, विपक्ष में हो, उसके साथ मिलकर इस प्रकार की रणनीति बनानी चाहिए और ऐसे सार्थक कदम उठाने चाहिए। अध्यक्ष महोदय, ये भी सत्य है कि, कोविड जैसी बीमारी से निपटने के लिए बहुत सी समस्याएं हम सब लोगों के सामने आई क्योंकि दिल्ली अपने आप में एक अलग देश की राजधानी है। यहां पर गरीब तबके के लोग भी unauthorized colonies के अंदर रहते हैं और unauthorized कालोनी में रहने के बाद निश्चित रूप से यदि काम धाम ना हो तो वो व्यक्ति कहीं ना कहीं रोजी और रोटी के चक्कर

में परेशान हो जाता है और जिस प्रकार की ये वितरण प्रणाली रही केन्द्र सरकार द्वारा दिल्ली को राशन देकर गरीब दुखी लोगों के बारे में जो राशन की व्यवस्था की गई वास्तव में एक अपने आप में अद्वितीय है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहता हूं। अध्यक्ष जी, ये जिस प्रकार की पीडीएस सिस्टम के अंदर दिल्ली की आबादी भले ही एक करोड़ तीस या चालीस लाख हों लेकिन जो पीडीएस के संबंध में जो राशन कार्ड बने हैं बीपीएल के कार्ड हों, डबल एओआई के कार्ड हों और झुग्गी और झोंपड़ियों के कार्ड हों, ये तीन प्रकार के कार्ड का सिस्टम था। अध्यक्ष जी, ये इसमें दिल्ली की सरकार द्वारा जो कार्डों को चिन्हित किया गया उनकी संख्या 71 लाख करीब इसमें बताई गई है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि कार्ड धारियों की संख्या भले ही 71 लाख हो, मैं उस पर कोई टीका–टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं। हुआ क्या है जब कार्ड धारी कार्ड बनाने राशनिंग आफिस में जाता है सर शायद आपके पास भी आते होंगे लोग यदि हमारे पास आते हैं, शायद आपके पास भी जाते होंगे, मिंया बीवी का तो नाम लिख दिया, बच्चों का नाम उस राशन कार्ड से हटा दिया, वंचित कर दिया। मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि दोबारा से इसको देखा जाए और ये पीडीएफ सिस्टम में जो सर्वे है उसको जमीनी स्तर पर उतारा जाए। अध्यक्ष महोदय, ये भी सत्य था।

माननीय अध्यक्षः अब कनकलूड करिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर आप बोलने दीजिए ना, कभी–कभी हम पर भी मेहरबान हो जाओ भाई।

माननीय अध्यक्षः बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः बॉस ये तो देख लो कि

माननीय अध्यक्षः पूरे 15 मिनट का समय दिया आपको।

श्री मोहन सिंह बिष्टः ये सीनियरटी और जूनियरटी का तो देख लो। सर बोलने दीजिए ना।

माननीय अध्यक्षः कनकलूड करिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर बोलने दीजिए ना। आप ही एक ऐसे आदमी हैं। मैं अभी समाप्त कर रहा हूं। सर मैं अभी कर रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः कनकलूड करिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं कर रहा हूं सर।

माननीय अध्यक्षः प्लीज।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मेरा कहने का भावार्थ ये है कि जिस प्रकार से राशन की प्रणाली में इसमें तुरंत किया जाए। यही नहीं अध्यक्ष महोदय, सूखा राशन के अंदर निश्चित रूप से सरकार का नैतिक दायित्व है कि वो दिल्ली के लोगों के लिए सूखे राशन की व्यवस्था करे। लेकिन हम जन प्रतिनिधि हैं, हमने भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। दिल्ली के अंदर प्रत्येक क्षेत्र के अंदर सर हमने राशन वितरण वगैरह का हमने इस प्रकार का काम किया था। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, माननीय उप राज्यपाल महोदय के इसी अभिभाषण के अंदर बहुत सी बातों के बारे में आपने कहा है। माननीय उपराज्यपाल महोदय ने कहा है कि उसमें गरीब हो, विधवा हो, एससी हो, एसटी हो उनको चाहे ब्याह शादियां या इस प्रकार के कार्यक्रम हों उनको सरकार के द्वारा अनुदान किया जाता है। लेकिन दुख का विषय क्या है कि इस सरकार को छह साल होने के बाद सर वृद्धा पेंशन को बंद कर दिया। ना तो वो बजट के अंदर उसको रखा गया, ना उसको इस उप राज्यपाल महोदय के अभिभाषण रखा गया। मैं आपके माध्यम से चाहता हूं क्योंकि आप हमारे कस्टोडियन हो। सर वृद्धाओं को पेंशन मिलनी चाहिए। लोग भूख के कगार में खड़े हैं निश्चित रूप से वो पेंशन दोबारा से चालू हो जाए, ये मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः हो गया बिष्ट जी, अब हो गया।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः अब हो गया। कुछ विषय औरों के लिए भी छोड़ दो ना।

श्री मोहन सिंह बिष्टः हां।

माननीय अध्यक्षः कुछ विषय औरों के लिए भी छोड़ दो। हो गया।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर मैंने तो आपके लिए छोड़ रखा है।

माननीय अध्यक्षः नहीं धन्यवाद। धन्यवाद। थैंक्यू।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैंने वृद्धा पेंशन के बारे में कहा, विकलांगों के बारे में कहा। अध्यक्ष महोदय, हमने देखा इसी सदन के अंदर दिव्यागों के लिए हर बार कहीं ना कहीं कैम्प की व्यवस्था जैसे उनको साईड से उनको चलने के लिए उनके पांव खराब होते थे, इस प्रकार की सरकार की व्यवस्था होनी चाहिए और अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अरे आपका आभार तो प्रगट कर दूं सर।

माननीय अध्यक्षः चलिए, चलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आपने मुझे बोलने का समय दिया। वैसे तो काफी इसमें वो रह गए हैं लेकिन मैं आपका भी आभार प्रगट करता हूं बहुत बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

माननीय अध्यक्षः राजेश ऋषि जी।

श्री राजेश ऋषिः अध्यक्ष जी, आपने मुझे..

माननीय अध्यक्षः नहीं ऐसा करिए अगली कुर्सी पर आ जाइए। आगे वाली का माईक । इससे आगे नैक्सट, नैक्सट। फ्रंट रो पर आ जाइए। हां और आगे आ जाइये। हां यहां से बोलिए। ये चालू करिए माईक।

श्री राजेश ऋषिः अध्यक्ष जी, आपने मुझे हमारे उपराज्यपाल जी के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया उसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। जैसा कि हमारे उपराज्यपाल साहब ने जो बातें रखीं कल उससे मुझे साफ नजर आया कि सरकार में हमारे मंत्रियों ने बहुत काम किए पिछले साल कोरोना के काल में भी। कोरोना

काल में जो स्थिति रही उससे सब वाकिफ हैं कि पूरे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बुरी हालत रही लेकिन दिल्ली के अंदर हमारे मुख्यमंत्री और हमारे स्वास्थ्य मंत्री जी की सूझ–बूझ से कोरोना जितना तेजी से फैला था उसको कंट्रोल करने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया। जिस तरह उन्होंने दूर दर्शिता को रखते हुए अस्पतालों में बैडस की व्यवस्था की। प्राइवेट अस्पतालों को छूट दी कि वो ज्यादा से ज्यादा बैड लगा सकें। उनके लिए दवाईयों का इंतजाम किया गया और साथ में राधा स्वामी सत्संग जो हमारा बहुत बड़ा केन्द्र बना जहां दस हजार बैड लगाए गए। आने वाले समय में जिस तरीके से ये महामारी फैल रही है कहीं ऐसा ना हो कि दिल्ली के अंदर ये इस तेजी से फैले कि इसको रोकना बड़ा मुश्किल हो जाए। लेकिन ये सूझबूझ थी जिसके कारण इन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया और साथ में जो होम आइसोलेशन शुरू किया जिसका अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही ज्यादा उसको माना गया और लोगों ने उसको अपनाया भी और इससे क्या हुआ कि लोग जो बीमार थे घरों के अंदर रहे। अपने परिवार के साथ रहे और साथ में जो डॉक्टर्स हमारे घर–घर जाकर पूछते रहे, देखते रहे। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मुझे भी कोरोना हुआ। मैं भी हास्पिटल में ऐडमिट रहा। मेरे घर के अंदर भी सात लोग थे जो होम आइसोलेशन में थे। उनको भी कोरोना था लेकिन सबसे बड़ी चीज मैंने ये देखी कि हमारे वहां पर जितने डॉक्टर्स थे, सिविल डिफेंस के वर्कर्स थे उन्होंने बहुत मदद की। जो भी कोरोना से ग्रस्त लोग थे, दवाईयां उनके घर पर पहुंचती रहीं, सारे टैस्ट होते रहे, सारे काम होते रहे। इसके लिए उपराज्यपाल साहब ने जो बात कही है उसके अनुसार मैं भी अपने मंत्री जी का बहुत–बहुत धन्यवाद देता हूं। साथ ही हमारे यहां पर खाने के वितरण की व्यवस्था बहुत अच्छी रही। हमारे राशन विभाग की तरफ से और सरकार की तरफ से घर–घर राशन पहुंचाया गया और तो और जिनके पास राशन कार्ड नहीं थे उनको भी राशन की व्यवस्था करके दी गई। उनके घर–घर खाना पहुंचाया गया, बनाकर खाना पहुंचाया गया। हमारे कार्यकर्ताओं ने भी वहां पर बहुत मेहनत की। सिविल डिफेंस के वर्कर्स के साथ लोगों के घर–घर राशन पहुंचाया क्योंकि ऐसे वक्त पर लोगों की कमाई बंद हो चुकी थी। कमाई थी नहीं, घरों में बंद थे। घरों में खाने की व्यवस्था खत्म हो चुकी थी, फोन पर बार– आता था कि हमारे यहां खाना नहीं है, हमारे घर में बच्चे के लिए दूध नहीं है, तो ये सारी व्यवस्थाएं हमारी सरकार ने की।

इस समय में जो सरकार ने व्यवस्था की उसके कारण जनता के अंदर एक था कि ये सरकार हमारी अपनी सरकार है, जो हर समय हमारे लिए तैयार खड़ी है। साथ ही हमारे यहां जो पेंशन लोगों को मिला करती थी, पेंशन डबल मिली लोगों को। इससे उनको बहुत राहत मिली ताकि आने वाले समय में उनको आगे काम करना पड़ा। खाने–पीने का अरेंजमेंट खुद भी करते रहे वो लोग। स्थिति ये रही कि सिविल डिफेंस के वर्कर्स जो हमारे ही साथी लोग थे उन्होंने जी–जान के साथ इस कोरोना काल के अंदर कार्य किया। जिसके लिए मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं और सबसे बड़ी बात ये थी कि स्वास्थ्य मंत्रालय ने जो कार्य किए, vaccination के कार्य चल रहे हैं, साथ में जो दवाईयां पहुंचा कर दी, लोगों के घर–घर डॉक्टर्स पहुंचे। डॉक्टर्स अपनी जान की परवाह किए बिना वहां–वहां पहुंचे हैं और हम तो अपने स्वास्थ्य मंत्री जी को भी देखते थे कि बिना अपनी जान की परवाह किए अस्पतालों में घूम रहे थे, सारी व्यवस्थाएं देख रहे थे। तो ये जो कार्य हुए इसके लिए हम आपकी सरकार का बहुत धन्यवाद करते हैं। और साथ में हमारे उपराज्यपाल साहब ने जो अभिभाषण उन्होंने दिया था, जिसमें उन्होंने हमारी सरकार की बहुत प्रशंसा की, उसके लिए मैं उनका भी धन्यवाद करता हूं। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत बहुत धन्यवाद सर।

माननीय अध्यक्षः रोहित मेहरोलिया जी।

श्री रोहित कुमार : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे माननीय उपराज्यपाल जी के बजट अभिभाषण पर बोलने का जो मौका दिया है। 8 मार्च, 2021 को दिल्ली के उपराज्यपाल श्री अनिल बैजल जी ने अपने बजट भाषण में दिल्ली सरकार द्वारा जो इस कोरोना काल के अंदर पिछले एक साल के अंदर जो ऐतिहासिक और साहसिक कदम उठाए गए, उनकी उपलब्धियों का जिक्र किया। सरकार द्वारा जो जन कल्याणकारी योजनाएं इस दौरान चलाई गई उनका भी व्यापक स्तर पर उन्होंने उल्लेख किया, जिनके लिए मैं माननीय उपराज्यपाल जी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, जैसा हम सभी जानते हैं कि ये जो वर्ष रहा बड़ा चुनौती पूर्ण रहा पूरी दुनिया के लिए, सभी सरकारों के लिए। सभी सरकारों ने अपने–अपने स्तर पर काम किया, अपनी जनता को लाभ पहुंचाने के लिए इस कोरोना महामारी से

बचाने के लिए। लेकिन जब बात आती है दिल्ली सरकार की तो दिल्ली सरकार के द्वारा जो इस दौरान फैसले लिए गए, कदम उठाए गए, आज उनकी चर्चा देश विदेश में हो रही है। जैसा की हमारे मंत्री जी बैठे हैं सामने जैन साहब। अभी जिक्र आया था होम आइसोलेशन का। एक समय था कि जब बहुत ज्यादा तादाद में दिल्ली के अंदर मामले बढ़ रहे थे कोविड़ के, उस दौरान होम आइसोलेशन का जो आइडिया था वो बहुत कारगर साबित हुआ जिसको बड़े–बड़े समृद्ध राष्ट्रों ने भी अपनाया। प्लाजमा बैंक ना केवल देश का बल्कि दुनिया का पहला प्लाजमा बैंक दिल्ली में बनवा कर माननीय मुख्यमंत्री जी ने वो काम किया कि जिसका बाद में अनुसरण बाकी देशों ने भी किया और ये एक बात फिर से साबित हुई कि क्यों भारत को विश्व गुरू का दर्जा प्राप्त है। इस दौरान सबसे बड़ी बात ये रही कि सरकार का जो राजस्व संग्रह था उसमें भारी कमी आई और मैं तारीफ करना चाहूंगा सरकार की कि इसके बावजूद भी जो लोगों को मिलने वाली राहत थी सरकार के द्वारा जो बुनियादी सुविधाएं मिल रही थीं उसके अंदर कोई भी कमी नहीं आई। अगर बात करें बिजली की, पानी की, शिक्षा की, स्वास्थ्य की वो तमाम बुनियादी सुविधाएं बादस्तूर जारी रहीं। बिजली दो सौ यूनिट तक लोगों को जैसे पहले मिलती थी फ्री, उसी प्रकार कोरोना काल में भी मिलती रही। पानी मुफ्त मिलता रहा। महिला सुरक्षा के नजरिये से महिलाओं को बसों में यात्रा मुफ्त दी गई। इसके साथ–साथ तमाम वो सुविधाएं लोगों को मिलती रही जो पहले मिल रही थी। लेकिन जब बात आती है कोरोना काल में बहुत सारी चीजें ऐसी थी जिसकी उम्मीदें लोगों ने नहीं की थी। उसके बाद भी जो भारी तादात में जब बहुत सारे लोग बीमार हुए मैं भी उनके से एक था कि मैंने जब देखा कि जब मैं पॉजिटिव हुआ और होम आइसोलेशन में था। तो जिस प्रकार से इस सरकार ने निरंतर जो हमारे जितने भी स्वास्थ्य कर्मी हैं, डॉक्टर हैं वो लगातार सम्पर्क में रहे। रोजना फोन आते थे आपकी तबीयत कैसी है? उनको नहीं पता था कि जिसको हम फोन कर रहे हैं ये जो बीमार है वो दिल्ली सरकार में एक विधायक है। एक सामान्य मरीज की तरह मुझे एक फोन आता था कि पूछते थे हालत के लिए। पल्स ऑक्सीमीटर हमें दिया गया था। ये अपने आपमें एक बड़ी बात है कि सरकार ने अपने एक–एक मरीज का बहुत ध्यान रखा और आज मैं बधाई देना चाहूंगा कि जिस प्रकार कोविड के मामले दिल्ली में लगभग खत्म हो गए हैं, एक बहुत बड़ी चुनौती को पार

पाया है और ये ही नहीं इस कोविड के दौरान जो हमारे कोरोना योद्धा थे, चाहे बात करें डॉक्टर्स की, मेडीकल स्टाफ की, चाहे हमारे सफाई कर्मचारी हों कोरोना योद्धा बनकर जो उभरे हैं। बहुत सारे लोगों ने अपनी जान को गवाया है तो सरकार द्व ारा उनके परिजनों को जो एक करोड़ की अनुग्रह राशि दी गई वो भी बड़ा कदम है और मैं कहना चाहूंगा कि डॉक्टर्स से लेकर सफाई कर्मचारियों को भी सरकार ने जो उनके बलिदान को सम्मान देते हुए एक करोड़ की राशि दी वो अपने आप में बड़ी बात है। माननीय उप–राज्यपाल जी ने भी इसका उल्लेख किया अपने अभिभाषण में, साथ–ही–साथ जो 10 लाख लोगों को राशन, दो टाइम का बना हुआ खाना लोगों को मुहैया कराया गया। 31 लाख से ज्यादा लोगों को सूखा राशन मुहैया कराया गया वो भी मुफ्त और ये ही नहीं जिनके पास राशन कार्ड नहीं था उन लोगों को भी सरकार ने राशन दिया, लगभग 54 लाख लोगों को ये अपने आपमें बहुत बड़ी बात है। इतनी भारी तादात में लोगों को राहत मिली। इस दौरान हमने देखा कि बहुत सारे हमारे प्रवासी मजदूर बहुत मार्मिक स्थिति हमने अपनी आँखों से देखी टीवी चैनल्स पर, सड़कों पर खुद जा कर हमने देखा कि जो अपने गंतव्यों की तरफ बढ़ चुके थे पैदल, लोग नंगे पैर जा रहे थे अपने परिवार को लेकर कैसे मुश्किल हालात में। उस समय सरकार ने उस स्थिति की गंभीरता को समझते हुए उन लोगों को उनके गंतव्य स्थानों तक पहुंचाने के लिए बहुत बड़े व्यापक पैमाने पर इंतजाम किए जो कि अपने आपमें बहुत बड़ी बात है कि लोगों को बसों से, रेल के माध्यम से उनके गांवों तक उनके गंतव्य स्थानों तक पहुंचाया। बाद में हमें लोगों ने वहां से वीडियो बना बनाकर मुख्यमंत्री केजरीवाल जी और सरकार की तारीफ करते हुए और आशीर्वाद उन लोगों ने दिया। ये भी मानवीय पहलू में अगर देखा जाए तो बहुत बड़ी बात है। माननीय अध्यक्ष जी, अभी बात आ रही थी हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की तो कोरोना काल के दौरान हमारे प्रधानमंत्री जी ने एक लाइन कही थी कि आपदा में अवसर। तो बहुत सारी सरकारों ने इसको बड़ी गंभीरता से लिया और आपदा में अवसर ढूंढने लग गए। मैं राजनीति की बात नहीं कहना चाहता। बहुत सारे मामले भ्रष्टाचार के सामने आए किस प्रकार नेताओं ने, सरकारों ने आपदा में अवसर ढूंढा वो तमाम न्यूज पेपर्स के माध्यम से टीवी चैनल्स के ऊपर हमने देखा। लेकिन मैं ज्यादा उनके ऊपर चर्चा में नहीं जाऊंगा। मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि

आने वाले समय के अन्दर उन लोगों को भी याद रखा जाएगा कि जिन लोगों ने आपदा के अन्दर अवसर ढूंढा था और अरविंद केजरीवाल को भी याद रखा जाएगा कि जो आपदा के अन्दर अवतार बनकर उभरे थे। जो आपदा के मौके पर दिल्ली सरकार अवतार बनकर लोगों के सामने उभरी और लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा की। माननीय अध्यक्ष जी, बहुत सारी बाते हैं, बहुत सारे काम हैं जिनका उल्लेख माननीय उप–राज्यपाल जी ने किया है वो तमाम सुविधाएं चाहे हम बात करें 'जयभीम प्रतिभा विकास योजना' की जिसके अन्दर जो एससी/एसटी और हमारे ईडब्ल्यूएस के बच्चे हैं उनको पढ़ाई में आगे बढ़ने की और बड़े–बड़े कॉम्पीटेटिव एग्जाम के अन्दर आगे बढ़ने के लिए उनको प्राइवेट कोचिंग मुफ्त में दी जाने की जो बात है माननीय मंत्री जी भी बैठे हैं यहां पर वो भी बदस्तूर जारी रही इस तरह की योजनाएं जिनका लाभ उन गरीब बच्चों को मिलना चाहिए था और वो आज भी मिल रहा है, तो ये भी बड़ी उपलब्धि वाली बात है। तो ज्यादा समय न लेते हुए आखिर में अपनी लिखी हुई पंक्तियां मैं अपनी सरकार के लिए और अपने यशस्वी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी के लिए कहना चाहूंगा और ये ही कहकर मैं अपनी बात पर यहीं पर विराम दूंगा किः

यूंही नहीं है चर्चें हर ओर अब हमारे,

यूंही नहीं है चर्चें हर ओर अब हमारे।

कुछ तो किया है हमने अहले वतन के खातिर,

कुछ तो किया है हमने अहले वतन के खातिर।।

माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे उप–राज्यपाल जी के बजट अभिभाषण के ऊपर बोलने का एक मौका दिया, इसके लिए आपका तहेदिल से बहुत–बहुत शुक्रिया। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद रोहित जी। राजकुमारी ढिल्लों जी।

श्रीमती राजकुमारी ढिल्लोंः धन्यवाद अध्यक्ष महोदय जी।

माननीय अध्यक्षः भई एक बार महिला बोल रही हैं क्लेपिंग कर दीजिए। परसों महिला दिवस था।

श्रीमती राजकुमारी ढिल्लोंः वो भी सर पहली बार अभी अभी एमएलए बनी हूं मैं आप लोगों के आशीर्वाद से, लोगों के आशीर्वाद से। सर अभी जो 8 तारीख को हमारे दिल्ली के माननीय उप–राज्यपाल जी अभिभाषण जो बोल कर गए इससे पूरी दिल्ली की जो जनता है उनमें भी एक मैसेज गया कि उप–राज्यपाल जी ने ऐसा नहीं सोचा की वो केन्द्र के व्यक्ति हैं उनकी तरफ उनका ध्यान है। उनका भी ये मानना रहा कि दिल्ली सरकार में माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी की सरकार ने जो पूरे देश में कोई मुख्यमंत्री नहीं कर पाया वो अरविंद जी ने करके दिखा दिया। क्योंकि सर जब पीक पर जब कोरोना चल रहा था और जब देश के जो हमारे प्रधानमंत्री हैं उन्होंने जब ये बोला कि आज रात को आप दिए जलाएंगे, आप थाली पीटेंगे उससे कोरोना भाग जाएगा तो लोगों ने एक उनका मजाक बना लिया और उनका विश्वास वहां से टूट कर माननीय अरविंद केजरीवाल जी की तरफ चला गया, उनके मंत्रियों की तरफ चला गया, उनके विधायकों की तरफ चला गया। क्योंकि जिस प्रकार सबसे पहले तो मैं ये कहूंगी कि हमारे जो खाद्य मंत्री हैं उन्होंने दिल्ली में जब इतनी परेशानी चल रही थी कोरोना के टाइम में जो उन्होंने सेवाएं की, जब भी कोई भी विधायक इनको किसी प्रकार की अपनी विधान सभा में समस्या बताता था उसी वक्त वो इमीजेटली उसका निवारण करते थे, मैं उनका धन्यवाद करूंगी और जब लगा लोगों को कि माननीय मुख्यमंत्री जी, चाहे गरीब लोग हैं चाहे मध्यम वर्ग के लोग हैं उनके लिए हर तरीके से एक सुविधा दे रहे हैं तो लोगों को विश्वास हुआ और कुछ लोग एक मानसिक तौर से अपने आप को मजबूती फील कर रहे थे कि जब हमारे सिर पर ऐसे हमारे मुख्यमंत्री बैठे हैं तो इस बीमारी से हम आराम से लड़ सकेंगे। क्योंकि जब विश्वास हो जाता है ऐसे मुख्यमंत्री के ऊपर तो उनमें कुदरती एक शारीरिक तौर से उनके अन्दर एक अच्छी ताकत आ जाती है बीमारी से लड़ने के लिए। काफी लोग तो इससे इस लिए भी ग्रसित नहीं हो पाए क्योंकि केजरीवाल जी का जो कार्य करने का तरीका था, उनके ऊपर जो विश्वास था कि हमें कुछ होगा तो केजरीवाल जी बैठे हैं तो कुछ लोगों को तो वैसे ही इस बीमारी से बहुत जल्दी मतलब निजात

मिली। मैं भी सर कोरोना से ग्रसित हो गई थी बहुत ज्यादा हम भी लोगों के बीच में लगे रहे तो वो ग्रसित होने के बाद मुझे ये फील आया कि मैंने कहा कोरोना काल तो निकल गया। उसके बाद मुझे तो ये कोरोना हुआ है ये कोई खास नहीं था क्योंकि अन्दर से ही गरीबों के लिए बहुत सेवाएं की हुई थी। तो बहुत जल्दी मुझे रिक्वरी हो गई और फिर से मैं लोगों के बीच में, गरीबों के बीच में मैं आ गई। तो जिस प्रकार माननीय मुख्यमंत्री जी ने लोगों को विश्वास दिलाया चाहे वो टैक्सी ड्राइवर थे, चाहे वो ई–रिक्शा वाले थे, चाहे वो ऑटो रिक्शा वाले थे, चाहे वो झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले हर गरीब तबका था, उनको ये हो गया कि ये हमारा एक पिता के समान है और सबकुछ उन्होंने अपना उन्हीं के ऊपर बिल्कुल छोड़ा हुआ था और उस टाइम जितने भी हमारे शिक्षक हैं उन्होंने बहुत सेवाएं की, स्वास्थ्य कर्मी जितने थे डॉक्टर्स थे, नर्सिस थी, हमारे सिविल डिफेंस के लोग थे, हमारे दिल्ली के सभी हमारे जो जितने भी हमारे विधायक हैं उनके घरों के बाहर जब लम्बी–लम्बी कतारें लग रही होती थी। जब माननीय मुख्यमंत्री जी ने कूपन हमको दिए बांटने के लिए उस टाइम एक बहुत खुशी का माहौल था क्योंकि कुछ लोग दिल्ली में ऐसे प्रवासी लोग आए हुए थे जिनके पास आधार कार्ड भी नहीं था, जिनके पास पहचान पत्र भी नहीं था तो उस टाइम हमें जो कूपन दिए गए उसका लोगों को बहुत फायदा हुआ और बहुत लोग इसे एक अपना मतलब जो पेट भर भोजन उनको मिला और सबसे पहले मैं ये भी सर धन्यवाद करना चाहूंगी कि दिल्ली के अन्दर जितने भी हमारे गुरुद्वारे हैं, मन्दिर हैं उसके अन्दर जितने भी सेवादार जो लग हुए थे कोरोना के टाइम में उन्होंने इतनी सेवाएं की, हजारों की संख्या में इन्होंने ने ड्राई राशन लोगों को बांटा, खाना उनको बांटा दिल्ली में मुझे लगता है कोई भी इन्सान उस टाइम भूखा नहीं रहा चाहे वो स्वास्थ्य का क्षेत्र रहा, चाहे वो राशन का रहा और जितने भी और भी कोई भी वर्ग रहा उसमें ऐसी कोई भी बिल्कुल दिक्कत नहीं हुई। सर मैं आपका धन्यवाद करूंगी। मैं पहली बार बोल रही हूं आपने मुझे इस अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया मैं आपका हाथ जोड़कर धन्यवाद करती हूं। जयहिन्द।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद, बहुत–बहुत धन्यवाद। अनिल बाजपेयी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपका तहेदिल से हार्दिक धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण माननीय उप–राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं एक बात का धन्यवाद कम–से–कम दिल्ली के मुख्यमंत्री को जरूर करना चाहूंगा कि वैसे तो हमेशा ही कहते रहते हैं कि केन्द्र सरकार कोई सहयोग नहीं करती है, केन्द्र सरकार किसी मामले पर हमारी मद्द नहीं करती, लेकिन कम–से–कम इस किताब के माध्यम से और माननीय उप–राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर उन्होंने एक बात तो जरूर मानी है आज सबके सामने कि मेरी सरकार ने केन्द्र सरकार के साथ मिलकर दिल्ली के नागरिकों के जीवन की सुरक्षा के लिए निवारण और ईलाज सुनिश्चित करने के लिए सभी संसाधन जुटाए। तो मैं केजरीवाल जी का धन्यवाद करना चाहूंगा कि उन्होंने माननीय मोदी जी की सरकार की कहीं–न–कहीं तारीफ की है अच्छे कामों के लिए और मैं इसकी तारीफ कर रहा हूं। अब माननीय उप–राज्यपाल के अभिभाषण में इस सदन में जो कहा गया उनके कुछ प्वाइंट पर मैं बात जरूर करना चाहूंगा। सबसे पहले जो प्वाइंट है कि सरकार ने नर्सिंग होमों में परीक्षण की क्षमता बढ़ाई। माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहता हूं और कोई मेरी बात का बाहर से समर्थन करे न करे लेकिन सारे विधायक अन्दर से समर्थन जरूर कर रहे होंगे। उनकी आत्मा कर रहे होगी कि जितने नर्सिंग होमों में जो दर सरकार ने तय किए कि परीक्षण का शुल्क कितना लगेगा 99 परसेंट मैं दावे के साथ कह सकता हूं किसी नर्सिंग होम ने इसका पालन नहीं किया। अगर गलती से कोई आदमी कोविड का चला गया पहले तो कह दिया दूर बैठ जाओ अमानवीय तरीके से व्यवहार किया गया है और जरूरत से ज्यादा पैसे उनसे चार्ज किए गए। ये मैं वास्तविकता के साथ कह सकता हूं मेरे पास वीडियो रिकॉर्डिंग भी है। अगर आप लोग कहेंगे तो मैं सदन में प्रस्तुत कर दूंगा मैं। प्लाज्मा बैंक की बात कही गई। प्लाज्मा बैंक बनाना बहुत अच्छी बात है और अच्छा काम सरकार ने किया है। अगर लोग आईएलबीएस के अन्दर जाते थे तो वहां कहते थे दूर खड़े हो जाओ, पहले कोविड टेस्ट कराओ। उसका कोई घर का आदमी गया बहनजी प्लीज बोलने दीजिए। जब आप बोलेंगे तो मैं नहीं बोलूंगा। प्लाज्मा टेस्ट कराने के लिए कोई गया दूर खड़े हो जाओ, पहले कोविड टेस्ट कराओ और इस तरीके से व्यवहार किया जाता था कि आदमी सोच भी नहीं सकता था।

ऐसे ही एलएनजेपी में हुआ और ये सब ऐसे तरीके से हुआ वो आदमी भी करता क्या, बेचारा नर्सिंग होम भागता था और नर्सिंग होम अगर चला गया तो अगर उसके सौ रुपये अगर पाकेट में हैं लोगों ने अपने मकान गिरवी रखे, अपने जेवर गिरवी रखकर लोगों ने कोविड में अपना ईलाज कराया है और आज बेचारे बहुत लोग ईलाज न मिलने के कारण उनकी डेथ हो गई। एलएनजेपी अस्पताल की मैं बात करना चाहूंगा। मेरी विधान सभा में एक जैन परिवार है उस जैन परिवार को एडमिट कराया गया एलएनजेपी हॉस्पिटल में। जब वो एडमिट हुआ बड़ी मुश्किल से तो कह–कहवाकर उसको एडमिट कराया गया। जब वो एडमिट हुआ रात को चार लोग उस वार्ड के अन्दर दाखिल थे। चार में से दो लोगों की डेथ हो गई एक अन्कॉन्सिस था। मरीज पूरी रात चिल्लाता रहा कि साहब मुझे बाहर निकाल दो। मैं मर जाऊंगा बाहर जाकर मुझे नहीं चाहिए और अंत में वो मरीज बेचारा बाहर आ गया। बड़ी मुश्किल से राजीव गांधी में कराया और उसकी मात्र चार घण्टों के अन्दर डेथ हो गई। उसका लड़का भी कोविड में फिर हम लोगों ने उसको एडमिट कराया। तो मेरा कहने का मतलब है कि हम लोग मानवता के आधार पर जो बात हम इसमें कह रहे हैं उनका मूल्यांकन तो हम लोगों को करना चाहिए जो हमने नहीं किया। ऑक्सीमीटर बांटने की बात कही गई। जितने लोग सदन में बैठे हैं दिल पर हाथ रखकर कहिएगा कितने लोगों को उनके क्षेत्र में ऑक्सीमीटर बांटे गए। भाई साहब वो एक–आध हो सकते हैं मैं बिल्कुल सही कह रहा हूं कुलदीप भाई। दिल पर हाथ रखिए एक –आध अपवाद हो सकते हैं। लेकिन ऑक्सीमीटर नहीं बांटे गए। अगर किसी के यहां मान लो अगर कोई कोरोना पेशेंट आ गया आइसोलेशन में चला गया तो बोले जी ठीक है एक ऑक्सीमीटर दे दिया। हां जी ठीक है ले जाइए। उसके बाद उसका लिया दूसरे को दे दिया। हम लोगों ने अपनी विधान सभा में व्यापारियों से रिक्वेस्ट करके, मार्किट एसोसिएशन से बात करके हम लोगों ने कहा कि साहब खुद खरीद कर हम लोगों ने लोगों को आइसोलेशन सेन्टर में जा कर ऑक्सीमीटर बांटे हैं। ये वास्तविकता है जो मैं कह रहा हूं और नर्सिंग होम के लोगों में जिन्होंने आपने कोविड सेन्टर खोलने की इजाजत जिन लोगों को दी है उन सारे दिल्ली के नर्सिंग होमों ने दिल्ली की जनता को खुलेआम लूटा है और माननीय मंत्री जी मैं आपको बताना चाहता हूं कि आज क्या कार्रवाई की गई इनके ऊपर एक भी कार्रवाई आपके विभाग के द्वारा नहीं

की गई। आप दिल से जाकर लोगों से पूछिए कि जिनके घर में चार लोग थे जिसमें से दो लोगों की डेथ हो गई। क्या किया? हम, नेता प्रतिपक्ष हमारे बैठे हैं। हम सब लोग सारे इकट्ठे होकर केन्द्र सरकार के पास गये की साहब दिल्ली के अस्पतालों की हालत बुरी हो गयी है। लोग अस्पतालों में भर्ती नहीं हो पा रहे हैं। तब हमारे देश के यशस्वी माननीय गृह मंत्री पहली बार देश के इतिहास में हमारे अमित शाह जी एलएनजेपी अस्पताल के अन्दर गये और जाकर उन्होंने विजिट किया। उस दिन के बाद जिस दिन हमारे गृह मंत्री जी एलएनजेपी अस्पताल में गये, दिल्ली के अस्पतालों की हालत उस दिन से सुधर गयी। अस्पताल के सारे डायरेक्टर्स को डर बैठ गया कि आज देश के गृह मंत्री माननीय अमित शाह जी आज अस्पतालों पर उतर आये हैं विजिट करने के लिए। उससे पहले और जितने दिल्ली सरकार के मंत्री है। एक मंत्री को तो मैं जरूर कहूंगा सत्येन्द्र जैन जी का कि कम–से–कम वो बेचारे जरूर घूमे और उनको खुद को कोरोना हो गया। मैंने खुद उनको एसएमएस किया मैं आपके स्वास्थ्य लाभ की, आपकी कामना करता हूं लेकिन जितने 62 विधायक है एक सत्येन्द्र जैन जी को छोड़ दीजिए और खुद मुख्यमंत्री जी आइसोलेशन में चले गये। अरे मुख्यमंत्री जी, आपने बोला था कि हम जब कोई काम करेंगे दिल्ली की जनता अगर दुखी होगी तो हम सड़कों पर उतरेंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अगर दिल्ली की जनता दुखी होगी तो हम लोगों का हाल पूछने जायेंगे। मैं पूछना चाहता हूं दिल्ली के मुख्यमंत्री जी पूरे कोविड के दौरान कितनी बार विधान सभाओ में गरीब जनता का हाल पूछने गये। आपके कितने मंत्री गये है। आप बताइए और अगर कोई गया है तो भारतीय जनता पार्टी के आठ विधायक अपनी लाइफ को रिस्क पर लेकर कोरोना हो गया बिष्ट जी को। उसके बाद कोरोना से ठीक होके आये। हम लोगों ने कहा साहब आप दोबारा मत जाइए। उसके बाद मोहन सिंह बिष्ट जी कोरोना होने के बाद अपने क्षेत्र की जनता के लिए उतरे लेकिन आम आदमी पार्टी के कितने विधायक सड़क पर उतरे? आधे ने तो बहाना ले लिया। अखिलेश जी बोलने दीजिए न। क्या बात है। हम तो कह रहे हैं। आप बोलो न, फिर क्या दिक्कत है। अरे जब आपका नम्बर आये तो खूब बोलना। हम तो अपनी बात कह रहे हैं। अरे हम तो अपनी बात कह रहे हैं, आप बोलिए। क्या दिक्कत है। बोलने दीजिए न क्या दिक्कत है।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः ये तरीका नहीं है बाजपेयी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अरे सच सुनने का माद्दा रखिए न। बन्दना जी सच सुनने का माद्दा रखिए।

माननीय अध्यक्ष : आप कन्ट्रोवर्शियल बात करते हैं।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : माद्दा रखिए न। गलत क्या बोल रहे हैं। हम सच कह रहे हैं। उसको सुनने का मौका तो दीजिए न।

माननीय अध्यक्ष : क्या बोल रहे हो। अगर कोई व्यक्ति बिल्कुल ही आ बैल मुझे मार वाली कहावत चरितार्थ करेगा।

.....व्यवधान.....

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : बन्दना जी सही बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्ष : मोहन सिंह बिष्ट जी भी तो बोले हैं। उन्होंने आलोचना भी की प्यार से।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अरे क्यों नहीं बोलने दे रहे हैं आप।

माननीय अध्यक्ष : चलिए, बाजपेयी जी आप इधर बात करिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : बोलने तो दें पहले।

माननीय अध्यक्ष : मोहन सिंह जी बोले हैं न। मोहन सिंह जी बोले हैं न। और भरपूर समय बोले हैं वो। उन्होंने आलोचना भी की तो बड़े प्यार से की।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अरे अब सुनने तो दीजिए।

माननीय अध्यक्ष : क्या बात कर रहे हैं। कोई बात ही नहीं है आपके पास कहने को। आप सदन का समय खराब कर रहे हैं।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : हमारा तो माइक बन्द करा दिया अब।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : नहीं क्या ये जो बोल रहे हैं वो ठीक बोल रहे हैं क्या? देखिए मेरी बात सुनिए। मोहन सिंह बिष्ट जी बोले हैं न। उन्होंने आलोचना भी की। बड़े प्यार से की। उनको भी कोई तरीका समझना पड़ेगा सदन में। नहीं ऐसे नहीं चलता है सदन। सदन ऐसे नहीं चलता है। सदन ऐसे नहीं चलता। बाजपेयी जी मेरी बात सुनिए। आपके पास देखिए, आप आलोचना करिए। मैं मना नहीं कर रहा हूं लेकिन आलोचना को आलोचना के तरीके से करिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : राशन बॉटने की बात कही गयी। दिल्ली के मुख्यमंत्री जी कहते हैं और खाद्य मंत्री जी कहते हैं कि दिल्ली के लोगों को राशन बॉटा गया है। ये माननीय उपराज्यपाल जी के अभिभाषण की बात है। दिल्ली के लोगों को क्या दिया गया। चार किलो गेहूं, एक किलो चावल। वो भी सड़ा हुआ। ठीक कह रहे हैं। मैं बिल्कुल सहमत हूं आपकी बात से।

माननीय अध्यक्ष : चलिए, बोलिए—बोलिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : मैं बताना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय। सरकारी स्कूल में हमारे लोग गये एक बार। वहां जाकर देखा तो वहां के स्कूल का नाम नहीं लेना चाहूंगा वरना उसको नौकरी से निकाल देंगे ये लोग। स्कूल के टीचर्स ने कहा सर आकर देखिए। मैं वहां स्वयं गया। वहां जाकर मीडिया की टीम थी और जिस तरीके का राशन दिल्ली की जनता को उपलब्ध कराया गया। सड़ा हुआ राशन, सड़ा हुआ अनाज स्कूल के अन्दर वहां कोने पर पड़ा हुआ था और जो आज दिया हुआ, वो टपक रहा था। मैंने उसी दिन रात को जब ये बात मैं मीडिया को लेकर वहां पहुंचा।

माननीय अध्यक्ष : बाजपेयी जी मेरी तरफ मुंह करके बोलिए। उधर न।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : हॉ आपकी तरफ देख लेता हू।

माननीय अध्यक्ष : आप बोलिए मेरी तरफ देखकर।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : मैं आपकी तरफ देखता हूं जी।

माननीय अध्यक्ष : हॉ बोलिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अध्यक्ष जी, जब वहां पर मैं निरीक्षण करने गया और लोग थे। मेरी विधान सभा की जनता थी और स्कूल के अन्दर सड़ा हुआ राशन, सड़ा हुआ गेहूं, सड़ा हुआ चावल वहां पर वितरित कराया गया। ये बात अखबरों में आयी। मैं गलत नहीं कह रहा हूं। रिकार्डिंग है इस बात की हमारे पास। आप कहें तो हम भेज देंगे आपको।

माननीय अध्यक्ष : और बोलिए, और बोलिए। क्या बोलना है बोलिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : लेकिन आपने वृद्धाओं के लिए बात की है। आज दो साल हो गये।

.....व्यवधान.....

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अरे भइया भगवा की बात क्यों कर रहे हो यार। बैठ जाउं क्या। बैठ जाता हूं भाई साहब। सही राम जी बैठ जाता हूं। कमाल कर रहे हो, अध्यक्ष जी बैठ जाता हूं।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : बाजपेयी जी हो गया कन्क्लूड हो गया।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : बोल रहा हूं सर अभी अभी हमारे साथी ने।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : अजय महावर जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : और आज जो दिल्ली के अन्दर राशन बांटा गया। ये हमारी।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : रोहित जी प्लीज। कन्क्लूड कर रहे है वो।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : आज दिल्ली के अन्दर जो राशन बांटा गया। वो हमारे केन्द्र सरकार के द्वारा बांटा गया। इसका कोई जिक्र।

.....व्यवधान.....

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : बिल्कुल बांटा है। केन्द्र सरकार ने बांटा है। केन्द्र सरकार की तरफ से बांटा गया है। केन्द्र सरकार की ओर से राशन बांटा गया है। क्या बात कर रहे हैं आप। हॉ, बिल्कुल बांटा गया है केन्द्र सरकार की तरफ से। केन्द्र सरकार की ओर से अध्यक्ष जी राशन बांटा गया है।

माननीय अध्यक्ष : ये मान रहे हैं जो गन्दा राशन बंटा था वो केन्द्र सरकार का था।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : एक काम और बढ़िया किया है। हॉ एक काम अध्यक्ष जी, एक काम दिल्ली सरकार ने बहुत अच्छा किया है।

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी हंसाई करवा रहे हैं।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी : अध्यक्ष जी, कूपन बांट रहे है उसमें अपनी फोटो लगा रहे हैं। आज हर चौराहे पर जनता के दिये हुए टैक्स से हर चौराहे पर मुख्यमंत्री जी अपनी फोटो लगा रहे हैं। ये दिल्ली की जनता का टैक्स है। मुख्यमंत्री जी, प्रचार बन्द कर दीजिए और जनता का काम कीजिए। जनता का काम कीजिए। मैं आज भी कह रहा हूं कि राशन जो है वो केन्द्र सरकार के द्वारा बांटा गया है। दिल्ली सरकार ने तो फोटो लगा दी, मुख्यमंत्री जी ने डबल फोटो लगाई अपनी। चार किलो सड़ा गेहूं, चार किलो सड़ा गेहूं और एक किलो चावल। ये दिल्ली की जनता के साथ अन्याय किया है आम आदमी पार्टी की सरकार ने और केन्द्र सरकार की ओर से जो राशन बांटा गया वो आज भी कोई आदमी चैलेन्ज करके दिखाये और आप लोगों ने प्रचार के अलावा कोई काम नहीं किया है और ये छलावा है। ये दिल्ली की जनता

को आम आदमी पार्टी की सरकार ने छला है और आने वाले टाइम में दिल्ली की जनता केजरीवाल जी और आप सब लोगों को जवाब देगी। धन्यवाद।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : श्री अब्दुल रहमान जी। चलिए, वो मान लिया उन्होंने। बैठिए, बैठिए।

श्री अब्दुल रहमान : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय,

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : रहमान जी बोल रहे हैं। बैठिए, माननीय सदस्यगण प्लीज।

श्री अब्दुल रहमान : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे उप–राज्यपाल जी के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया। शुक्रगुजार हूं आपका। अध्यक्ष महोदय, माननीय उप–राज्यपाल जी ने अपने अभिभाषण में बहुत सारी चीजों का जिक्र किया और दिल्ली की सरकार की बराबर सराहना की। जो उसके अच्छे कार्य थे। जितने कार्य दिल्ली की सरकार ने किये, उन तमाम को उसमें काफी को दर्शाया गया। मैं धन्यवाद देता हूं दिल्ली के उप–राज्यपाल को और जैसा कि अभी मेरे काबिल दोस्त एक बात बोल रहे थे कि दिल्ली के अन्दर सड़ा हुआ राशन बांटा गया और एक मिनट सर। मेरे काबिल दोस्त ने कहा कि दिल्ली के अन्दर सड़ा हुआ राशन बांटा गया और केन्द्र सरकार ने राशन बांटा। मैं उनकी जानकारी के लिए बता देना चाहता हूं कि दिल्ली की सरकार दिल्ली की जनता के लिए राशन केन्द्र सरकार से ही लेती है और केन्द्र की सरकार इस तरह का दुर्व्यवहार, इस तरह का दोहरा व्यवहार करती है कि सड़ा हुआ राशन दिल्ली की सरकार को देती है तो ये दुर्भाग्यपूर्ण है। ये केन्द्र की सरकार से आया हुआ राशन है। वो सड़ा हुआ राशन सप्लाई करती है। अच्छा ये तो यही लोग जवाब दें इसका। दूसरी बात दिल्ली के अन्दर इस कोरोना जैसी महामारी में जितने काम दिल्ली की सरकार ने किये। ये जगजाहिर है। ये पूरी दुनिया जिसकी सराहना करती है। चाहे टेस्ट का मामला हो। दिल्ली के अन्दर लगभग 02 करोड़ की जनसंख्या में 60 हजार टेस्ट प्रतिदिन कोरोना के होना अपने आप में एक

मिसाल है जबकि उत्तर प्रदेश जहां की आबादी 20–21 करोड़ है और वहां पर मात्र 17 हजार टेस्ट प्रतिदिन हो रहे थे, दिल्ली में 60 हजार टेस्ट प्रतिदिन हो रहे थे। ऑक्सीमीटर की बात मेरे काबिल दोस्त ने कही। दिल्ली की सरकार ने पूरे भारत के अन्य राज्यों में, कई राज्यों में आम आदमी पार्टी के वालंटियर्स ने आक्सीमीटर लेकर लोगों के टेस्ट किये जिससे उनकी बीमारियों का पता लगा और उनको अस्पताल तक पहुंचाया जा सका। पूरे देश के अन्दर ये काम आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने किया, अरविंद केजरीवाल जी के सिपाहियों ने किया। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब कोरोना बीमारी चरम सीमा पर थी, मैं सीलमपुर विधान सभा से आता हूं। मेरी विधान सभा में गरीब लोग काफी तादाद में रहते हैं लेकिन उस वक्त मेरी विधान सभा के अन्दर 60 हजार लोगों को पका हुआ खाना और 24 जगहों से उसे वितरण करना मैं समझता हूं कि हर वो आदमी जो वहां से खाना ले रहा था, दिल्ली की सरकार को और अरविंद केजरीवाल को पल्ले फैलाकर दुआयें दे रहा था, दोनों हाथ उठाकर दुआयें दे रहा था कि एक ऐसी भी सरकार है देश में जिसने इस वक्त में लोगों की मदद की जब महामारी पूरे देश के अन्दर फैली है, कोई निकलने को तैयार नहीं है और जो लोग इस तरह की बात करते हैं कि दिल्ली में ये कहा जा रहा था कि दूर बैठ जाओ, उन लोगों ने बंगलों से और अपनी कोठियों से निकलकर बाहर तक नहीं देखा, एक बार भी नहीं निकले वो लोग। सिर्फ भाषणबाजी करना उनका काम है। एक दिन आकर उन्होंने ये नहीं देखा कि अगर उनके पास से उनके मोहल्ले में भी अगर किसी को भगवान न करे अगर कोरोना हो गया या हो जाता तो वो लोग मोहल्ला छोड़कर चले जाते। वो लोग बात करते हैं दूर बैठने की। इस महामारी में 'दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी' का नारा किसने दिया, कहां से आया? दूरी तो केन्द्र सरकार ने तय की। सारी सरकारों ने तय की कि दूर रहना है ताकि बीमारी के लक्षण एक–दूसरे को न लगे तो ऐसी बातें करना यहां खड़े होकर ये इनको शोभा नहीं देता। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जब 60 हजार लोगों का खाना प्रतिदिन मेरी विधान सभा में आ रहा था दोनों वक्त और लोग हाथ फैला–फैला कर दिल्ली की सरकार को और माननीय अरविंद केजरीवाल जी को दुआयें दे रहे थे उसी वक्त में हमारे माननीय खाद्य मंत्री ने और हमारी दिल्ली की सरकार ने एक ऐसा वो निकाला कि वो लोग जो पका हुआ खाना

लेने हमारे स्कूलों पर, हमारे केन्द्रों पर नहीं आ रहे थे उनके लिए सूखे राशन की व्यवस्था करना और जो ये कह रहे हैं कि चार किलो गेहूं और एक किलो चावल मैं उनको बता देना चाहता हूं कि दिल्ली की सरकार ने साथ में एक किट का प्रावधान भी किया था जिसके अन्दर चना, जिसके अन्दर दाल, जिसके अन्दर तेल, जिसके अन्दर चीनी, जिसके अन्दर चाय की पत्ती वो तमाम चीजें उसके अन्दर थीं जिससे एक घर का जरूरत का सामान होता है वो तमाम चीजें दिल्ली की सरकार ने उस किट के अन्दर दी। मैं बता देना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय कि दिल्ली की एक मात्र सरकार है जिसने कोरोना योद्धाओं को जो कोरोना काल के अन्दर चाहे वो नर्सेज थे, चाहे वो डाक्टर्स थे, चाहे वो सफाई कर्मी थे वो जो भी लोग थे अगर किसी की उस कोरोना की बीमारी से मौत हुई तो वो पहली एक सरकार दिल्ली की ऐसी सरकार है जिसने 01 करोड़ रूपये की धनराशि उसके परिवार को दी। ये एक ऐसा काम है जो पूरी दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिला होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान एक और बात पर दिलाना चाहता हूं। पहला प्लाज्मा बैंक दिल्ली की सरकार ने शुरू किया। पेन्शन को कोरोना जैसी महामारी में डबल किया लेकिन एक दिक्कत जो मेरी पीडा, मेरे दिल के अन्दर है मैं आपसे वो भी कहना चाहता हूं। मैं सीलमपुर विधान सभा में रहता हूं और कोरोना महामारी से जस्ट पहले एक दंगा दिल्ली के अन्दर हुआ और उस दंगे में अध्यक्ष महोदय, उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण का धन्यवाद भी करता हूं और उन्होंने अच्छी बात सुझाइ लेकिन दिल्ली की पुलिस उन्हीं के अन्डर आती है और दिल्ली के पुलिस का दोहरा चेहरा दिल्ली के अन्दर देखने को मिला कि दंगे के अन्दर एक कानून मैंने सुना था कि जो आदमी कहीं दंगा हुआ है, कहीं झगड़ा हुआ है और अपने घर से 2 सौ मीटर तक कहीं भी खड़ा पाया जाता है तो उसे कहीं दंगे में दोषी नहीं माना जायेगा। लेकिन दंगे के अन्दर, दंगा शिव विहार में हुआ। दंगा करावल नगर में हुआ, दंगा चॉद बाग में हुआ, दंगा यमुना विहार चौक पर हुआ लेकिन सीलमपुर के अन्दर कहीं दंगा नहीं हुआ। मौजपुर में छुटपुट घटनायें हुई लेकिन जो लोग चौहान बांगर के अन्दर, जो लोग सीलमपुर के अन्दर, जो लोग ब्रह्मपुरी के अन्दर, जो लोग जाफराबाद के अन्दर अपने घर पर शोर मचता था कि साहब इधर से आ गये लोग, उधर से आ गये लोग। कोई आदमी अपने घर के दरवाजे पर भी खड़ा था तो दिल्ली की पुलिस ने उठाकर उसको जेल में डालने

का काम किया और उस पर 302 जैसी धाराओं में उसे बन्द करने का काम किया। ऐसे पचासों बच्चे।

माननीय अध्यक्ष : उपराज्यपाल के अभिभाषण पर।

श्री अब्दुल रहमान : सैकड़ों बच्चे आज भी दिल्ली की जेलों में बन्द हैं। जो बेकसूर हैं। जो बेगुनाह हैं। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली की पुलिस ने ज्यादती करके बेगुनाह बच्चों को जेलों में डाला है। अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं ये एक ऐसी जगह है, ये एक ऐसा मंदिर है कि जहां हम अपनी बात भी नहीं कह सकें, अपने इलाके की बात को न रख सकें तो हम कहां रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके समक्ष कहना चाहता हूं कि दिल्ली की पुलिस ने वो दोहरा रवैया शायद इसलिए अपनाया कि एक समुदाय पर प्रेशर बनाया जा सके। उसके नौजवान बच्चों को उठाकर जेलों में डाल दिया, जो बेकसूर थे। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, इसकी गहनता से जांच होनी चाहिए और जो कसूरबार हैं इन दंगों के उन्हें सजा मिलनी चाहिए। लेकिन जो बेगुनाह जेलों के अंदर बंद हैं, उनको जेल भेजने वालों को भी सजा मिलनी चाहिए और अध्यक्ष महोदय, एक दो लाइनें कहकर अपनी बात को विराम दूंगा और फिर से मैं धन्यवाद देना चाहता हूं।

.....व्यवधान.....

श्री अब्दुल रहमानः क्या सर दोबारा कहें।

माननीय अध्यक्षः ये, चलिये।

श्री अब्दुल रहमानः सर देखिये।

मननीय अध्यक्षः कम्पलीट करिये रहमान जी।

श्री अब्दुल रहमानः एक बात बताता हूं। सर इनका कुछ नहीं है ये तो लोग सिर्फ यहां इसलिए आकर बैठते हैं कि यहां ये सिर्फ शोर मचा सके और थाली बजाने वालों का और दीये जलाने वालों का समर्थन कर सकें और कुछ नहीं इनके बस की।

माननीय अध्यक्षः रहमान जी कंक्लूड करिये। रहमान जी कंक्लूड करिये प्लीज।

श्री अब्दुल रहमानः ओझाओं के मानने वाले लोगों से, थाली बजाने से और दीये जलाने से कहीं बीमारियां जाती हैं। अपने ऊपर सोच कर देखो। अध्यक्ष महोदय, एक बात कह कर मैं अपनी वाणी को विराम दूंगा कि

जुल्म के साये में पर तोलेगा कौन,

जुल्म के साये में पर तोलेगा कौन,

सोचना ये है कि लव खोलेगा कौन और

सच बयां करना जरूरी है बहुत,

सच बयां करना जरूरी है बहुत

और मैं भी चुप बैठा तो फिर बोलेगा कौन, फिर बोलेगा कौन।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे माननीय उपराज्यपाल जी के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया। बहुत बहुत शुक्रिया, धन्यवाद। मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूं।

माननीय अध्यक्षः श्री अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्त : अध्यक्ष जी, आपने आज एलजी साहब के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया, इसलिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद। अध्यक्ष जी जब एलजी साहब अपना भाषण दे रहे थे तो बार बार कह रहे थे, मेरी सरकार, मेरी सरकार तो बहुत अच्छा साईन था क्योंकि दिल्ली सरकार उन्हीं की सरकार है और मुझे लगा कि वो कुछ सच बोल गये इस बार और उन्होंने कोरोना पर बहुत कुछ कहा और उसमें बार बार एक ही बात कहने लगे कि कोरोना में दिल्ली में केजरीवाल सरकार ने जो काम किया था, वो देखने लायक था। वो पूरे भारत में एक मॉडल बना और वो मॉडल इसलिए बना क्योंकि दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री, अरविंद केजरीवाल जी और उनकी पूरी टीम दिन–रात काम कर रही थी। माननीय मुख्यमंत्री जी और

सत्येन्द्र जी (स्वास्थ्य मंत्री) दोनों अस्पतालों में जा रहे थे, लोगों को देख रहे थे और दिन–रात काम कर रहे थे और उसका नतीजा ये निकला कि दिल्ली के अंदर एक बहुत बड़ी स्वास्थ्य व्यवस्था को स्थापित किया गया । दिल्ली के अंदर हजारों की संख्या में कोरोना के बेड बढ़ाये गये क्योंकि कोरोना एक अचानक से आयी हुई बीमारी थी और उसके लिए कोई भी सरकार तैयार नहीं थी और जब ये बीमारी आयी तो हमारे माननीय प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने एक स्लोगन दिया, एक फार्मूला दिया कि पहले थाली बजाओ फिर ताली बजाओ और फिर शंख बजाओं और कोरोना चला जाएगा तो लोग बेचारे हमारे देश के शरीफ लोग हैं। उन्होंने ये सब किया और उसके बाद कोरोना नहीं गया। कुछ लोगों ने गोबर भी लगाया, मिट्टी में भी गड़े और कुछ लोगों ने कहा कि उल्टे खड़े हो जाओ, तो ये सब चला, लेकिन कोरोना नहीं गया। जिसने ये सब किया, गोबर लगाया, उल्टे खड़े हो गये, उनको कोरोना पहले हो गया और ये आश्वासन जब दिये गये तो पता चला कि।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः भाई सौरभ जी, सौरभ जी समय का देखिये प्लीज।

श्री अजय दत्तः जी जी तो ये सब चीजें।

माननीय अध्यक्षः उनको बोल लेने दीजिए दो मिनट।

श्री अजय दत्तः लेकिन एक प्रैक्टिकल नेतृत्व की वहां पर जरूरत थी और मुझे लगा ये नेतृत्व नहीं मिला। लेकिन दिल्ली के अंदर जो नेतृत्व मिला, उसने ये स्थापित कर दिया कि कोरोना कैसे भगाया जा सकता है और इस जंग में हमारे स्वास्थ्य मंत्री जी का स्वास्थ्य बिगड़ा और ये सच बात है और वो हॉस्पिटल भी पहुंचे और बड़ी मुश्किलों के बाद बड़ी जद्दोजहद से निकले। लेकिन इस सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि इस सबमें जो दो नये हॉस्पिटल खोले गये, जिसमें एक अम्बेडकर नगर के हॉस्पिटल का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया। बुराड़ी के हॉस्पिटल का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया और 600 बेड नये बढ़ाये गये। 10 हजार बेड राधा स्वामी सतसंग व्यास में बनाये गये और जितने भी प्राईवेट हास्पिटल है,

उनको ये निर्देश दिया गया कि 70 परसेंट से ज्यादा कोरोना के बेड बनाये जाएं जिसका लाभ दिल्ली की जनता को हुआ और जब कोरोना बढ़ा तो वो सब लोग वहां पर हॉस्पिटलों में गये और अपना ईलाज करवाया उसके बाद जब कोरोना और बढ़ने लगा तो एक नई चीज इजाद करवायी गयी जो दिल्ली सरकार, दिल्ली के डाक्टरों द्वारा किया गया। माननीय मुख्यमंत्री जी का इसमें बहुत बड़ा हाथ है और एक प्लाज्मा बैंक बनाया गया। प्लाज्मा से कोरोना से बचाने का एक नया ईलाज पूरे विश्व को दिल्ली ने दिया। इसके लिए दिल्ली सरकार के माननीय मुख्यमंत्री जी बधाई के पात्र हैं और आज विश्व में अलग अलग देश कोरोना को हटाने के लिए प्लाज्मा बैंक बना रहे हैं और इसी कड़ी में जब लोग बहुत हताश थे, निराश थे और कोरोना से जूझ रहे थे तो लाखों लोगों के लिए खाने का प्रबंध किया गया। पका हुआ खाना हरेक विधान सभा में, हरेक गली, कोने नुक्कड़ पे दिया गया और उसके बाद जितने भी दिल्ली में लोग जो करीबन 71 लाख लोग जो राशन लेते हैं, उनको राशन पहुंचाया गया, उनको डबल राशन दिया गया, एडवांस में राशन दिया गया और जिन लोगों के पास राशन कार्ड नहीं थे, उनको भी राशन दिया गया। उनको कूपन के माध्यम से राशन बांटे गये और हम लोगों ने राशन बांटे। सभी विधायक यहां बैठे हैं, जिन्होंने अपनी विधान सभाओं में राशन बांटा और किसी को राशन की कमी नहीं होने दी। किसी को खाने की कमी नहीं होने दी और लोगों को बचा लिया गया।

प्रवासियों के लिए बस की सुविधा अरेंज की गयी। प्रवासियों के लिए ट्रेन की सुविधा अरेंज की गयी। उनको घर तक भेजा गया। ये बहुत बड़ी चिंता थी प्रवासियों के लिए जो लोग रोड पे निकल गये थे, जिसके लिए कोई भी सरकार काम नहीं कर रही थी बल्कि ये देखने में आया था उस समय जो लोग बॉर्डर पर गये थे। वहां पुलिस ने उनके साथ बदतमीजी की। मार–पिटाई की। लेकिन हमारी सरकार ने, दिल्ली सरकार ने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनका साथ दिया। उनको घर भेजा और कोरोना में जो लोग, जो डाक्टर जो कोरोना के योद्धा काम कर रहे थे, उनके लिए एक बहुत महत्वपूर्ण योजना लागू की गयी, जिसमें कहा कि आप चिंता मत करो, मैं आपका बेटा, आपका भाई आपके साथ खड़ा हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने एलान किया कि अगर इस लड़ाई को लड़ते हुए कोई भी कोरोना योद्धा अगर शहीद

होता है तो उसके परिवार को एक करोड़ की राशि दी जाएगी और कुछ डाक्टर्स, कुछ सफाई कर्मचारी, कुछ मेडिकल के अदर स्टाफ, कुछ सिक्योरिटी गार्ड इस जंग में शहीद भी हुए और माननीय मुख्यमंत्री ने जो वादा किया था, उनके घर जाकर उन डाक्टर्स को, उन सफाई कर्मचारी को, उन सिक्योरिटी गार्ड को, उन सिविल डिफेंस के आफिसर्स को ये राशि प्रदान की जिससे सभी में एक उत्साह बढ़ा और उन्होंने बहुत मेहनत और ईमानदारी से काम करते हुए दिल्ली को इस महामारी से बचाया। इसके साथ साथ ऑटो चालकों को और टैक्सी चालकों को एडवांस में उनको भत्ता दिया गया कि जिससे कि वो अपना रोजगार चला सके और राशन की एक किट बांटी गयी, जिसमें आटा, दाल, चीनी, चावल सभी था और लोगों ने अपने घर पर उसको बनाया, खाया और ये सब हुआ। उसके बाद एक और अभियान चलाया गया।

माननीय अध्यक्षः अजय जी। अजय जी। अजय जी कंक्लूड करिये।

श्री अजय दत्तः ऑक्सीमीटर बांटे गये और लोगों को बता दिया गया कि अगर आप घर में होम आइसोलेशन में हैं तो ऑक्सीमीटर से अपना ऑक्सीजन चैक कीजिये। अगर ऑक्सीजन कम है तो आप हॉस्पिटल जाइये अदरवाईज आप घर पर रहिये।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद अजय जी।

श्री अजय दत्तः इसके साथ साथ मैं लास्ट में एक बात कहते हुए अपनी बात को विराम दूंगा। जब ये सब हुआ तो इकॉनॉमी डाउन हो रही थी और इकॉनॉमी को बूस्ट करने के लिए एक और महत्वपूर्ण योजना माननीय मुख्यमंत्री जी ने रियल स्टेट के बूस्ट करने के लिए सर्कल रेट को घटाया और जब लोगों के पास रोजगार नहीं थे तो रोजगार वेबसाइट बनायी और लोगों को रोजगार देने के लिए कहा गया और वेबसाइट के माध्यम से रोजगार बाजार, ये वेबसाइट है, जिससे लोग आज काम रहे हैं तो ये सारा काम जो दिल्ली सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री और उनकी टीम ने जो किया है बहुत सराहनीय है, जिससे आज दिल्ली के लोग बहुत खुश हैं और जो अल्टीमेटली सरकार को चाहिए लोगों की सेवा, वो की गयी और लोगों ने दुआएं दीं, इसीलिए आज दिल्ली में अरविंद केजरीवाल जी के कामों की सराहना है और

मैं एलजी साहब का धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने ये सारी बात अपने वक्तव्य में कही और सरकार को बधाई दी और ये भी कहा, दिल से कहा कि इस सरकार ने अच्छा किया है। धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया और धन्यवाद माननीय मुख्यमंत्री जी आपने कोरोना काल में जो काम किये, वो इतिहास में लिखे हुए हैं और दिल्ली नहीं पूरा विश्व इसको जानता है। आपको भी पुनः धन्यवाद। जय हिंद, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद अजय दत्त जी। श्री बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (माननीय नेता प्रतिपक्ष) : आदरणीय अध्यक्ष जी। मैं दिल्ली के उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण से पूरी तरह से सहमत नहीं हूं। उनके अभिभाषण में सच्चाई बहुत कम नजर आ रही है और उन्होंने दिल्ली सरकार की ओर से जिन विषयों की चर्चा की हैं, उस पर मैं जरूर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने इस सदन में अपने माननीय सदस्य, महरोलिया जी को भी सुना। यदि प्रधानमंत्री जी ने ये कहा कि हम अपने पुरूषार्थ से आपदा को अवसर में बदल सकते हैं। अब उनकी ओर से मजाक उड़ाया गया है। उन्होंने मुख्यमंत्री जी को अवतार कहा है, उन्होंने उनको सम्मान दिया है। ये उनकी अपनी निजी राय हो सकती है। मेरा उस पर कुछ बोलना अनावश्यक होगा। हमारी बहन जो पहली बार सदन में आयी है, बहन ढ़िल्लों जी ने भी प्रधानमंत्री जी का मजाक उड़ाया है। यदि देश वासियों से थाली बजवाकर, दीप जलाकर 130 करोड़ लोगों को संगठित करने का यदि प्रयास किया है तो इसमें मैं समझता हूं कि प्रधानमंत्री जी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब कोरोना महामारी आयी। एक समय वो था, जब दिल्ली सरकार के पास कुल 309 आईसीयू बेड्स थे और 111 वेंटिलेटर बेड्स थे। दिल्ली में सरकारी अस्पतालों में बेड्स की कमी थी। मेडिकल स्टाफ की कमी थी। हमारे माननीय मंत्री, उनमें हमारे माननीय डिप्टी चीफ मिनिस्टर हैं, वो कोरोना से पीड़ित हुए। हमने ईश्वर से प्रार्थना की कि वो जल्दी ठीक हो जाएं। हमारे हैल्थ

मिनिस्टर साहब पीड़ित हुए, उनके लिए भी ईश्वर से प्रार्थना की। दिल्ली सरकार के अस्पतालों की ये हालत थी कि हमारे ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर और ऑनरेबल हैल्थ मिनिस्टर को प्राईवेट हॉस्पिटल में जाकर ईलाज कराना पड़ा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के सुप्रीम कोर्ट को ये कहना पड़ा कि दिल्ली सरकार के अस्पतालों की हालत बूचड़खाने से भी ज्यादा बद्तर है। जब ऐसी स्थिति पैदा हो गयी तो दिल्ली सरकार ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि केन्द्र सरकार इस संकट की घड़ी में हमारी मदद करे। बहुत अच्छा होता, यदि प्रधानमंत्री जी का और देश के माननीय गृह मंत्री जी का इस महामारी पर काबू पाने के लिए जो योगदान रहा है, उसकी चर्चा उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण में होती तो अच्छा लगता। मैं आज इस सदन को बताना चाहता हूं कि जब दिल्ली सरकार ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया तो भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई में उनके मार्ग दर्शन में श्री अमित शाह जी ने 15 दिन के अंदर 20 हजार बेड्स बनवाकर तैयार किये। मैं बताना चाहता हूं कि 500 रेल के डिब्बों में आईसीयू वार्ड बना दिये गये। 1000 बेड्स हमारी मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस, डीआरडीओ डिपार्टमेंट और टाटा इंस्टिट्यूट की मदद से बनाकर तैयार कर दिये गये।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मेडिकल स्टाफ की जो कमी थी देश के प्रधानमंत्री आदरणीय मोदी जी ने कहा कि पैरामिलिट्री फोर्सिज के पास जितना भी मेडिकल स्टाफ है उनको एयरलिफ्ट करके दिल्ली लाया जाए जिससे कि दिल्ली के लोगों की जान बचाई जा सके और फिर पैरामिलिट्री फोर्सिज के स्टाफ को एयरलिफ्ट करके दिल्ली लाया गया। आदरणीय मुख्यमंत्री जी को मालूम है, आदरणीय स्वास्थ्य मंत्री जी को मालूम है। आदरणीय अध्यक्ष जी, पीपीई किट उपलब्ध कराई गई, वेंटिलेटर उपलब्ध कराए गए, आईसीयू वार्ड की व्यवस्था की गई, आक्सीजन सिलेंडर दिए गए, जांच के रेट कम कराए। प्राइवेट अस्पतालों में जो लूट थी उस लूट को कम किया गया। आदरणीय अध्यक्ष जी, ये सब कुछ हमारे देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के निर्देश पर और मुख्यमंत्री जी ने जो माननीय गृहमंत्री के यहां बैठक हुई थी और उन्होंने जो आग्रह किया था, उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए जो कमिटमेंट की मुख्यमंत्री से उसको हंडरेड परसेंट पूरा किया। मैं जरूर चाहता

हूं कि ये सदन दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करे। आदरणीय अध्यक्ष जी, इस अभिभाषण में इस बात की चर्चा नहीं है। राशन की बात हो रही थी यहां मुख्यमंत्री जी ने भी जो उनकी सरकार से बन पाया उन्होंने गरीबों के लिए राशन की व्यवस्था की। लेकिन आदरणीय अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हुए हैं मैं यह जानकारी सदन को जरूर देना चाहता हूं कि 6 महीने तक भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने 72 लाख लोगों को 8 किलो गेहूं, 2 किलो चावल, 1 किलो चना मुफ्त उपलब्ध कराया और उसमें जो 4 किलो गेहूं था, 1 किलो चावल, 1 किलो चना बिल्कुल मुफ्त था और जो 4 किलो गेहूं, 1 किलो चावल था, जो 2 रुपये किलो गेहूं दिया जाता था, 3 रुपये किलो चावल दिया जाता था उसमें हर महीने दिल्ली सरकार का साढ़े छः करोड़ रुपये कन्ट्रीब्यूशन था। 72 लाख लोगों को मोदी जी की सरकार के द्वारा मुफ्त राशन उपलब्ध कराया जाए, क्या हमें उनके प्रति आभार व्यक्त नहीं करना चाहिए? आदरणीय अध्यक्ष जी, जो दिव्यांग जन है, बेसहारा विधवा है, सीनियर सिटीजंस है एक–एक हजार रुपये उनके खाते में डाले गए। हमारी जो महिलाएं हैं दिल्ली में गरीब है, उनके जन–धन खातों में 500–500 रुपये तीन महीने तक डाले गए। दिल्ली के अंदर लगभग 3 लाख महिलाओं को मुफ्त रसोई गैस का सिलेंडर देश के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस संकट की घड़ी में उनको मुफ्त उपलब्ध कराया। क्या इसकी चर्चा हमको करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए? आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी दिल्ली के अंदर लगभग 10 लाख लोग खोका–पट्टी वाले हैं। वो इज्जत और सम्मान के साथ रोजी रोटी कमा सके आदरणीय मोदी जी ने उनके लिए भी 10–10 हजार रुपये उपलब्ध करा दिए कि वो सम्मान के साथ रोजी–रोटी कमा सके। आदरणीय अध्यक्ष जी, चर्चा हो रही है कि 4 लाख प्रवासी श्रमिक जो दिल्ली से गए। अब मैं उसकी बहुत ज्यादा बारीकी में नहीं जाना चाहता लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं रूलिंग पार्टी के ओनरेबल मेंबर्स क्या कह रहे हैं मैं उस कन्ट्रोवर्सी में नहीं पड़ना चाहता हूं। लेकिन मैं सच्चाई जरूर कहना चाहता हूं कि जो 4 लाख प्रवासी श्रमिक दिल्ली छोड़कर गए, उनके लिए मोदी जी की सरकार ने रेलों में मुफ्त सफर की व्यवस्था की। 85 परसेंट पैसा मोदी जी की सरकार ने दिया और जिस राज्य में वो गए 15 परसेंट उस राज्य सरकार ने दिया। तो इसकी चर्चा भी तो हमको करनी

चाहिए सदन को कि संकट की घड़ी में केन्द्र सरकार जो है वो पूरी इमानदारी के साथ दिल्ली सरकार के साथ खड़ी हुई थी। इसकी चर्चा अध्यक्ष जी होनी चाहिए।

अध्यक्ष जी, उपराज्यपाल महोदय ने शिक्षा के बारे में भी कुछ चर्चा की है हमारे ओनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर यहां बैठे हुए हैं। मैं जरूर जानना चाहूंगा पहले दिल्ली में 10 हजार टीचर्स, वाइस प्रिंसिपल्स, प्रिंसिपल्स की कमी थी। हमने उन 5600 टीचर्स को निकाल दिया जिनको हमने रिएंप्लायी किया था, हमने 5000 गेस्ट टीचर्स को निकाल दिया। अध्यक्ष जी, अब हम कहते हैं कि हमारा रिजल्ट बहुत अच्छा आ रहा है, आदरणीय डिप्टी सीएम यहां बैठे हुए हैं। जो बच्चे कमजोर है जो नौवीं क्लास में गए हैं आपने तो उनको स्कूल में दाखिला ही नहीं दिया। उनको तो आपने कहा कि ओपन स्कूल में चले जाइए। आदरणीय अध्यक्ष जी, हायर एजुकेशन एंड स्किल डवलपमेंट कोर्स में सिर्फ 11 स्टूडेंट है जबकि करोड़ों रुपया विज्ञापन के ऊपर खर्च किया गया है। मैं इस हाउस के अंदर कह रहा हूं और मेरी मंशा किसी को हर्ट करने की नहीं है, मैं चाहता हूं कि इस व्यवस्था में सुधार हो, जो सरकार की ओर से विज्ञापन दिए जाते हैं। उसके ऊपर पैसा खर्च होता है उसका लाभ उन लोगों तक पहुंचे जिन लोगों तक ये सरकार लाभ पहुंचाना चाहती है। आदरणीय अध्यक्ष जी, एससी/एसटी के छात्रों को हायर एजुकेशन के लिए सिर्फ 4 छात्रों को लोन मिला है। इसकी चर्चा भी की है हमारे उपराज्यपाल महोदय ने। झुग्गी–झोपड़ी की बात कही है हमारे 45 हजार फ्लैट्स बनकर तैयार पड़े हैं जर्जर हालत में है। मैं आपके माध्यम से आदरणीय मुख्यमंत्री जी से मांग करूंगा कि जिन झुग्गीवासियों को हटाना है उनको जल्दी से जल्दी उन फ्लैट्स में उनको बसाया जाए। ये मैं अपनी पार्टी की ओर से उनसे आग्रह करना चाहता हूं। जहां तक पानी की बात उपराज्यपाल महोदय ने कही है, बहुत लंबे समय से हम सुन रहे हैं मुख्यमंत्री जी ने भी अनेकों बार कहा है। हमारे इस महकमे के मंत्री है और चेयरमेन है हमारे जल बोर्ड के आदरणीय सत्येन्द्र जैन साहब, उन्होंने भी कहा कि हम 24 घंटे क्लीन वाटर उपलब्ध करायेंगे। बहुत अच्छी बात है आप उपलब्ध करा पाए उसके विस्तार में क्योंकि मैं अभी नहीं जाना चाहता हूं। फ्लाइओवर्स की बात हुई है लेकिन एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि जो बारापुला नाले से मयूर विहार तक जो ऐलिवेटिड रोड बन रहा है,

आदरणीय अध्यक्ष जी, जरा पूछो हमारे ऑनरेबल मिनिस्टर सत्येन्द्र जैन साहब यहां बैठे हुए हैं कि कितने सालों से बन रहा है ये। क्यों नहीं अभी तक ये पूरा हुआ, क्या कारण है तो ये जानकारी भी हम जरूर उनसे लेना चाहेंगे। अध्यक्ष जी, जहां तक ट्रांसपोर्ट की बात है देखिए जो हमारा पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम है वो पूरी तरह कोलेप्स कर गया है। हम दिल्ली में अभी तक एक भी डीटीसी की बस नहीं खरीद पाए हैं, कहां हम 11000 बसों को सड़कों पर उतारने की बात करते हैं। हर साल हम कहते हैं पिछली बार भी हमने कही आप बजट उठाकर देख लीजिए कि हम 1000 डीटीसी की बसें खरीदेंगे लेकिन नहीं खरीदी गई। आदरणीय अध्यक्ष जी, ये जो मैट्रो का थर्ड फेज है ये 2018 में पूरा होना था और जो फोर्थ फेज जो अभी चालू हुआ। थर्ड फेज तो अभी पूरा भी नहीं हुआ है। फोर्थ फेज जो है 2021 में पूरा होना था अब वो शुरू हुआ है। तो आदरणीय अध्यक्ष जी, इस पर सरकार को कहीं न कहीं विचार तो करना पड़ेगा कि आखिर हम मैट्रो के मामले में इतना क्यों पिछड़ गए हैं। ये जरूर मैं आपके माध्यम से नोटिस में लाना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी, केन्द्र सरकार ने 2017 में दिल्ली सरकार को कहा कि हम 40 इलैक्ट्रिक बसें आपको देना चाहते हैं। दिल्ली सरकार ने नहीं ली। आदरणीय अध्यक्ष जी, केन्द्र सरकार ने ये भी कहा कि 1000 इलैक्ट्रिक बसों के लिए हम आपको सब्सिडी देंगे। उस तरफ भी दिल्ली सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। आखिर जो दिल्ली में प्रदूषण बढ़ रहा है, उसका एक कारण ये भी है कि हमारा पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम पूरी तरह से बर्बाद हो रहा है।

माननीय अध्यक्षः कंक्लूड करिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः अध्यक्ष जी, आपने मुझे भी मौका दिया है कितना समय आप मुझे देना चाहते हैं कम से कम ये पहले ही जो पूरे दिन चर्चा होनी थी उसको भी आपने कम कर दिया है और एक लीडर ऑफ ओपोजिशन यदि बोलना चाहा रहा है तो आप उनको।

माननीय अध्यक्षः पूरे 15 मिनट मैं दे चुका हूं। पर्याप्त समय दिया है मैंने।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः आदरणीय अध्यक्ष जी, प्रदूषण को कम करने के लिए 31 लाख पेड़ लगाए जाने थे, कहां लगाए गए हैं? सड़कों की सफाई के लिए रोड स्वीपर मशीनें मंगानी थी, कितनी आई है वो सरकार बताएगी, स्मॉग टावर लगाने थे उसके बारे में सरकार बताएगी। चीन की तर्ज पर बड़ा स्मॉग टावर लगाना था उसका क्या हुआ? उसके बारे में सरकार को बताना चाहिए। जगह–जगह एयर प्यूरीफायर लगाने की बात कही थी, उसके बारे में सरकार बताएगी उसमें क्या कदम उठाया? पीडब्ल्यूडी की सड़कें जो टूटी पड़ी है गढ्ढे पड़ गए हैं जिससे सबसे ज्यादा डस्ट उड़ती है और उससे सबसे ज्यादा पीएम 2.5 जनरेट होता है। तो क्यों नहीं पीडब्ल्यूडी की सड़कें ठीक से उनको बनाया जा रहा है और इसी तरह से जहां–जहां ट्रैफिक जाम होता है उन स्थानों पर फ्लाइओवर बनाने थे। आखिर उसके लिए सरकार ने क्या कदम उठाया।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी, अब कंक्लूड करे प्लीज अब कंक्लूड करे प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः एक मिनट कंक्लूड कर रहा हूं न। ये जो रेड लाइट पर वो क्या है इंजन। 'रेड लाइट ऑन, गाड़ी ऑफ'। अध्यक्ष जी, बहुत सारे एक्सपर्ट्स का ये कहना है जब गाड़ी रेड लाइट पर नार्मल स्थिति में खड़ी रहती है चालू रहती है तो वो कम पोल्यूशन जनरेट करती है। जब वो रिस्टार्ट होती है तो ज्यादा पोलूशन जनरेट करती है। ये बात भी मैं दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय... एक बात अध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूं आज बड़ी मजेदार बात है देखो सुन लीजिए। पराली की चर्चा सरकार ने की है उपराज्यपाल ने की है।

माननीय अध्यक्षः ये आखिरी विषय है। हां, ये आखिरी विषय है बस।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः पराली 40 हजार रुपये की दवाई खरीदी गई। साढ़े तेरह लाख रुपया ट्रांसपोर्टेशन पर खर्च हो गया, ट्रैक्टर के ऊपर। ट्रैक्टर ने उस दवाई को पहुंचाया पता नहीं कहां पहुंचाया और 9 लाख 64 हजार रुपया टेंटों के ऊपर खर्च हो गया और 7 करोड़ रुपया विज्ञापन पर खर्च हो गया। तो आप बताइए अध्यक्ष जी, आखिर इससे फायदा क्या हुआ किसानों के पास तो नोटिस भेजे गए 50–50 हजार रुपये जुर्माने के एफआईआर दर्ज हुई। आदरणीय मुख्यमंत्री जी बताइए

कि इससे कितने किसानों को लाभ हुआ। ये सरकार को बताना होगा ये लोगों के टैक्स का पैसा है जो बर्बाद हुआ है। मैं जरूर उसके ऊपर अपनी पार्टी की ओर से इस सदन में चिंता व्यक्त करना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी,...

माननीय अध्यक्षः अब हो गया बिधूड़ी जी। नहीं–नहीं अब हो गया अब नहीं। अब कंक्लूड करिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः मैं अपनी बात को खत्म कर रहा हूं दो मिनट लूंगा बस आपके।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी, अब नहीं प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः देखिए जहां तक केन्द्र सरकार की मदद की बात है केन्द्र सरकार ने पेरिफरी रोड बनाई है, ट्रक्स की एंट्री बैन हुई है। ईको पार्क बदरपुर में बन रहा है जो दुनिया का सबसे बड़ा पार्क है। रोड, हाईवे, फ्लाइओवर, फुट ओवरब्रिजिज के लिए 48000 करोड़ रुपया श्री नितिन गड़करी जी की सरकार ने दिए हैं और दिल्ली में केन्द्र सरकार ने बीएस–6 मानक इंधन की शुरूआत की है जिससे कि प्रदूषण में कमी आ सके। अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात को समाप्त कर रहा हूं। मैं पूछना चाहता हूं आदरणीय मुख्यमंत्री जी से, मुख्यमंत्री जी जनवरी, 2020 में जो एयर क्वालिटी इंडेक्स जो रहा था वह 285 था और इस बार तो जनवरी में तो कोई पराली नहीं जलाई जाती है और इस बार आप रिपोर्ट मांग लीजिए कि इस बार जनवरी में 323 है और मैं आपको बता दूं डब्ल्यूएचओ ने दुनियाभर के 1650 शहरों में सर्वे कराया प्रदूषण के बारे में और दिल्ली दुनिया में सबसे ज्यादा प्रदूषित राजधानी घोषित कर दी गई। तो इसके लिए कुछ न कुछ तो मुख्यमंत्री जी गंभीरता दिखानी होगी। जो आपने कहा है कि हम ये–ये कदम उठायेंगे कृपा करके वो कदम उठाइए। अगर आपने ये कदम नहीं उठाए तो लोग दिल्ली छोड़कर भाग जायेंगे। ये स्थिति दिल्ली में पैदा हो गई है मैं वो बात नहीं कहना चाहता हूं। पिछले दो सालों में 54000 लोगों की मौत इसी वजह से हो गई है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद बिधूड़ी जी। बिधूड़ी जी, बहुत–बहुत धन्यवाद। थैंक्यू।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी: अध्यक्ष जी, चलिए ये तो आप लीडर ऑफ अपोजिशन।

माननीय अध्यक्ष: 20 मिनट पूरे दिए हैं 20 मिनट बिधूड़ी जी। प्लीज अब कंक्लूड करे।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी: आपने जो भी समय दिया है मैं बहुत–बहुत आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं और मेरी भावना जो है न कोई ऐसी वो नहीं है कि मैं किसी को यहां कोई एक्सपोज करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मेरी तो भावना ये ही है कि ये शहर वर्ल्ड क्लास सिटी कैसे बनेगा वो चाहे मैंने पहले भी कहा है चाहे ये बनाए, चाहे कोई और बनाए। ये ही हमारी मंशा है इससे ज्यादा कुछ भी नहीं है। अध्यक्ष जी, बहुत–बहुत आपका मैं धन्यवाद करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष: सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाज: अध्यक्ष जी, बहुत–बहुत धन्यवाद कि आपने एलजी साहब के एड्रेस के ऊपर मुझे बोलने का मौका दिया और मैं हमेशा से मानता हूं कि नेता विपक्ष रामबीर बिधूड़ी जी दिल्ली के विषय में बहुत सोचते हैं और अक्सर जो है ईश्वर से ये प्रार्थना करते हैं कि दिल्ली वर्ल्ड क्लास सिटी कैसे बने और मुझे लगता है कि इनकी प्रार्थना का असर है कि ईश्वर ने अरविंद केजरीवाल जी को मुख्यमंत्री बनाया। क्योंकि बिधूड़ी जी को मैं बहुत समय से जानता हूं। वो दिल से चाहते हैं कि दिल्ली का विकास हो और इनकी प्रार्थनाओं का एक बड़ा योगदान है कि दिल्ली को एक सक्षम मुख्यमंत्री मिला है और वो सपना जो उन्होंने देखा है इतने सालों से वो अब धीरे–धीरे पूरा हो रहा है। मैं इस बात को भी समझता हूं कि केन्द्र सरकार के बड़े–बड़े सरकारी अस्पताल होने के बावजूद भी टीवी पर केन्द्र सरकार के रोज लगभग सारे टीवी चैनल्स पर कसिदे पढ़ने वाले हमारे भाई संबित पात्रा जो है किसी केन्द्र सरकार के अस्पताल में न जाकर गुड़गांव के मेदान्ता अस्पताल के अंदर भर्ती हुए। मैं ये समझता हूं कि वो खुद डाक्टर है और खुद पूरे दिन मोदी सरकार के गुणगान करते हैं। तो उन्हें इस बात की जानकारी बिल्कुल होगी कि ऐसे बहुत सारे नए एम्स हैं जो मोदी जी ने बनवाए हैं। मगर उन्होंने और उनके साथ–साथ हरियाणा के मुख्यमंत्री खट्टर साहब ने और स्वयं अमित शाह जी जिन्होंने दिल्ली

को स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बहुत कुछ दिया। वो भी जब पहली बार बीमार हुए तो वो न किसी रेलवे के अंदर जो आईसीयू बने उसमें गए, न वो किसी छतरपुर के अंदर जो नई–नई सेवाएं बनाई उसमें गए, न वो किसी और अस्पताल में गए वो भी गुड़गांव के मेदान्ता अस्पताल के अंदर ही एडमिट हुए। मेरे को ऐसा लगता है कि किसी के स्वास्थ्य के बारे में और उसके अस्पताल के चयन के बारे में हमें यहां पर चर्चा नहीं करनी चाहिए थी। मगर क्योंकि रामबीर जी ने जिक्र छेड़ा तो मुझे लगा कि मैं उनको बताऊं कि उनकी पार्टी के नेता जो हमारे बीच में अभी नहीं रहे जेटली साहब थे, सुषमा जी थी। वे भी इलाज करने के लिए देश को छोड़ कर विदेश में इलाज कराकर आए। और हमारी पूरी की पूरी भगवान से प्रार्थना थी कि विदेश में भी उनका अच्छा इलाज हो जो बेहतर से बेहतर इलाज मिल सके वो इलाज उन्हें मिले मगर मुझे नहीं लगता कि उन्होंने या उनके परिवार ने इस देश का कोई अपमान करने की खातिर जो है विदेश के किसी अस्पताल को चुना होगा। मुझे लगता है कि उनकी व्यक्तिगत कुछ कारण होंगे, कुछ मेडिकल रीजंस होंगे, कुछ ऐसी फेसिलिटीज होंगी जो उन अस्पतालों में बेहतर होंगी जिसके कारण वो वहां पर गए मगर इस बात को कहने से पहले जो है इस सारी की सारी सूचना को बिधूड़ी जी को जरूर एकत्रित करना चाहिए था। मैंने सुना कि हमारे कुछ साथियों ने कहा कि कोरोना की रोकथाम के लिए केन्द्र सरकार ने ताली, थाली, गाली सब करने की कोशिश की मगर अंततः जो कोरोना की रोकथाम है वो डॉक्टरों द्वारा ही की गई। सरकार के अंदर और प्राइवेट अस्पतालों के अंदर इस दौरान डॉक्टरों की तरफ से, पैरामेडिकल स्टॉफ की तरफ से खूब काम हुआ और बड़ी बात ये है कि शायद दिल्ली सरकार ही इकलौती ऐसी सरकार है पूरे देश के अंदर जिसने इस बात को समझा कि डॉक्टर्स, नर्सेज और जो कोरोना वॉरियर्स हैं जो अपनी जान की बाजी लगाकर अस्पतालों के अंदर लोगों की सेवा कर रहे हैं उनको सरकार ने एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि का एलान भी किया और खुद मुख्यमंत्री स्वयं कई घरों के अंदर जाकर ये सम्मान राशि देकर भी आए जिससे एक बहुत बड़ा मैसेज जो है पूरी दिल्ली के अंदर गया और कोरोना वॉरियर्स ने अपनी जान की बाजी लगाकर इसके ऊपर काम किया। हमारे दूसरे मित्र हैं गांधी नगर से आते हैं अनिल वाजपेयी जी और वो बता रहे थे कि किस तरह से वो हमारी पार्टी छोड़कर गए, अनिल जी ऐसी कोई बात नहीं है, तो वो बता रहे थे

देखिए अध्यक्ष जी उनकी एक चीज तो हमें नोट करनी चाहिए कि उन्होंने बताया कि जो राशन केन्द्र सरकार की तरफ से दिल्ली को दिया जा रहा था वो कई जगह सड़ा हुआ था। तो ये एक बहुत गंभीर विषय है और खासतौर पर हमारे भाजपा के मित्र ने उठाया तो मुझे लगता है कि फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया जो कि भारत सरकार का एक अंग है वो दिल्ली को दिल्ली के हिस्से का राशन देता है और जाहिर सी बात है और बकायदा दिल्ली सरकार की कमाई का पैसा दिल्ली वालों के टैक्स पेयर का पैसा जो है दिल्ली सरकार केन्द्र सरकार को देती है ताकि दिल्ली वालों के लिए जो राशन है वो मुहैया कराया जाए। अगर उसके अंदर भी सड़ा हुआ राशन केन्द्र सरकार देती है तो ये एक बहुत दुख की बात है। हमारे जो माननीय नेता प्रतिपक्ष हैं रामबीर बिधूड़ी जी, मैं उनसे भी निवेदन करूंगा कि एक छोटा सा प्रतिनिधि मंडल विधायकों का लेकर जाएं हमारे जो खाद्य मंत्री हैं केन्द्र सरकार के उनके पास ताकि हम उनकों कहें कि जो राशन की क्वालिटी है जो केन्द्र दिल्ली को दे रहा है वो अच्छी दें ताकि इनका नाम भी रोशन हो, हमारे नाम भी रोशन हों और गरीब लोगों को इसका फायदा मिले। एक बात और बिधूड़ी जी ने कही कि डॉक्टरों को एयर लिफ्ट कराकर भेजा गया। अध्यक्ष जी, मुझे इसलिए याद है क्योंकि इसकी प्रेस कॉफ्रेंस मैंने ही की थी। माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी ने ये अनाउंसमेंट तो कर दी थी कि अभी 6 घंटे के अंदर–अंदर डॉक्टर्स एयर लिफ्ट कराकर आपके दिल्ली के अस्पतालों के अंदर भेज दिए जाएंगे मगर 48 घंटे इंतजार करने के बाद भी हमें पता चला कि ऐसा कुछ नहीं किया गया और मैंने प्रेस कॉफ्रेंस करके कहा था कि गृह मंत्री जी ने अनाउंसमेंट तो कर दी मगर दिल्ली वाले लोगों को इलाज की जरूरत है, हमने पूरे अरेंजमेंट कर रखे हैं कि वो डॉक्टर्स एयर लिफ्ट कराकर कब पहुंचेंगे मगर वो सिर्फ एक अनाउंसमेंट थी। उसके बाद वो डॉक्टर्स 48 घंटे तक जब तक मैंने प्रेस कॉफ्रेंस की तब तक नहीं पहुंचे। मुझे दुख इस बात का है कि प्रेस कॉफ्रेंस करने की जल्दी बहुत रहती है। इस चीज की जल्दी बहुत रहती है कि दिल्ली वालों के ऊपर एक अहसान जताया जाए कि हम लोग आपके लिए कर रहे हैं, हम कर रहे हैं, हम कर रहे हैं, ये नहीं कर रहे मगर वो काम नहीं किया जाता। रेलवे के अंदर जो बार–बार ये बात कही जाती है कि रेलवे के अंदर आईसीयू बनाए गए। अध्यक्ष जी ये ऑन रिकॉर्ड है मैं तो चाहूंगा कि ये रिकॉर्ड मंगवा कर इस विधानसभा

के अंदर एक–एक सदस्य को दिया जाए कि भरी गर्मियों के अंदर जब लूएं चलती हैं उस जून–जुलाई के मौसम में उन रेल के डिब्बों को खड़ा कर दिया गया। उनके अंदर कोई एयर कंडीशनर नहीं था कुछ नहीं था। रेलवे की सीटों के ऊपर सफेद चादर बिछा दी गई और कहा गया कि हमने आईसीयू बैड तैयार कर लिए गए मैं जानना चाहूंगा कि हमारे बीच में 8 दिल्ली के विधायक हैं जो भाजपा से आते हैं इनके परिवार में से कौन ऐसा सदस्य है एक भी कोई सदस्य हो जो उस रेलवे के आईसीयू के अंदर भर्ती हुआ हो और उसका इलाज होकर वो यहां पर वापिस आ गया हो इस दुनिया के अंदर। मैं चाहूंगा इनको समय दिया जाए इसके लिए कि ये कोई तो बताए क्योंकि मेरी जानकारी में अध्यक्ष जी न मेरे परिवार में, न मेरे गांव में, न मेरी कांस्टीट्यूएंसी में एक भी आदमी मुझे मिला है जिसने मुझे बताया हो कि कोरोना के समय में वो उस रेलवे के आईसीयू के अंदर भर्ती हुआ हो और उसका वहां पर इलाज हुआ हो। वो सिर्फ पीआर एक्सरसाइज करने का उद्देश्य था उस वक्त और मुझे लगता है कोरोना के संकट में जब सब लोग एक दूसरे की मदद कर रहे हैं उस वक्त भी अगर कोई सरकार पीआर करने के उद्देश्य से इस तरीके की चीजें करती है तो मुझे लगता है कि उसकी डिस्कशन इस विधानसभा में होनी ही नहीं चाहिए, हुई तो उसका जवाब आज दिया जा रहा है और मैं एक चीज की तारीफ करना चाहूंगा अध्यक्ष जी पहले पन्ने पर इस बजट से पहले जो एलजी साहब का जो एड्रेस होता है उसमें पहले पन्ने पर ये देखिए ये एक बड़प्पन होता है एक सरकार का दिल्ली सरकार ने पहले पन्ने पर लिखा “my Government together with the Central Government garnered all resources to ensure preventive and curative actions to safeguared the life of the citizens of the Delhi” कितनी बड़ी बात है। कौन सरकार लिखती है दूसरी सरकार का नाम मगर हमारी सरकार ने लिखित में कहा कि हां हम धन्यवाद करते हैं केन्द्र सरकार का और मैं तो ये भी कहूंगा कि सिर्फ केन्द्र सरकार का ही धन्यवाद नहीं करना चाहिए बहुत सारी एनजीओज थी, बहुत सारे गुरुद्वारे थे, बहुत सारी religious organisations थी जिनकी मदद से दिल्ली वालों ने कोरोना की लड़ाई को लड़ा और जीता उन सब organisations का धन्यवाद आज यहां पर हमें करना चाहिए और बिधूड़ी जी का कद थोड़ा और बढ़ जाता जब वो प्रधानमंत्री जी की तारीफ कर रहे थे, गृह मंत्री की

तारीफ कर रहे थे एक शब्द तारीफ का वो दिल्ली के मुख्यमंत्री के लिए भी कर देते तो उनका कद और बढ़ जाता और हमें उम्मीद है रामबीर बिधूड़ी जैसे जो नेता हैं वो ये काम कर सकते हैं क्योंकि वो बड़े दिल के नेता हैं। वो एक अलग तरीके की पॉलीटिक्स करने के लिए जाने जाते हैं। आखिरी में अध्यक्ष जी मैं एक चीज और कहना चाहूंगा मनीष सिसोदिया जी ने बताया कि दिल्ली की per capita income काफी बढ़ी है और दिल्ली की per capita income अब 210000 के करीब हो गई है। अध्यक्ष जी मेरा ये मानना है कि अगर ये सदन कम तनख्वाहों के अंदर भी विधायकों को रखना चाहता है तो ये सदन एक खास वर्ग के विधायकों को ही इस सदन में आने के लिए आकर्षित कर रहा है। आप ये तय कर रहे हो कि जिस आदमी के पास अपना खानदान का पैसा है या जिसके पास अपनी फैक्ट्री लगी हुई हैं, जिसके पास अपने बिजनेसेज चल रहे हैं जिसके अंदर उसको जाने की जरूरत नहीं पड़ती और तब भी उसके पास आमदनी का पैसा आ रहा है या उसके पास और किसी तरीके से पैसा आ रहा है वो ही आदमी चुनाव लड़कर इस सदन के अंदर आए तभी वो इतनी कम तनख्वाह के अंदर काम कर सकता है। अध्यक्ष जी, इस सदन के अंदर समाज के हर तबके का आदमी पहुंचना चाहिए, हर जाति का आदमी पहुंचना चाहिए और वो तभी संभव है जब आप ये चीज सुनिश्चित करें कि जो आदमी अच्छा कैरियर छोड़कर इस सदन के अंदर आ रहा है उसका घर चल सकता है अन्यथा अध्यक्ष जी ये आप भी जानते हैं, रामबीर विधूड़ी जी भी जानते हैं कि जितनी तनख्वाहें इस वक्त इस सदन में हम विधायकों को मिल रही है उसके अंदर ऑफिस चलाना, सदन चलाना, प्रिंटर का खर्चा, चिट्ठियों को भेजने का खर्चा, गाड़ी का खर्चा, पेट्रोल का खर्चा बहुत सारे विधायक किराये के घर में रहते हैं उसका खर्चा ये सारे खर्चे चलने जो हैं बहुत मुश्किल हैं तो मैं आपसे इस सदन की तरफ से ये गुजारिश करूंगा कि विधायकों की जो सैलरी है उसके ऊपर एक बार जो है आप चिंता कीजिए और उसको बढ़ाने की कोई कोशिश कीजिए बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : चलिए, प्लीज माननीय मुख्यमंत्री जी श्री अरविंद केजरीवाल जी चर्चा का उत्तर देंगे।

माननीय मुख्यमंत्री(श्री अरविंद केजरीवाल): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, अभी थोड़े दिन पहले मैंने सोशल मीडिया के ऊपर एक वीडियो देखा उसमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री योगी आदित्य नाथ जी एक स्कूल का निरीक्षण करने गए हुए थे। वो बिलकुल मनीष सिसोदिया स्टाइल के अंदर एक स्कूल में जाते हैं, एक क्लास में जाते हैं उस क्लास में फिर बच्चों से बात करने की कोशिश करते हैं पर वो नीयत तो दिख ही जाती है क्योंकि वो क्लास आर्टीफिशियल लग रही थी। उस क्लास में 12 कुर्सियां थी आगे डेस्क नहीं था तो बच्चे लिखेंगे कैसे तो जाहिर था कि एक क्लास बनाई गई है। मुझे खुशी हुई ये देखकर कि इस देश के अंदर अब सरकारों को और मुख्यमंत्रियों को स्कूलों के अंदर जाना पड़ रहा है। इसकी एक भूमिका है कि वो क्यों गए थे। उसके कुछ दिन पहले उनके कुछ अहंकारी मंत्रियों ने या उनके उप–मुख्यमंत्री ने चैलेंज किया कि मनीष सिसोदिया जी उत्तर प्रदेश में आएं हमसे वाद–विवाद करें, डिबेट करें शिक्षा के ऊपर हम उनसे डिबेट करने को तैयार हैं हम उनको अपने अच्छे स्कूल दिखाएंगे। उन्हें लगा कि इनको चुनौती देते हैं ये आना तो है नहीं इन्होंने, उनको क्या पता था, ये पहुंच गए वहां। तो ये लखनऊ पहुंच गए बोले आ जाओ, वो मैदान छोड़कर भाग गए। न तो वो डिबेट में आए ये पूरा दिन बेचारे बैठे रहे वहां पर इनका इंतजार करते रहे वो न तो डिबेट के लिए आए न उनको स्कूल दिखाने आए। तो फिर जब कोई नहीं आया तो ये बोले चलो मैं ही देख आता हूं जब इतनी दूर आया हूं दिल्ली से हवाई जहाज का खर्चा करके लखनऊ आया हूं तो ये वहां पर स्कूल देखने पहुंच गए तो इनको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। अब बताओ भाई ऐसा क्या करने जा रहे थे ये स्कूल देख लेने देते,चलो खराब थे स्कूल कोई बात नहीं देख लेने देते। दिल्ली के उप–मुख्यमंत्री को उत्तर प्रदेश के पुलिस कमिश्नर ने रास्ते में रोक लिया, सारी पुलिस ने इनको स्कूल नहीं देखने दिया। तो उसके बाद बहुत थू–थू हुई उत्तर प्रदेश सरकार की फिर हमें तो क्या दिखाने थे मीडिया ने जा जाकर इनके स्कूल दिखा दिए पूरी दुनिया को दिखा दिए ये हैं इनके स्कूल। यहां तक कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के अपने विधानसभा और अपना जिला, गोरखपुर जिले के हैं न वो गोरखपुर के स्कूलों की बुरी हालत दिखाई मीडिया वालों ने तो तब उनको लगा यार ये स्कूल में तो जाना पड़ेगा तो तब वो अब स्कूल में होकर आए। स्कूल में गए उन्होंने एक दो कक्षाओं में बच्चों से

बातचीत करने की कोशिश की। अध्यक्ष महोदय, पिछले 6 साल के अंदर दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में जो काम हुआ है उसको एक क्रांति के रूप में देखा जा रहा है। अब गरीबों के बच्चों को भी अच्छी शिक्षा मिल रही है। गरीबों के बच्चे फर्राटे की अंग्रेजी बोल रहे हैं। गरीबों के बच्चे इंजीनियर बन रहे हैं डॉक्टर बन रहे हैं। सरकारी स्कूलों के 98 परसेंट नतीजे आ रहे हैं। सरकारी स्कूलों की शानदार बिल्डिंग बन रही है स्वीमिंग पुल बन रहे हैं। अब हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे अमीरों के बच्चों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। तो मन में एक प्रश्न उठना वाजिब है पिछले 70 साल में इस देश के ऊपर 2 पार्टियों ने राज किया। जो काम दिल्ली में 5 साल में हो गया वो 70 साल में क्यों नहीं हुआ? 70 साल के अंदर इन दोनों पार्टियों ने मिलकर शिक्षा व्यवस्था को ठीक क्यों नहीं किया? आज मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि इन दोनों पार्टियों ने मिलकर एक षड़यंत्र के तहत इस देश की शिक्षा व्यवस्था को बदहाली में रखा है जानबूझ कर रखा गया है, इन्होंने जानबूझ कर इस देश के लोगों को गरीब रखा और इस देश के बच्चों को अनपढ़ रखा क्योंकि ये चाहते थे कि अगर ये बच्चे अनपढ़ रहेंगे तो ये बच्चे बेरोजगार रहेंगे। अगर ये बच्चे अनपढ़ रहेंगे तो ये बच्चे पिछड़े रहेंगे। अगर ये बच्चे अनपढ़ रहेंगे तो ये गरीब रहेंगे ताकि अमीरों को अपनी फैक्ट्रियों के लिए और अपने घरों के लिए सस्ते में लेबर मिल सके ताकि इन पॉलीटिकल पार्टियों को जब जब इनको पॉलीटिकल रैलियां करनी हों तो इनको भाड़े के अंदर लोग मिल सकें ताकि इन पॉलीटिकल पार्टियों को सस्ते में अपने पॉलीटिकल कार्यकर्ता मिल सकें। जानबूझ कर ताकि इन पॉलीटिकल पार्टियों को अपना वोट बैंक मिल सके, इनसे प्रश्न पूछने वाला कोई न हो इनको अनपढ़ रखो पूरे इस देश की जनता को अनपढ़ रखो इनको गरीब रखो। जानबूझ कर इस देश के लोगों को गरीब रखा गया, एक षड़यंत्र के तहत रखा गया और ये पिछले 6 साल में हमने साबित कर दिया। पिछले 6 साल के अंदर दिल्ली की जनता ने जो शिक्षा व्यवस्था देखी है, पिछले 6 साल के अंदर दिल्ली के अंदर जो शिक्षा के क्षेत्र के अंदर क्रांति आई है उसने इन दोनों पार्टियों की जड़ें हिला दी हैं। अगर ये 6 साल के अंदर शिक्षा के क्षेत्र में जो विकास हुआ है उसी की वजह से पिछले विधानसभा चुनाव के अंदर कांग्रेस की जीरो सीट आई और अब जो उप चुनाव हुए उसमें बीजेपी की जीरो सीट आई। अगर इस देश के लोगों को पढ़ा दिया तो पूरे

देश के अंदर इन दोनों पार्टियों का यही हाल होगा अगर लोग पढ़ गए लोग अगर पढ़े लिखे हो गए तो पूरे देश के अंदर ये बात फैलेगी। अध्यक्ष महोदय, पिछले 1 साल के अंदर जाहिर तौर पर पूरी दुनिया ने कोरोना की इस महामारी का सामना किया, दिल्ली ने भी किया, बहुत कठिन समय था, इस कठिन समय के दौरान दिल्ली सरकार ने,दिल्ली के लोगों ने, सारी संस्थाओं ने, सारी सरकारों ने प्रधानमंत्री जी ने, गृहमंत्री जी ने, केन्द्र सरकार ने उन सबने सहयोग किया। हमारे सारे भाजपा के विधायकों ने भी बहुत सहयोग किया। सब लोगों के सहयोग से इतनी बड़ी महामारी, कोई एक सरकार या एक आदमी से ठीक नहीं होती। अगर हम आपस में ये विवाद करें कि नहीं–नहीं वो वाली, वो दवाई तो उसने भिजवाई थी, नहीं–नहीं वो बेड तो इसने लगवाया था, सबने काम किया था, इतनी बड़ी महामारी थी, इतना बड़ा काम था, एक आदमी के करे नहीं होता था। और सबसे ज्यादा काम किया डॉक्टरों ने। हम नेता जितनी मर्जी अपनी तारीफ कर ले, ना प्रधानमंत्री जी गये अस्पताल में, ना केजरीवाल गया अस्पताल में, अस्पताल में इलाज तो डॉक्टरों ने ही किया। तो उन सभी का हम, ये सदन पूरे दिल से इस दिल्ली के लोगों का और सभी डॉक्टरों का, नर्सों का, सभी का, जितने फ्रंट लाइन वर्कर्स थे, जितने हैल्थ केयर वर्कर्स थे, हम सबका शुक्रिया अदा करते हैं।

नई–नई पद्धतियां दिल्ली ने पूरी दुनिया को दी। प्लाज्मा थेरेपी दिल्ली ने पूरी दुनिया को दी। होम आइसोलेशन की पूरी पद्धति दिल्ली ने दुनिया को दी। हमने जो एक करोड़ रुपये की राशि ऐलान की, ये भी पूरी दुनिया में अकेले दिल्ली के अंदर ये लागू की गई और कहीं इसको लागू नहीं किया गया। बहुत सारी ऐसी चीजें थी जो केवल दिल्ली के अंदर हुई।

और मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि आज पूरी दुनिया को हमारे देश के वैज्ञानिकों ने दो वैक्सीन दिये हैं। मैं अपने देश के वैज्ञानिकों को बहुत–बहुत इसके लिए बधाई देता हूं कि पूरी दुनिया को, आज पूरी दुनिया हमारे देश के वैज्ञानिकों की तरफ देख रही है। मैं समझता हूं कि जो इतना कठिन दौर था, अब हम लोगों को इस दौर से मुक्ति मिलेगी। लोगों के मन में इस वैक्सीन को लेकर कुछ भ्रांतियां हैं तो मैंने खुद वैक्सीन लगा ली और ठीक ठाक हूं। मेरे माता–पिता ने भी लगवा ली,

वो भी ठीक ठाक हैं। तो मैं दिल्ली के सभी लोगों को अपील करना चाहता हूं कि ये सारी भ्रांतियां दूर... मुझे लगता है कि शोभा तब बढ़ेगी जब हम लोग भी आम लोगों की तरह अस्पताल में जाकर, मैं भी उस दिन लाइन में, मेरे को बताया गया कि जी सवेरे–सवेरे इतने बजे खुल जाती है खिड़की, आप इतने बजे आ जाना, मैं सबसे पहले पहुंच गया था। तो मैं भी एक आम आदमी की तरह गया और इस सदन की शोभा बढ़ेगी अगर हम सारे जने, आम लोगों की तरह अस्पताल में जाकर लगवाएं और हम जब–जब, जो–जो जाकर लगवायें, अपना सोशल मीडिया में खूब प्रचार करें ताकि लोगों के मन में जो भ्रांतियां हैं वो सब दूर हों ताकि लोगों को लगे कि हां ये लोग भी लगवा रहे हैं और हम लोग भी लगवा सकते हैं। तो मैं सभी को अपील करना चाहता हूं लोगों की भ्रांतियां दूर करें और सब लोग ज्यादा से ज्यादा लगवायें।

इस दौरान एक बहुत बड़ी समस्या जो लोगों के सामने आई वो थी रोजगार की जिसमें बहुत सारे लोग बेरोजगार हो गये। पहले तो लॉकडाउन की वजह से धंधे बंद हो गये और उसके बाद जब लॉकडाउन खुला भी तब भी अर्थव्यवस्था को पटरी में आने में काफी समय लग गया। तो हम लोगों ने जो एक रोजगार पोर्टल चालू किया, जॉब पोर्टल चालू किया, जिसमें एक तरफ तो फैक्टरियां थी जिनको आदमी नहीं मिल रहे थे, फैक्टरियां खुल रही थी लेकिन आदमी नहीं मिल रहे थे और दूसरी तरफ लोग थे जिनके पास नौकरी नहीं थी, तो उन दोनों को मिलाने के लिए हमने एक जॉब पोर्टल शुरू किया और वो बहुत सक्सेसफुल रहा और मैं समझता हूं कि दिल्ली के अंदर पिछले एक साल में अकेले उस जॉब पोर्टल की वजह से लाखों बच्चों को नौकरियां मिली हैं इस कोरोना काल के दौरान। तो जिनके घरों में चूल्हें नहीं जल रहे थे उनके लिए ये बहुत अच्छा एक इनिशिएटिव रहा।

अध्यक्ष महोदय, प्रभु श्रीराम हम सबके आराध्य हैं। मैं व्यक्तिगत तौर पर हनुमान जी का भक्त हूं। हनुमान जी, रामचंद्र जी के भक्त हैं। तो उस नाते मैं हनुमान जी और श्रीरामचंद्र जी दोनों का भक्त हूं। प्रभु श्रीराम अयोध्या के राजा थे। उनके शासन काल में कहते है कि सब कुछ बहुत अच्छा था। सब लोग सुखी थे। किसी को किसी प्रकार का दुख नहीं था। हर तरह की सुविधा थी। उसे राम–राज्य कहा गया। राम–राज्य एक अवधारणा है। रामचंद्र जी भगवान थे, हम उनके सामने एक

तुच्छ प्राणी है, हम इंसान है, हम तो कम्पयेर भी नहीं कर सकते। लेकिन उनसे प्रेरणा लेकर हम अगर उनके राम–राज्य की अवधारणा के रास्ते पर चलकर अगर एक genuine कोशिश, सार्थक कोशिश भी कर सकें तो मैं समझता हूं हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। और इस सदन के अंदर बैठे हुए सभी, इस सदन का भी जीवन एक तरह से सार्थक हो जाएगा। तो उन्हीं से प्रेरणा लेकर, प्रभु श्रीराम से प्रेरणा लेकर और उनके राम–राज्य की अवधारणा को दिल्ली के अंदर पूरी साफ सुथरी नीयत से लागू करने के लिए पिछले 6 साल से हम प्रयासरत हैं और हमने एक तरह से 10 अपने मुख्य बिंदु बनाये हैं, 10 प्रिंसिपल्स बनाये हैं, राम–राज्य की अवधारणा से प्रेरणा लेकर। उसमें सबसे पहला बिंदु है कि दिल्ली के अंदर कोई भूखा नहीं सोना चाहिए। इसके लिए सरकार किस्म–किस्म के प्रयास कर रही है । नॉर्मल जिदंगी में भी भूखा नहीं सोना चाहिए, जब शांति हो रही है और कोई अगर महामारी आ जाए, कोई कुछ हो जाए तब भी कोई भूखा नहीं होना चाहिए, उसके लिए किस्म–किस्म की योजनाएं बनाई जाती हैं, किस्म–किस्म की, हमने महामारी के दौरान 1 करोड़ लोगों को सूखा राशन दिया था, 10 लाख लोगों को 2 समय का cooked meal देते थे, हमने बहुत सारी व्यवस्थाएं की उस दौरान। और अब ये जो डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ राशन है, जब घर–घर लोगों को राशन पहुंचायेंगे, ये भी उसी दिशा के अंदर है कि हमारी दिल्ली के अंदर कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोना चाहिए।

दूसरी हर बच्चे को, चाहे वो गरीब का बच्चा हो, कितना ही गरीब का बच्चा क्यों न हो, चाहे भिखारी का बच्चा भी क्यों न हो, उसको शिक्षा मिलनी चाहिए, अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए। ये अभी तक हमारे देश के अंदर जो व्यवस्था थी कि गरीबों के बच्चे सरकारी स्कूल में जाएंगे, अमीरों के बच्चे प्राइवेट स्कूल में जाएंगे, ये व्यवस्था खत्म की हमने दिल्ली के अंदर, अब ऐसी व्यवस्था दिल्ली के अंदर नहीं है। अब चाहे गरीब का बच्चा हो, चाहे अमीर का बच्चा हो, हर बच्चे को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं हम, अच्छी से अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। और अब हर बच्चे को एक जैसे पढ़ने के अवसर मिल रहे हैं और पढ़ने के बाद उनको एक जैसे नौकरी के अवसर मिल रहे हैं।

राम–राज्य की अवधारणा से प्रेरणा लेकर हमारा तीसरा प्रिंसिपिल है कि अगर कोई बीमार हो जाए, तो चाहे वो अमीर हो, चाहे वो गरीब हो, उसको बेस्ट इलाज

मिलना चाहिए। ऐसा नहीं कि अमीर तो चला गया फाइव–स्टार अस्पताल में और गरीब बेचारा धक्के खा रहा है कहीं और। सरकारी अस्पतालों का जो बुरा हाल था उसको ठीक किया। मोहल्ला क्लिनिक बनाये। अब महिला मोहल्ला क्लिनिक बनाने जा रहे हैं। दिल्ली के अंदर रहने वाले हर नागरिक को, चाहे वो अमीर हो, चाहे वो गरीब हो, उनको अच्छी से अच्छी बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिलनी चाहिए।

प्रभु श्रीराम से प्रेरणा लेकर हमारा चौथा प्रिंसिपल है कि चाहे कोई कितना भी गरीब क्यूं न हो, कई राज्य ऐसे हैं जिनमें 10 रूपये यूनिट बिजली मिलती है, 7 रूपये यूनिट बिजली मिलती है। एक गरीब आदमी तो बेचारा बल्ब नहीं जला सकता। आज बिजली जो है ये luxuary नहीं है, आज बिजली जो है वो necessity है, वो जरूरत है, मूलभूत जरूरत है। तो उन राज्यों के अंदर एक गरीब आदमी जियेगा कैसे बिना बिजली के? तो हमने तय किया भई 200 यूनिट बिजली एक आदमी को जीने के लिए जरूरी है। हमने 200 यूनिट बिजली तक माफ कर दिया। तो आज दिल्ली दुनिया का, देश का नहीं, दुनिया का अकेला राज्य है, दुनिया का अकेला शहर है जहां पर लोगों को 24 घंटे बिजली मिलती है, फ्री में बिजली मिलती है, गरीबों को भी मिलती है, अमीरों को भी मिलती है।

उसी तरह से पांचवां हमारा सिद्धांत है पानी। आजकल इन्होंने पानी इतना महंगा कर दिया, बताओ, कि पहले जमाने में कहते थे पानी पिलाने से पुण्य होता है, आजकल पानी पिलाने के लिए सरकारें पैसे लेती है कि पैसे दो, नहीं तो पानी नहीं देंगे। अब जिसके पास, गरीब के पास पैसा नहीं है वो पानी नहीं पियेगा? पानी तो पियेगा। तुम नहीं दोगे तो चोरी करके पियेगा, फिर उसको पकड़ कर जेल में डालोगे तुम, तो ये तो सही नहीं है। तो हमने प्रिंसिपल बनाया, हमारा पांचवां प्रिंसिपल है कि पानी मिलना चाहिए। चाहे गरीब हो, चाहे अमीर हो, 20 हजार लीटर पानी...

छठा है रोजगार। राम–राज्य की अवधारणा के अंदर छठा हमने सिद्धांत बनाया कि हर हाथ को काम मिलना चाहिए। इसके ऊपर भी सरकार तरह–तरह से काम कर रही है। अलग–अलग तरीके से काम कर रही है। स्टार्टअप पॉलिसी बनाई गई है, जॉब पोर्टल्स बनाये गये हैं, रोजगार मेले लगाये गये हैं, किस्म–किस्म से रोजगार

देने का प्रयास कर रही है। मैं ये नहीं कह रहा हम ये सब कुछ अचीव कर लिया। लेकिन जैसा मैंने कहा कि ये एक अवधारणा है राम–राज्य की, जिसके ऊपर हम चलने की कोशिश कर रहे हैं, अच्छी साफ सुथरी नीयत से कोशिश कर रहे हैं, ये ही इम्पॉर्टेंट है।

सातवां है मकान। हर आदमी के सर पर छत होनी चाहिए। इसके लिए हमारी सरकार पूरी कोशिश कर रही है। खासकर गरीब लोगों के लिए, जो झुग्गी–झोपड़ी में रह रहे हैं, जो आज बड़ी कठिन परिस्थितियों के अंदर रह रहे हैं, जो हम नहीं कह सकते कि इज्जत, वो पूरा जो एन्वायरमेंट है, जो माहौल है वो अच्छा माहौल नहीं है। तो हम चाहते हैं कि उनको इज्जत का माहौल मिले, उनके लिए पक्के मकान बनाकर दिए जा रहे हैं, कई जगह मकान बन गये हैं और कई जगह मकान बनाकर दिए जा रहे हैं।

आठवां सिद्धांत है महिलाओं की सुरक्षा। जिस राज्य के अंदर, जिस क्षेत्र के अंदर महिलाएं सुरक्षित नहीं है, महिलाओं की इज्जत नहीं है वो समाज कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। मैं समझता हूं कि पुलिस हमारे अंडर में नहीं है लेकिन इसका रोना रोने से कोई फायदा नहीं है, जिनके अंडर में है वो अपना काम करेंगे। हमारे हाथ में जो कुछ है हम कोशिश कर रहे हैं। हमारे हाथ में था सीसीटीवी कैमरे लगाना, हमारे हाथ में है डार्क स्पॉट्स को लाइट्स लगाना, हमारे हाथ में था बसों के अंदर सीसीटीवी लगाना, बसों के अंदर मार्शल लगाना, बसों में यात्रा फ्री करना। महिलाओं को सम्मान और महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए हमारी सरकार पूरी कोशिश कर रही है।

हमारा नौवां सिद्धांत है बुजुर्गों को सम्मान। जो समाज अपने बुजुर्गों को सम्मान नहीं देता उस समाज का अंत निश्चित है, वो समाज आगे बढ़ ही नहीं सकता। तो हमने अपने बुजुर्गों को सम्मान देने के लिए तरह–तरह के कदम उठाये लेकिन सबसे अहम कदम उठाया कि हम अपने बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा कराकर ला रहे हैं। जगह–जगह तीर्थ यात्रा कराते और जब वो लौटते हैं, मैं खुद मिला हूं उनसे, जो ये उनका आखिरी फेज है जिदंगी का और ये आखिरी फेज हमारे धर्म–ग्रंथों में भी

लिखा है कि आदमी अपनी जिदंगी का आखिरी फेज भगवान में लीन होकर बिताना चाहता है, तो वो जब लौटकर आते हैं उन तीर्थ स्थानों से तो वो इतने खुश होते हैं, इतने खुश होते हैं। अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद अयोध्या के अंदर अब एक भव्य मंदिर तो बनने जा रहा है। मैं दिल्ली के लोगों को, दिल्ली के हमारे सारे बुजुर्गों को कहना चाहता हूं कि एक बार मंदिर बन जाए, आप सबको अयोध्या के फ्री में दर्शन करा कर लाउंगा

और हमारा दसवां सिद्धांत है कि आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार में सब बराबर हैं, सभी जाति के लोग, सभी धर्मों के लोग, चाहे किसी भी धर्म के हों, चाहे हिंदू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे सिख हों, चाहे ईसाई हों, किसी भी जाति के हों, चाहे ब्राह्मण हों, चाहे ठाकुर हों, चाहे वाल्मीकी समाज के हों, चाहे जाटव समाज के हों, सभी जाति, सभी धर्म, जैसा मैंने कहा कि राम–राज्य की परिकल्पना में श्रीरामचंद्र जी ने भीलनी के झूठे बेर खाये थे, उनके जीवन से अगर हमें प्रेरणा लेनी है तो उनके राज्य के अंदर किसी तरह का भेदभाव नहीं होता था कि ये ऐसा है, ये अमीर है, ये गरीब है, सबको बराबर तरीके से, भाईचारे के साथ सब लोग रहें, शांतिपूर्वक सब लोग रहें, शांतिपूर्वक अपना निर्वाह करें, ऐसी हमारी पूरी कोशिश रहती है।

इसी के साथ मैं इस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

माननीय अध्यक्ष: अब श्री गोपाल राय जी, माननीय विकास मंत्री द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव सदन के सामने है।... माननीय गोपाल जी, प्रस्ताव पढ़ दें।

माननीय विकास मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय उप–राज्यपाल महोदय द्वारा विधान सभा में दिए गए अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव सदन के सम्मुख है।

माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है,

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें,

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (मननीय नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष जी, मैं आपसे एक आग्रह कर रहा हूं कि हमारे भारतीय वैज्ञानिकों ने 2 वैक्सीन तैयार की हैं भारतीय....

माननीय अध्यक्ष: बोला तो मुख्यमंत्री ने, बोला।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: और....

माननीय अध्यक्ष: मुख्यमंत्री जी ने

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: प्रधानमंत्री जी के प्रति भी जरूर धन्यवाद करना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष: माननीय मुख्यमंत्री जी ने बोल दिया।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: चलिए, जितनी सोच है उतनी बात।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: चलिए, एक सेकंड, भई अब देखिए, अब बीच में नहीं, प्लीज। ये प्रस्ताव सदन के सामने है,

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जी, हाँ पक्ष जीता,

अब प्रस्ताव पारित हुआ।

माननीय उप–राज्यपाल महोदय को इसकी सूचना भिजवा दी जाएगी। अब माननीय सदस्यों से प्रार्थना है कि लंच करके 3.00 बजे हम पुनः...

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बिल्कुल, लंच है बराबर, चिंता मत करिए भई, यहां उपस्थित होंगे। बहुत–बहुत धन्यवाद। 3.00 बजे सदन स्थगित किया जाता है, 3.00 बजे तक।

(सदन की कार्यवाही 10 मार्च, 2021 अपराह्न 3.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

सदन पुनः अपराह्न 3.05 बजे पर समवेत् हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सुश्री राखी बिरला जी बढ़ती महंगाई के कारण दिल्ली के लोगों को हो रही कठिनाई के संबंध में चर्चा प्रारंभ करेंगी।

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः माननीय अध्यक्ष जी, जो डीटीसी की बात की थी उसमें आज ....

माननीय अध्यक्षः आप लिख के मुझे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई एक व्यक्ति बोलेगा तो मुझे समझाने में आसानी होगी। बाजपेयी जी ने बात रखी, मैंने हां भरी थी मैं चर्चा कराउंगा, आज की।

श्री विजेंद्र गुप्ताः जवाब चाहिए, चर्चा नहीं चाहिए।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप चर्चा से भाग क्यों रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी ऐसे नहीं चलेगा। आपने 54 में चर्चा मांगी है। आपने 54 में चर्चा मांगी है। आपने 54 में चर्चा मांगी थी। आप सदन को बेवकूफ बनाएंगे। आपने चर्चा मांगी थी 54 में। आपने कौन सा नोटिस दिया था मुझे? नहीं, आपने जवाब नहीं, 54 में चर्चा मांगी थी मुझसे। 54 में आपने चर्चा मांगी थी मुझसे। आप हर बात को ट्विस्ट करेंगे। आपने नियम 54 के अन्तर्गत चर्चा मुझसे मांगी थी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, चर्चा नहीं जवाब दीजिए।

माननीय अध्यक्षः आपने 54 में क्या लिख कर दिया हुआ है 54 में? आप बाजपेयी जी समझ लीजिए एक बार।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ऐसा है बाजपेयी जी, मुझे भी अगर आप लोगों को, चलिए आप सुनना नहीं चाहते, आप सुनना नहीं चाहते छोड़ दीजिए। बिरला जी चर्चा आरंभ करिए आप। चर्चा आरंभ करिए।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरलाः धन्यवाद अध्यक्ष जी। आपने।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप चालू करिए, आप मत सुनिए, आप चालू करिए। आपके 70 लोग हैं उनकी आवाज दब जाएगी, आपकी नहीं। आप चालू करिए।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरलाः अध्यक्ष जी धन्यवाद, आपने अति गंभीर मुद्दे पर मुझे बोलने का मौका दिया।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: अध्यक्ष जी, इस सदन के अंदर आज जिस मुद्दे को मैं उठाने जा रही हूं वो मुद्दा।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: दिल्ली के लोगों के लिए, दिल्ली की महिलाओं के लिए और दिल्ली की जनता के लिए अति महत्वपूर्ण मुद्दा है। अध्यक्ष जी, आए दिन हम लोग देखते हैं कि केन्द्र सरकार की गलत नीतियों की वजह से, केन्द्र सरकार के फेल्योर की वजह से आए दिन चाहे वो सब्जियां हों, फल हों, पेट्रोल हो, डीजल हो, रसोई गैस हो, रेल का भाड़ा हो, प्लेन का भाड़ा हो, सब में दिनों–दिन महंगाई बढ़ती जा रही है और महंगाई आसमान छू रही है।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: अरे शांत हो जाओ भाइयों।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: शांत हो जाओ। अध्यक्ष जी, इसे शांत करा लो भई।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: महंगाई मुद्दा नहीं है आप लोगों के लिए?

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरला: आप लोगों के लिए महंगाई मुद्दा नहीं है?

माननीय अध्यक्ष: मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं या तो नियम को समझ लें एक बार।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: कौन से नियम के, एक सेकिंड कौन से नियम के तहत जवाब चाहिए? कौन से नियम के तहत? अरे कोई नियम तो बताओ मुझे कौन से नियम के

तहत जवाब चाहिए? कोई नियम तो बताओ मुझे। नियम कुछ नहीं होता?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: नहीं नियम कुछ नहीं होता है? मुझे कोई नियम तो बताइए किस नियम के तहत जवाब चाहिए? मुझे नियम बताओ न।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: ऐसा है मैं उसी नियम की बात कर रहा हूं मैंने मंगवा लिया है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: मुझे एक बार अपनी बात रखने देंगे? एक बार मेरी बात सुनें। और विजेन्द्र जी कह रहे हैं इनकी सुनते क्यों हो। वो इशारों से कह रहे हैं कि मुंह छुपा के कह रहे हैं कि इनकी सुनते क्यों हो। अब उनको मालूम है कमजोरी।

सुश्री राखी बिरला: इनको तो बिल्कुल मैनर्स ही नहीं है बताओ।

माननीय अध्यक्ष: कमजोरी कहां है उन्हें मालूम है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: सरकार बिल्कुल नहीं बच रही।

सुश्री राखी बिरला: देश का समय बर्बाद कर दिया।

माननीय अध्यक्ष: कोई सरकार नहीं बच रही। न सरकार बचना चाहती है। और मैं किस नियम के तहत उनसे जवाब मांगू, नियम तो दो मुझे?

सुश्री राखी बिरला: अध्यक्ष जी इन्हें बाहर कर दीजिए। इन्हें मार्शल आउट कर दीजिए। इन्हें मार्शल आउट कर दीजिए, इन्हें कोई काम धंधा नहीं है। इन्हें कोई काम धंधा नहीं है। ये सौ रूपये की ओर पहुंचने वाला है पैट्रोल, उस के उपर नहीं बोलेंगे। पैट्रोल की कीमतों के उपर नहीं बोलोगे, डीजल के उपर नहीं बोलोगे, एलपीजी के

उपर नहीं बोलोगे, गैस के दामों पर नहीं बोलोगे, महंगाई पर नहीं बोलोगे, महंगाई पर नहीं बोलोगे। महंगाई पर नहीं बोलोगे।

माननीय अध्यक्षः मैं सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं सदन की कार्यवाही चलने दें।

सुश्री राखी बिरलाः महंगाई के उपर नहीं बोलोगे। फालतू में शोर मचाओगे। फालतू का शोर मचाओगे। फ्री की अटेंशन, सस्ती पॉलिटिक्स करोगे। सस्ती पॉलिटिक्स करने आते हैं भाजपा के लोग, भाजपा के लोगों को झूठी और सस्ती पॉलिटिक्स करनी आती है। सदन को गुमराह करने आते हैं, गुमराह करने आते हैं सदन को। महंगाई के उपर बात करो।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरलाः महंगाई पर, पैट्रोल की बढ़ती कीमतों पर। डीजल पर, एलपीजी सिलेंडर पर, किराए पर रेल के किराए पर, हवाई जहाज के किराए पर, सब्जियों के दामों पर, तेल के दामों पर जवाब दें। मोदी सरकार जवाब दे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः राखी जी, एक सेकिंड। राखी जी, राखी जी, एक सेकिंड। अभी मोहन सिंह बिष्ट जी, एक बार मेरी बात सुन लीजिए। पहले मेरी बात सुन लीजिए। फिर उसके बाद आप जो कहेंगे वो मैं करूंगा। एक सेकिंड मेरी बात सुन लीजिए। 08.03.2022 को नियम 54 के अन्तर्गत ये नोटिस मुझे मिला। उस दिन एलजी का अभिभाषण था। मैंने उस दिन कहा था एक सेकिंड प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के। अरे भाई चलिए 8 तारीख, 8 को लगाया है, हां और 9 को था। मैं वही बता रहा हूं मैं पढ़ रहा हूं पूरा। प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम 54 के अन्तर्गत मैं दिनांक 09.03.2021 को मैं पूरा पढ़ के सुना रहा हूं। "अविलम्बीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर परिवहन मंत्री का ध्यान दिलाने और मंत्री महोदय से उस पर वक्तव्य देने की प्रार्थना करने की सूचना देता हूं। दिल्ली सरकार के दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा खरीदी गयी 1000 नई सीएनजी चालित लो फ्लोर बसों तथा उनकी देखरेख के लिए किए गए वार्षिक अनुबंध में भारी घोटाले की ओर सदन का ध्यानाकर्षण", ठीक है, ये 9 को नहीं लगा। यह आज सवेरे आप की ओर

से दोबारा आना चाहिए था।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: आज ये नियम 54 में आपकी ओर से आना चाहिए था। नहीं फिर ऐसे नहीं चलेगा। नहीं ऐसे मैं गलत परम्परा नहीं, गलत परम्परा नहीं डालूंगा मैं। नहीं उंगली उठाकर बात नहीं करिए। गलत परम्परा मैं नहीं डालूंगा। गलत परम्परा मैं नहीं डालूंगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: आपने बोल लिया न जी? देखिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: भई मोहन सिंह जी, मैंने आपकी बात सुन ली। मैं 3 दिन से सुन रहा हूं। मैं अभी कोई अलाउ नहीं कर रहा हूं। हां मैं कोई अलाउ नहीं कर रहा हूं। बैठिए प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बैठ जाइए, बैठ जाइए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बैठिए आप। अगर आप इस ढंग से।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: मोहन सिंह जी, अगर ये इस ढंग से बात करेंगे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: अब आपसे प्रार्थना है, बैठिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: साढे 3 बजे तक के लिए मैं सदन स्थगित करता हूं साढे 3 बजे तक के लिए।

सदन पुनः अपराह्न 3.31बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सुश्री राखी बिरला जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः भाई साहब भ्रष्टाचार पर चर्चा कराओ।

माननीय अध्यक्षः मैं बोल चुका हूं, बता चुका हूं, फिर आपकी इच्छा है।

.........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः देखिए मैं 15 मिनट मैंने लगाया है आप लोगों के साथ बैठकर, प्यार से लगाया है और मैंने कहा है।

..........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः भई देखिए मुझे, मैं रिक्वैस्ट कर रहा हूं, आप राइटिंग में मुझे आज दे दीजिए मैं कल इसपर चर्चा करवा दूंगा। मंत्री जी अब है नहीं यहां।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, ये भ्रष्टाचार का एक बड़ा मामला है।

माननीय अध्यक्षः अरे भई विजेन्द्र जी आज और कल में क्या हो जाएगा, नहीं आज और कल में कुछ हो रहा है।

.............व्यवधान.........

श्री विजेंद्र गुप्ताः इसी तरह फिर साढ़े तीन महीने बाद, बताएं साढ़े तीन महीने क्यों रोके थे, ये मेरे पास सारे डॉक्यूमेंट है, मिनट्स है और ये सारे इसमें मुद्दे है। यह किस तरह से एक कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए, ये शर्तें रख दी गई।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी मैं अब अलाउ नहीं कर रहा हूं।

.........व्यवधान.........

श्री विजेंद्र गुप्ताः मुख्यमंत्री जी रिप्लाई करें।

माननीय अध्यक्षः मैंने बोला ना कल बुलाएंगे। देखिए मैं रिक्वैस्ट कर रहा हूं, फाइनली रिक्वैस्ट कर रहा हूं।

........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र गुप्ता जी मैं आखिरी बार रिक्वैस्ट कर रहा हूं, कृपया बैठ जाइए। चेयर का सम्मान करिए बैठिए।

.........व्यवधान.........

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, जिस तरह से 3500 करोड़ का भ्रष्टाचार हुआा।

माननीय अध्यक्षः मैं विजेंद्र गुप्ता जी से आखिरी बार प्रार्थना कर रहा हूं बैठ जाएं। विजेंद्र जी बैठिए, विजेंद्र जी बैठिए। मैंने कहा था कल इसको लूंगा, कल लूंगा बैठिए। हॉ बोल आप रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः हॉ मैं बोलूंगा, अब भी बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः हॉ तो मैंने कहा है बैठिए।

श्री जितेंद्र महाजनः माननीय अध्यक्ष महोदय मंत्री जी दिल्ली में ही हैं।

............व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी देखिए मुझे मजबूरी में कदम उठाना पड़ेगा, मैं बिल्कुल भी नहीं उठाना चाहता। सदन का समय खराब हो रहा है, मैं रिक्वैस्ट कर रहा हूं।

............व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः महाजन जी मैं।

..........व्यवधान.........

श्री जितेंद्र महाजनः हम सिर्फ जवाब मांग रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः अरे भई मैंने कहा ना कल जवाब दिलवाएंगे आपको। आप सुन ही नहीं रहे हैं बात को, आप बात को मानने के लिए ही तैयार नहीं। आप तो वो बात कह रहे हैं।

...........व्यवधान.........

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः बुलाइए मंत्री जी को।

माननीय अध्यक्षः मैं आखिरी बार प्रार्थना कर रहा हूं, बैठ जाएं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः बहुत गम्भीर मामला है इसको आप अन्यथा ना लें।

माननीय अध्यक्षः नहीं मैं कोई अन्यथा नहीं ले रहा हूं, मैं बिल्कुल ठीक बोल रहा हूं और सदन कैसे चलाया जाता है मैं समझ रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः केजरीवाल सरकार भ्रष्टाचार।

माननीय अध्यक्षः मैं विजेंद्र गुप्ता जी से प्रार्थना कर रहा हूं, विजेंद्र गुप्ता जी आधा घंटे के लिए सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेंगे, प्लीज बाहर चले जाएं, प्लीज बाहर चले जाएं । मैंने बहुत मजबूरी में ये कदम उठाया है। नहीं आप जाना चाहते हैं जाएं सब।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः नहीं मैंने रिक्वैस्ट की है, विजेंद्र जी आप जाइए प्लीज विजेंद्र जी। विजेंद्र जी आप सदन की कार्यवाही से बाहर चले जाएं, सदन से बाहर चले जाएं प्लीज, मैं रिक्वैस्ट कर रहा हूं। विजेंद्र गुप्ता जी। देखिए मुझको मजबूरन, आप मजबूर कर रहे हैं, मजबूर कर रहे हैं। मार्शल्स विजेंद्र जी को कृपया बाहर करें।

..........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः मैं महाजन जी, मोहन सिंह बिष्ट जी से प्रार्थना कर रहा हूं कि बैठें। सदन में बैठे।

............व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः बिष्ट जी, मोहन सिंह बिष्ट जी और महाजन जी, मार्शल्स दोनों को बाहर करें। दोनों को महाजन जी को और बिष्ट जी को दोनों को बाहर करो, चलिए, नहीं—नहीं बिल्कुल नहीं मैं कुछ नहीं सुनूंगा मैंने अंदर बुलाया, मान—सम्मान से बुला कर बात की।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः नहीं, नहीं ये क्या कर रहे हैं? इनको बोलो, इनको समझाओ इनको, नहीं उसको नहीं लेकर जाएंगे अभी, गलत हो जाएगा। अरे मोहन सिंह बिष्ट को लेकर जाएं। ये महाजन जी को लेकर जाएं। महाजन जी ये तरीका ठीक नहीं है आपका। महाजन जी को लेकर जाएं।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः मैं बाजपेयी जी, अभय जी, ओमप्रकाश जी से प्रार्थना कर रहा हूं बैठ जाएं। मैं फिर प्रार्थना कर रहा हूं बैठ जाएं। तीनों से प्रार्थना कर रहा हूं बैठे। मार्शल्स, अनिल बाजपेयी जी उधर लास्ट में अभय जी, ओमप्रकाश जी। ये ओम प्रकाश जी को भी लीजिए।

..........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः भ्रष्टाचारियों को सब जगह भ्रष्टाचार दिखाई देता है।

...........व्यवधान.........

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी आप बैठिए अच्छा लगेगा हमें, धन्यवाद। सुश्री राखी बिरला जी।

सुश्री राखी बिरलाः धन्यवाद अध्यक्ष जी, ये बहुत दुखद है कि इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर विपक्ष के साथियों का इस तरीके से हो—हल्ला करना और सिर्फ सदन का समय खराब करना ये बेहद दुखद है। लेकिन आज अध्यक्ष जी आपका बहुत—बहुत

धन्यवाद आपने रूल–55 के तहत इतने महत्पवूर्ण विषय पर मुझे यहां पर अपनी बात रखने का मौका दिया। विषय इस प्रकार है कि दिल्ली देश की राजधानी में रहने वाला चाहे गरीब व्यक्ति हो, मध्यमवर्गीय हो या अमीर व्यक्ति हो, हर कोई इससे दो–चार हो रहा है क्योंकि देश के अंदर जिस प्रकार से मंहगाई अपने पैर पसार रही है उससे आम जन–जीवन किस प्रकार से बदहाल हो रहा है। किस प्रकार से सड़क पर चलने वाली गाड़ियों से लेकर रसोई में चलने वाली गैस और उस गैस पर पकने वाला खाना, सब पर इसका असर पड़ रहा है। अपने वक्तव्य को शुरू करने से पहले मैं कुछ लाईनें कहना चाहती हूं।

मंहगाई हर द्वार पर चला रही है तलवार,

मंहगाई हर द्वार पर चला रही है तलवार,

हर व्यक्ति घायल हुआ खा कर इसकी मार,

क्यों देश में अब है मोदी जी की सरकार

क्योंकि देश में अब है, झोला–छापों की और जुमलेबाजों की सरकार।

ये वही जुमलेबाज लोग हैं अध्यक्ष जी जो साल 2014 के अंदर जब गुजरात से अपना झोला उठाकर चले थे तो इन्होंने एक नारा दिया था 'बहुत हुई मंहगाई की मार, अबकी बार मोदी सरकार'। अब स्थिति क्या है, अब स्थिति ये है कि रसोई गैस हो आटा, चावल, चीनी दाल हो। रेल का भाड़ा हो, हवाई जहाज का भाड़ा हो, डीजल पेट्रोल की कीमतें हों, आए दिन कोई ना कोई चीज नई–नई कीमतों को तय करती है और वो कीमतें आसमान को छूती हुई नजर आ रही है। अध्यक्ष जी, दिल्ली देश की राजधानी और इस देश की राजधानी के एक विधान सभा का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला और इस विधान सभा में जब जनता से बात करते हैं, खासतौर पर एक महिला होने के नाते महिलाओं के बेहद करीब हैं और महिलाओं के हर सुख दुख की बातें हम तक पहुंच जाती है, वो खुद अपनी बातों को हम तक बहुत आम साधारण शब्दों में पहुंचाती हैं, अपने सुख दुख को हमारे साथ साझा करती है और आज दिल्ली की हर महिला ये कहते हुए सुनाई देती है कि 'सखी संईया तो खूब ही कमात है,

लेकिन मंहगाई डायन खाये जात है'। अध्यक्ष जी, ये बात मुझे इस लिए कहनी पड़ रही है क्योंकि आप देखिए आउटकम बजट पेश किया माननीय उप—मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी ने और अपना बजट जब उन्होंने सदन के सम्मुख पेश किया तो उन्होंने अपने आउटकम बजट के अंदर और एल. जी. के अभिभाषण के अंदर भी एक बहुत अच्छी चीज उन्होंने रखी कि देश का राज्य दिल्ली एक मात्र ऐसा राज्य है, जहां पर प्रति व्यक्ति आय दिल्ली में 03 लाख 54 हजार 04 रूपये है जो कि देश में सबसे ज्यादा है। उसके साथ दिल्ली के अंदर अरविंद केजरीवाल जी की सरकार के नेतृत्व में मिनिमम वेजिज जो एक मजदूर को मिलने वाली मिनिमम आय है जो मिनिमम उसका वेतन है वो भी देश के अंदर सर्वाधिक कहीं मिल रहा है तो वो दिल्ली के अंदर मिल रहा है, अरविंद केजरीवाल की सरकार के नेतृत्व में मिल रहा है। लेकिन दुर्भाग्यवश मिनिमम वेजिज बढ़ाने के बाद प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के बावजूद आर्थिक रूप से हम अपने दिल्ली के लोगों को मजबूत करने हेतु उनके बिजली के बिल को जीरो करते हैं, महिलाओं का डीटीसी का किराया हम लोग माफ करते हैं, उनके स्वास्थय की सेवाओं के खर्च को बिल्कुल हम लोग जीरो कर देते हैं। उनको बेहतर शिक्षा देने की हमारी भरपूर कोशिश है और दे भी रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद मेरी दिल्ली के लोगों को जिस तरह से आर्थिक तौर पर मजबूत होना चाहिए या जो उनकी जहां पूंजी बचनी चाहिए, जो उनकी बचत होनी चाहिए उस पर अगर कोई डाका डाल रहा है हर दिन, हर दूसरे दिन, हर तीसरे दिन, हर दूसरे पहर तो वो और कोई नहीं केन्द्र में बैठी हुई भाजपा की मोदी सरकार है। ये वही मोदी सरकार है जो 2014 के अंदर मंहगाई का नारा देते हुए आती है और अपनी इस बात को कहती है कि जब हम विपक्ष में थे तो हमने मंहगाई पर बड़े सवाल किये। जब हम विपक्ष में थे तो मंहगाई पर हमने बड़े सवाल किये और जब हम सत्ता में आए तो हमने मंहगाई की जिम्मेदारी भी विपक्ष के सर मढ़ दी। ऐसे हमारे मोदी जी सरकार चलाते हैं। साल 2014 के अंदर मंहगाई का नारा लेकर आए, उस मंहगाई का नारा जिस मंहगाई की बदौलत एलपीजी सिलेन्डर 405 रूपये का हुआ करता था और आज मोदी जी के आशीर्वाद से भाजपा के आशीर्वाद से मंहगाई इतनी कम हो गई। इन जुमलेबाजों की गणित इतनी महान हो गई कि जो 405 रूपये का हमारा एलपीजी सिलेन्डर हुआ करता था वो आज इनके आशीर्वाद से 819 रूपये का बिक रहा है। ये इन्होंने मंहगाई

के लिए नए परचम और नए आयाम इन्होंने लिखे हैं कि महज सात साल के अंदर किस प्रकार दोगुने से भी ज्यादा एलपीजी सिलेन्डर के रेट हो गए ये जनता देख रही है। आये दिन पेट्रोल की कीमतें बढ़ रही हैं। आये दिन डीजल के दाम बढ़ रहे हैं और पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ने से निश्चित तौर पर साग, सब्जी, दूध, पानी सबका रेट इस देश के अंदर बढ़ता जा रहा है। ये बहुत अजीब से लोग है 2014 के अंदर मंहगाई के नारे पर सत्ता में आकर जो दाल 70 से 80 रूपये हुआ करती थी वो दाल डेढ़ सौ से 180 रूपये की बिक रही है और हर एक महिला हर एक गृहणी के रसोई का जो गणित है जो हिसाब किताब है वो इनकी इन हरकतों की वजह से या इनके फेलियर की वजह से, इनके इस निकम्मेपन की वजह से बिल्कुल खराब होता जा रहा है। चाहे वो तेल की कीमतें हों, जो तेल 90 से 100 रूपये लीटर मिलता था आज वो डेढ़ सौ से 200 रूपये लीटर मिल रहा है। पेट्रोल की कीमतें डीजल की कीमतें किसी से छिपी नहीं है, आसमान को छू रही है। अध्यक्ष जी, आप और हम जब जनता के बीच में जाते हैं और आम साधारण लोगों से बात करते हैं, जो बहुत निचला तबका होता है उनसे पूछते हैं कैसा चल रहा है तो वो कहते हैं चल रही है दाल रोटी, आशीर्वाद है भगवान का। लेकिन आज वो दाल, रोटी प्याज भी गरीब जनता की थाली से गायब होती जा रही है सिर्फ और सिर्फ इन भाजपा वालों के आशीर्वाद से क्योंकि इनकी जो गलत नीतियां हैं, कुनीतियां हैं उनकी वजह से आप देखेंगे मंहगाई अपनी चरम सीमा पर है। आखिरी पंक्ति में खड़े होने वाला व्यक्ति आखिरी पंक्ति में रहने वाले लोग अपनी दो वक्त की रोटी को कमाने में उसे जुटाने में भी असमर्थ होते जा रहे हैं क्योंकि बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर है, अज्ञानता अपनी चरम सीमा पर है क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में ये कोई काम नहीं कर रहे हैं, रोजगार देने के लिए कोई काम नहीं कर रहे हैं, मंहगाई चारो ओर मुंह बाये खड़ी है। अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ इतना कहना चाहती हूं कि जब मंहगाई के ऊपर इन लोगों से बात करें, इन लोगों से चर्चा करें तो ये बहुत ही अजीब सा कुतर्क देते हैं। जैसे कि इनके वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जी को ले लीजिए। जब उनसे सदन में ये पूछा गया कि प्याज की कीमतें इतनी क्यूं बढ़ रही हैं इस पर कैसे लगाम लगाई जाएगी तो उन्होंने बहुत साधारण और बहुत ही बिना सोचे समझे इस बात का जवाब दिया कि मेरे घर में तो प्याज का उपयोग ही नहीं होता तो मुझे पता ही नहीं कि

प्याज की कीमतें क्या हैं। उसी कड़ी में जब इनके पेट्रोलियम मंत्री जी से पूछा जाता है कि रसोई गैस की कीमतें, डीजल की कीमतें, पेट्रोल की कीमतें क्यों बढ़ रही हैं, इस पर सरकार का क्या फैसला है, सरकार की इस पर क्या रणनीति है तो उनके भी बहुत अजीब और गरीब बयान होते हैं कि सर्दियों की वजह से मांग ज्यादा है, खपत ज्यादा है इसलिए मंहगाई बढ़ रही है। अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ ये कहना चाहती हूं कि हम दिल्ली में रहने वाले लोग खासकर महिलाएं दिल्ली की सरकार की नीतियों से सफल योजनाओं से जो हमारे महीने का बजट बनता है वो पहले सुचारू रूप से हमें कहीं और लगाने में मदद करता था। लेकिन जिस दिन से ये मंहगाई बढ़ती जा रही है हम लोगों को और जनता को दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिल पा रही है। चाहे रेल का किराया हो। घर से रेलवे स्टेशन जाने का बीस रूपया का भाडा होता है रेलवे स्टेशन के अंदर, प्लेटफार्म के अंदर जाने का इन्होंने वेटिंग चार्ज 50 रूपये कर दिया है। इनकी नीतियां बहुत ही अजीबो–गरीब है। इनका सरकार चलाने का तौर तरीका बेहद ही अजीबो–गरीब अंदाज में है और मैं सिर्फ दो लाईनें कहूंगी अध्यक्ष जी क्योंकि बहुत कुछ कहना है और मेरे बहुत से साथी भी अभी इस पर अपनी बात रखेंगे कि हम जिस पृष्ठभूमि से उठते हैं, जहां से हम लोग आते हैं कम से कम जब हम सत्ता में आ जाए या एक ऊंचे पद पर पहुंच जाए तो कम से कम हमें उस वर्ग का ध्यान रखना चाहिए, उस वर्ग को ध्यान में रखते हुए उस समुदाय को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी पॉलिसी का निर्माण करना चाहिए। इसका प्रमाण पिछले छः सालों से अरविंद केजरीवाल जी की सरकार दे रही है। क्योंकि यहां बैठे हुए लगभग आधे से ज्यादा विधायक गरीब तबके के परिवारों से आते हैं। ऐसे परिवारों से आते हैं...... जिन्होंने संघर्ष किया है और जिन्होंने शिक्षा का अभाव भी देखा है। जिन्होंने बिगड़ती हुई स्वास्थ्य सेवाओं में को भी देखा है और जिन्होंने जो सरकारें है उनके बहुत ही बुरे रवैये को भी देखा है और जब वो सरकार में आए तो उन तमाम कमियों को उन तमाम गलत नीतियों को खत्म करते हुए एक ऐसा विश्वास जनता को देने की कोशिश की कि आप हम लोगों के बीच में से ही हैं तो हमें पता है सरकारी संस्थानों की सेवाओं का दुरूस्त होना कितना जरूरी है। तो मैं इसी बात को बताते हुए कि हम जिन समुदाय से आते हैं, जिस व्यवस्था से हम आते हैं, हमें उनका ख्याल रखना चाहिए। अब इस देश के प्रधानमंत्री जी चाय बेचते थे, वो चाय

बेचते–बेचते इस देश के प्रधानमंत्री बन गए लेकिन उन्होंने पिछले छह सालों के अंदर इस चाय का स्वाद भी बेस्वाद कर दिया क्योंकि चाय में चीनी की आवश्यकता होती है। चीनी जो साल 2014–15 के अंदर बीस से लेकर 25 रूपये किलो मिलती थी। आज वही चीनी 45 से लेकर 50 रूपये किलो मिल रही है। उसके साथ–साथ चाय को बनाने के लिए दूध की भी बेहद आवश्यकता होती है तो जो दूध छह से सात साल पहले चालीस से 45 रूपये किलो मिला करता था वही दूध आज 55 से साठ रूपये किलो पहुंच रहा है तो इन्होंने तो चाय वालों को भी नहीं बख्शा। अपने प्रोफेशन और अपने व्यवसाय, अपने समुदाय को भी नहीं बख्शा तो ऐसी सरकारों को अस्तित्व में रहने की कोई जरूरत नहीं है, जो आम लोगों की थाली से उनके भोजन को हटा दे, जो उनकी जरूरतों के सामान को उनकी पहुंच से दूर कर दे। और अंत में चूंकि आपकी ओर से समय का इशारा बार–बार हो रहा है तो मैं सिर्फ इन असफल राजनेताओं को और सरकारों में बैठे हुए लोगों को सिर्फ यही कहना चाहती हूं कि गुजरात में से जो दो जुमलेबाज अपना झोला उठा कर साल 2014 के अंदर इस नारे को लेकर आए थे कि 'बहुत हुई मंहगाई कि मार अब की बार मोदी सरकार'। तो आज इस देश की जनता की ओर से, दिल्ली की जनता की ओर से और अपने विधानसभा की क्षेत्र की विशेष तौर पर महिलाओं की ओर से मैं अपनी विधानसभा में आपके समक्ष इस बात को कहना चाहती हूं कि अब मोदी जी बहुत हुई मंहगाई की मार अब आप कुर्सी छोड़ दीजिये मोदी सरकार। क्योंकि अब जनता आपकी तमाम नीतियों से अपके बहकावे के अंदर नहीं आएगी और मंहगाई से निजात पाने के लिए और अपना गुजर–बसर और अपनी आरामदायक जिंदगी बिताने के लिए अगर अब इस क्षेत्र में और इस देश के अंदर किसी की जरूरत है तो वो अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में ऐसी सरकारों की जरूरत है जो गरीब तबके को और आखिरी पंक्ति में खड़े हुए तबके को उसकी जरूरत का सामान, बिना उसकी आवाज उठाए मुहैया कराए। इस देश को ऐसे प्रतिनिधियों की जरूरत है। ऐसे प्रतिनिधियों की जरूरत नहीं है जो अपने आलीशान बंगलों में रहते हैं बड़ी–बड़ी गाड़ियों में चलते हैं और गरीब अगर पिसता है तो पिसता रहे, किसान आवाज उठाता है तो उठाता रहे, छात्र संघर्ष करता है तो करता रहे, महिलाएं आवाज बुलंद करें तो करती रहें। इन्हें सिर्फ करनी है तो जाति, धर्म और मजहब की गंदी राजनीति। तो अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ ये

कहना चाहती हूं कि ये मंहगाई जो देश के अंदर चारों तरफ पैर पसार रही है, अपनी जकड़न में आम व्यक्ति को ले रही है इस पर केन्द्र सरकार को फैसला लेना चाहिए, बढ़ी हुई कीमतों को तुरंत प्रभाव से cut-down करना चााहिए, और जो हमारे मध्यम वर्गीय परिवार हैं, जो हमारे गरीब परिवार हैं, उनको जरूर कुछ ना कुछ कन्सेशन मिलना चाहिए। बहुत बहुत धन्यवाद। जय हिंद, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः श्री दिलीप पाण्डेय जी।

श्री दिलीप पाण्डेय : सर शार्ट डिसकशन में बोलने की अनुमति देने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। अध्यक्ष जी, ये बहुत महत्वपूर्ण विषय है मंहगाई का और दुर्भाग्य पूर्ण ये रहा कि विपक्ष के साथियों को इसमें कोई विषय–वस्तु नजर नहीं आई। उसके पीछे की वजह ये भी हो सकती है कि कहीं ना कहीं उनका नेतृत्व इसके पीछे जिम्मेदार है। अभी हमारी बहन राखी बिरला जी ने इसके ऊपर अपनी बात रखी। मुझे लगता है कि निदा फाजली साहब का एक बड़ा अच्छा शेर है कि

तीन चौथाई से जाईद हैं जो आबादी में

उनके ही वास्ते हर भूख है मंहगाई है।

मैं बात कर रहा हूं इस देश के 70 प्रतिशत आबादी की जो भूख की मार झेल रही है, जो मंहगाई की मार झेल रही है और इसके पीछे के कारणों को जब हम देखने की, समझने की, परखने की कोशिश करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि अगर नीयत सही हो, पोलिटिकल विल पावर हो तो मंहगाई नाम की इस डायन का भी ईलाज संभव है। आज जबकि पोस्ट कोविड वर्ल्ड में लोग वापिस से अपनी पुरानी आमदनी पाने के लिए जद्दो–जहद कर रहे हैं, मंहगाई आसमान छू रही है और इसके ठीक पीछे पेट्रोल और डीजल के दाम मरी हुई जनता को और बुरी तरह से मारने की कोशिश में लगे हुए हैं। पेट्रोल, डीजल के ऊपर जब भी बात करो तो जो Whatsapp University से पास आऊट भक्त हैं, उनके पास अपने गढे हुए तर्क होते हैं। वो कहते हैं कि पैसा नहीं दोगे, टैक्स नहीं दोगे तो सड़क कैसे बनेगी। तुमको अच्छी सुविधाएं भी चाहिए और पेमेंट भी नहीं करोगे। या यूं कहते हैं कि पैसा आएगा

तभी तो हथियार खरीदे जाएंगे और चीन और पाकिस्तान को ठिकाने लगाया जाएगा। इस तरह के कुतर्क भारतीय जनता पार्टी द्वारा संचालित जो Whatsapp University है उससे निकलते हैं और लोगों को बरगलाने का प्रयास करते हैं। जबकि सब जानते हैं 2019 में लोकसभा का चुनाव हुआ, पेट्रोल, डीजल के prices frozen थे। जैसे ही चुनाव खत्म हुआ तुरंत 70 से 80 पैसे प्रति लीटर पेट्रोल डीजल के दाम बढ़ा दिए गए। कैसे हो गया भाई? ये कहां से हो गया? ये महज इत्तेफाक तो नहीं हो सकता ना कि जब 2018 में कर्नाटक में चुनाव थे 19 दिन तक सरकार ने पेट्रोल,डीजल के दाम नहीं बढ़े और कंपनियां यही थी सारी स्टेट ओन्ड कंपनियां थी, इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम, हिंदुस्तान पेट्रोलियम तमाम, ये वो दौर था कर्नाटक चुनाव का कि जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में आग लगी हुई थी लेकिन सरकार की घोर राजनैतिक इच्छा–शक्ति या यूं कहें कि दल को सियासी ऐजेंडे को देश की जनता के ऊपर रखने की प्रवृति, नतीजा क्या पेट्रोल डीजल का प्राईज 19 दिनों तक frozen था । चुनाव खत्म हुआ लगातार 16 दिन तक जनता ने पेट्रोल और डीजल की मंहगाई की मार को झेला। तीन रूपये 80 पैसे प्रति लीटर पेट्रोल और तीन रूपये 38 पैसे प्रति लीटर डीजल बढ़ गया। मतलब क्या है, मतलब सिर्फ इतना सा है कि केन्द्र की सरकार अपनी सहूलियत, अपनी सियासी सहूलियत के हिसाब से पेट्रोल के दामों को रेगुलेट करना सीख गई, उनको नियंत्रित करना सीख गई, उनको कंट्रोल करना सीख गई है। मैं पूछना और कहना चाहता हूं केन्द्र की सरकार से और मोदी जी से कि

आंखों में आंखें डाल कर करीब से पूछो,

आंखों में आंखें डाल कर करीब से पूछो,

महंगाई कैसे जान ले लेती है,

ये किसी गरीब से पूछो।

महंगाई कैसे जान ले लेती है,

ये किसी गरीब से पूछो।

मैं मंहगाई को खेत खलिहान से समझता हूं, किसान से समझता हूं, अपने घर की रसोई से समझता हूं। मुझे मालूम है उन घरों की परेशानियां जहां बसों में ट्रैवल करने के लिए अगर पहले सात सौ रूपये का पास बनता था तो अब 800 रुपये का बनने लगा है। जहां चार बार हफ्ते में ट्रैवल करने की आवश्यकता थी, पैट्रोल डीजल के दाम बढ़े, यात्रा की कीमत बढ़ी, दो तीन बार ही यात्रा करके काम चलाया जा रहा है। तो अभी आप देखिये असम में चुनाव हैं, मेघालय में चुनाव हैं और असम और मेघालय के चुनाव है और पैट्रोल डीजल की कीमतों पर वहां पर रोक लग गई है। मेघालय की सरकार ने जो वैट एक रूपये का वहां पर बंगाल की सरकार ने एक रूपये का वैट वहां पर कम कर दिया। असम के अंदर frozen है prices पैट्रोल डीजल के तो ये एकदम कलीयर है, एकदम स्पष्ट है। मैं आपको बताऊं, मेरा एक भारतीय जनता पार्टी के समर्थक मित्र हैं तो उन्होंने कहा कि दिलीप भाई आप खामख्वाह चिंता करते हो पैट्रोल डीजल के prices की। एक आसन ऐसा है कि आप करो और तुरंत पैट्रोल का दाम कम हो जाएगा। मैंने पूछा कौन सा आसन। बोले शीर्षासन करो 90 रूपये का पैट्रोल साठ रूपये का दिखने लगेगा। उल्टा हो जाओ। तो इस तरह के जुमले चल रहे हैं। लेकिन इन जुमलों के पीछे बड़ा दर्द है, बड़ी तकलीफ है, बड़ी पीड़ा है। साल पूछिये आप मशवरे लीजिये आप कि कैसे कम होगा, कैसे माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने एक मशवरा दिया और कई सारे इकोनोमिस्ट जो है इसके ऊपर बात कर रहे हैं कि क्यों ना पैट्रोल को ये एक्साईज और वेट की जद्दोजहद से खींच कर बाहर निकाला जाए और जीएसटी के अंदर ला दिया जाए इसको। भई जीएसटी के अंदर आ जाएगा तो अधिक से अधिक जो मैक्सिमम स्लैब है वो 28 परसेंट का है। 28 परसेंट के स्लैब को अगर आप लेकर आ जाएं नीचे, स्टेट बैंक की सर एक कमेटी है इकोनोमिक सर्वे की, उनका एक आंकलन आया हुआ है। मैं उस आंकलन को आपके आदेश से आपके सामने रखना चाहता हूं कि अगर ये कम कर दिया जाता है, जीएसटी के अंदर ला दिया जाता ह तो पेट्रोल और डीजल की प्राइसिस क्रमशः 75 और 68 रुपये हो जाएंगी लगभग। अभी तो क्या है कि जो स्टेट और स्टेट गवर्नमेंट की वैट, सेन्ट्रल गवर्नमेंट की एक्साइज को मिला दें तो 100 परसेंट पेट्रोल की कीमत से भी ऊपर चला जाता है। अभी जुलाई के महीने में दिल्ली की सरकार ने बढ़ाया लेकिन जैसे ही लगा कि कोविड ने परेशान

कर रखा है लोगों को तो दिल्ली की गवर्नमेंट ने तुरंत डीजल के ऊपर वैट कम किया, रिवर्ट किया जो दर्शाता है कि दिल्ली की सरकार कितनी संवेदनशील है अपने आवाम को लेकर, अपनी जनता को लेकर। तो जीएसटी के नीचे पेट्रोल–डीजल के प्राइसिस लाना चाहिए कि नहीं लाना चाहिए। इसके ऊपर बैठिए, चर्चा करिए आप ओपन करिए फोरम। लोग बात करने को तैयार हैं तो इस विषय को समझते हैं जो इन्टरनेशनल मार्किट में क्रूड ऑयल प्राइसिस को देखते वाच करते हैं वो समझते हैं किन कारकों से पेट्रोल–डीजल के प्राइसिस अप या डाउन होते हैं उनके साथ बैठिए आप। समाधान निकालिए टैक्स–विद बैठे हुए हैं। तो संभव सबकुछ है। लेकिन हो क्यों नहीं रहा क्योंकि सरकार जो है जनता का खून चूस के अपना खजाना भरने पर लगी हुई है। सरकार हर तरह के पैंतरे अपना कर भी एक्साइज ड्यूटी बढ़ाकर अपनी कमाई कर रही है, अपना खजाना भर रही है और यही वजह है कि 2020–21 में अध्यक्ष महोदय एक्साइज ड्यूटी में 48 परसेंट का बढ़ावा हुआ और इससे जो आय अर्जित हुई 2019 के आखिरी की मैं बात करूं अगर तो 1 लाख 32 हजार करोड़ थी जो 2020 तक आते–आते 1 लाख 96 हजार करोड़ के आस–पास हो गई। 2014 में जब पहली बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई उस समय एक्साइज काफी कम था। उस समय पेट्रोल पर लगभग 9.50 रुपये और डीजल पर लगभग 3 रुपये 60 पैसे के आस–पास की एक्साइज ड्यूटी थी और इस समय पेट्रोल पर तब से अब तक की तुलना करके देखिए आप तो लगभग 33 रुपये पेट्रोल पर और लगभग 32 रुपये डीजल पर हो चुकी। मतलब हालत ये है कि मैं अगर पेट्रोल पम्प पर जाता हूं पेट्रोल पम्प का ऑपरेटर कहता है जीरो देख लीजिए मैं उसे कहता हूं मेरा अकाउंट देख ले जीरो हो रखा है पेट्रोल भरा–भरा कर। तो माननीय अध्यक्ष महोदय मुझे लगता है कि केन्द्र की सरकार को थोड़ा संवेदनशील होना पड़ेगा। अपनी देश की जनता का खून चूस कर देश का खजाना भरने से वो खजाना नहीं है बद्दुआएं हैं गरीब आदमी की। मैं आपको दिखाना चाहता हूं एक टेबल मेरे पास है ये कैसे इन्टरनेशलन मार्किट में क्रूड प्राइसिस फ्लक्चुएट कर रहे हैं। लेकिन हिन्दुस्तान के अन्दर जो रिटेल प्राइस है वो कितना गुना है। जनवरी, 2020 के अन्दर क्रूड ऑयल प्राइस पर बैरल का प्राइस है 28.84 है। रिटेल प्राइस मिलता है 77.79 जो क्रूड ऑलय प्राइस का जो दाम लिखा है उससे तीन गुना है। मैं अगर 2020 में आ जाऊं

अगस्त के महीने में 20 रुपये 75 पैसे रिटेल की प्राइस 83.79 है जो लगभग चार गुना है और जनवरी की अगर मैं बात करूं तो 25.20 है और उसके तुलना में रिटेल प्राइस 87.57 है जो तीन गुना है। यानि अन्तर्राष्ट्रीय मार्किट में जब–जब दाम गिर रहा है हमारी सरकार जो है इस दाम गिरने का फायदा उठा कर अपना एक्साइज जो है बढ़ा दे रही है एक्साइज अप कर दे रही है। आज चुनाव आया असम ने 5 रुपये का एडिशनल टैक्स लगाया हुआ था उसने वापस कर लिया। अभी मेघालय ने भी 7.4 रुपीज पर लीटर पेट्रोल पर और 7.1 रुपीज डीजल पर इलेक्शन बाउंड स्टेट है, हमारा भी कम कर लिया और पश्चिम बंगाल में भी एक रुपया वापस कर लिया गया। जो इस बात को प्रमाणित करता है कि अगर केन्द्र सरकार की भारतीय जनता पार्टी की सरकार की राजनैतिक इच्छा शक्ति हो तो इन दामों को नियंत्रित किया जा सकता है जिसका एक सबसे सरल उपाय है जीएसटी के ambit में इन तमाम रेट्स को लेकर आ जाना। माननीय अध्यक्ष महोदय मैं आग्रह करना चाहूंगा स्टेट बैंक की जो कमेटी है इकॉनोमिक रिसर्च डिपार्टमेंट उनकी ही रिपोर्ट है सरकार को चाहिए कि एसबीआई के उस इकॉनोमिक्सट के साथ बैठे अपने इकॉनोमिस्ट को बिठाए जीएसटी के अन्दर इसको लाना हो तो क्या–क्या बदलाव करने पड़ सकते हैं व्यवस्था के अन्तर्गत 'pricing formula' के अन्तर्गत उसको लेकर चर्चा करे। लेकिन किसी भी कीमत पर जनता को राहत दे। माननीय अध्यक्ष महोदय कैलाश गौतम जी एक बड़े अच्छे कवि लेखक थे उनकी बात के साथ मैं अपनी बात को खत्म करना चाहूंगा कि

घर फूटे गलियारे निकले आंगन गायब हो गया।

घर फूटे गलियारे निकले आंगन गायब हो गया।

शासन और प्रशासन में अनुशासन गायब हो गया।

त्योहारों का गला दबाया बदसूरत मंहगाई ने।

आँख मिचौली हंसी ठिठोली छीना है तन्हाई ने।

फाल्गुन गायब हुआ हमारा सावन गायब हो गया।

शासन और प्रशासन में अनुशासन गायब हो गया।

बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय अपनी बात रखने का आपने मौका दिया। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। अखिलेश पति त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेश पति त्रिपाठीः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस विषय पर जो बहुत ज्वलंत मुद्दा है आज पूरे देश के लिए। मैं 2012 में भारतीय जनता पार्टी के कुछ सदस्य आ गए हैं, उनको याद दिलाना चाहूंगा कि जब केन्द्र में सरकार बनाने के लिए इनकी पार्टी चुनाव लड़ रही थी तो एक नारा बहुत चर्चित था देश में। कहा करते थे बहुत हुई मंहगाई की मार अबकी बार मोदी जी की सरकार। देश के लोगों को बड़ा भरोसा हो गया कि भाई कांग्रेस तो बहुत मंहगाई बढ़ाती है बहुत दिक्कत है चलो इनकी बातों में भरोसा कर लेते हैं हो सकता है ये कुछ कम कर दें लोगों ने वोट दे दिया। अब हुआ क्या देखिए 2014 में सरकार बनी इनकी 40 रुपया 91 पैसा डीजल का दाम अप्रैल, 2014 में, पेट्रोल का दाम था 65 रुपया 65 पैसे, देश के लोगों को बहुत भरोसा था। कांग्रेस को उन्होंने हटाया था मंहगाई के नाम पर। एक डकैत को हटाया था तो उससे बड़े डकैत को देखने का मौका मिल गया । हालत क्या हुआ आज जो है 8 साल के अन्दर–अन्दर, 7 साल के अन्दर–अन्दर सौ रुपये को लगभग जाने को तैयार है पेट्रोल। भारतीय जनता पार्टी के ये सदस्य क्यों नहीं बोलते। बिधूड़ी जी से उम्मीद करेंगे अभी जब बोलेंगे वो तो इस पर जरूर प्रकाश डालेंगे और डालना भी चाहिए बहुत सीनियर मैम्बर हैं जनता के मुद्दों पर बोलते हैं। डीजल का दाम जो 40 रुपया था वो दोहरा कार्यकाल पूरा नहीं हुआ, लेकिन डबल हो गया 81 रुपया 51 पैसा रेट है आज दिल्ली में। मैं दिल्ली में बताना चाहता हूं वैसे 86 रुपये में अलग–अलग हिस्सों में भी देश के बिकने का काम हो रहा है। सिलेंडर का दाम 399 रुपया था देश में। तब ये कहा करते थे कि आग लग गया देश में बहुत मंहगाई हो गया। इनकी एक नेता जी हैं सिलेंडर लेकर के रोड पर बैठ जाया करती थी। याद होगा आप लोगों को नाम तो याद होगा आप लोगों को हां

याद है ईरानी जी कहते हैं। तो वो बैठ जाया करती थी। लेकिन अब सवाल ये उठ रहा है कि अब जब सिलेंडर का दाम इस समय 900 रुपया होने को जा रहा है तो ये भारतीय जनता पार्टी वाले चुप क्यों हैं? इसपर देश में चर्चा क्यों नहीं हो रही है? ये बहुत हुई मंहगाई की मार अबकी बार मोदी सरकार का नारा लगाने वाले माफी क्यों नहीं मांग रहे देश से। ये वही लोग हैं जो कहा करते थे कि प्याज का दाम बहुत ज्यादा हो गया, सब्जी लोग नहीं खा पा रहे हैं। ये वो ही लोग हैं जो तेल के दाम बढ़ने पर, अध्यक्ष जी एक रुपया बढ़ने पर हल्ला करते थे पिछले तीन महीने में केवल–केवल तेल के दाम की बात रख रहा हूं खाद्य तेल की बात बताना चाहता हूं 70 रुपये से लेकर 140 रुपये का रेट हो गया फॉर्चून तेल। ये कैसे बढ़ रही है भाई देश में मंहगाई इसपर जवाब कौन देगा? इसपर जवाब कौन देगा देश में? मैं धन्यवाद देना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को दिल्ली के मुख्यमंत्री को कितनी विकट परिस्थिति कोरोना के काल में भी रही। इतना रेवेन्यू कम आया सारे प्रदेशों की अर्थव्यवस्था डावांडोल हो गई। लेकिन आपने कुशल प्रबंधन के बल पर न केवल दिल्ली की आर्थिक व्यवस्था को स्वस्थ रखने का काम किया पूरे 5 साल, 6 साल हो गए दिल्ली के बिजली के रेट में एक रुपया भी इजाफा करने का काम नहीं हुआ यहां पर । कहते हैं मंहगाई कम नहीं हो सकती। आपको सीखना है मंहगाई कम करना है या कन्ट्रोल करना तो आइए दिल्ली के मुख्यमंत्री आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी से सीखने का काम करिए। सीखिए आप इनसे। हमने वादा किया था दिल्ली के लोगों से कि हम आयेंगे तो देश की सबसे सस्ती बिजली और 24 घंटे बिजली देने का काम करेंगे। वो 6 साल हो गया, बदस्तूर जारी है। कोई वादा में वादाखिलाफी नहीं हुआ। ये भारतीय जनता पार्टी वाले वादाखिलाफी क्यों कर रहे हैं। आप सीखना चाहते हैं तो आइए हमारे मुख्यमंत्री आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी से सीखने का काम करिए जिन्होंने 6 साल पहले वादा किया था कि 20 हजार लीटर पानी लोगों को हम निःशुल्क देने का काम करेंगे। बदस्तूर कोरोना के काल में भी जारी रखने का काम किया है सरकार ने। किया कि नहीं किया? हमारी सरकार ने जो जनता से वायदा किया शिक्षा के लिए। जहां पर आपकी सरकारें लगातार अपने बजट में शिक्षा और स्वास्थ्य पर पैसों की कटौती करने का काम कर रहीं हैं, हमारी सरकार ने पुनः बदस्तूर 6 साल हो गया, आने वाले भारत के बच्चों के भविष्य

का ख्याल रखते हुए 1/4 खर्च का करने काम कर रहे हैं और दिल्ली में एक रूपये भी प्राइवेट स्कूलों का दाम, प्राइवेट स्कूलों में फीस बढ़ने का काम नहीं हो पाया। ये किसने करके दिखाया? माननीय मुख्यमंत्री केजरीवाल जी ने करके दिखाया और अपनी जनता के साथ खड़े होकर उनके जेब पर एक रूपया बोझ नहीं पड़ने पाया। माननीय मुख्यमंत्री जी की वजह से। एक सरकार अरविंद केजरीवाल जी की है जो दिल्ली की जनता के साथ खड़े होकर विकट से विकट परिस्थितियों में जब 02 लाख करोड़ रूपये दिल्ली के लोगों से इनकम टैक्स लेकर जाने के बाद दिल्ली के लोगों के हक पर डकैती डालने के बाद केन्द्र सरकार एक रूपया भी दिल्ली के लोगों को, दिल्ली की सरकार को देने का काम नहीं करती, उसके बावजूद अपना बजट ठीक किया और दिल्ली की जनता के साथ खड़े होकर एक रूपया भी दिल्ली के लोगों की जेब पर बोझ नहीं बढ़ने दिया। इस सरकार को मैं सैल्यूट करना चाहता हूं। सैल्यू करना चाहता हूं अरविंद केजरीवाल जी की सरकार को। व्यापारियों पर एक रूपया कहीं टैक्स का कोई बोझ नहीं डाला 6 साल हो गया। किसी तरीके से इण्डस्ट्रीज पर एक रूपया बोझ नहीं डाला। केवल कुशल आर्थिक व्यवस्था को अच्छा प्रबन्धन करके अपनी सरकार को चलाने का काम किया और भारतीय जनता पार्टी वालों के लिए एक मिसाल पेश किया है कि सीख लीजिए, जनता के जेब पर डाका डालना बन्द कर दीजिए। लोग बहुत परेशान हैं। दाल के दाम बढ़ गये हैं, चावल के दाम बढ़ गये हैं, आटा का दाम बढ़ रहा है, लोगों का रोटी खाना मुश्किल हो रहा है। लोगों का रसोई में जाकर गैस जलाना मुश्किल हो रहा है। लोगों को रोड पर चलने के लिए पेट्रोल का दाम, डीजल का दाम इतना आपने बढ़ा दिया है लोगों का गाड़ी चलाना मुश्किल हो रहा है। पब्लिक ट्रान्सपोर्ट सिस्टम और जितने व्हीकल हैं वो बहुत महंगे हो रहे हैं। भाड़ा बहुत महंगा हो गया। भाड़ा महंगा होने की वजह से हरेक चीज का प्राइस बढ़ रहा है। होश में आइए। ऐ भारतीय जनता पार्टी के लोगों वादाखिलाफी कर रहे हो, इस वादाखिलाफी का जवाब लोग पश्चिम बंगाल में भी लेंगे आपसे, असम में भी लेंगे, आने वाले हर चुनाव में लेंगे। उत्तर प्रदेश में भी लेंगे, उत्तराखण्ड में भी लेंगे और पंजाब में भी लेंगे। आप बेनकाब हो चुके हो और एक तरफ बेनकाब सरकार भारतीय जनता पार्टी की है, फेल सरकार है जो महंगाई नहीं रोक पायी और एक तरफ दिल्ली की मॉडल केजरीवाल सरकार है जिसने न केवल

महंगाई पर लगाम लगाई है, दिल्ली की जनता की जेब पर एक रूपया भी बोझ नहीं पड़ने दिया। मैं सैल्यूट करना चाहता हूं मुख्यमंत्री जी पूरी सरकार को कि आप लोगों ने एक मिशाल पेश किया है और जिन्होंने वादाखिलाफी की है उनको मिटाने का काम देश के लोग करेंगे। एक चीज और है। मैं कहना चाहता हूं। एक लाइन

लीक पर वे चले, जिनके पग और दुर्बल और हारे हैं,

लीक पर वे चले, जिनके पग और दुर्बल और हारे हैं,

हमें तो हमारी यात्रा से बने, ऐसे अनिर्मित पंक्ति पाने हैं।

ये सन्देश आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी ने दिया है भारतीय जनता पार्टी वालों को कि हम लोग सत्ता चलाने का अनुभव नहीं था लेकिन हम लोगों ने एक अच्छी नीयत और एक ईमानदार नेतृत्व के बल पर वो करके दिखाया जो आपको सीखने की जरूरत है। महंगाई रोकिए वरना आपके खिलाफ जनता अब सड़क पर उतरना शुरू करेगी। आपको निकलना बहुत मुश्किल होगा। बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी। आपका धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : धन्यवाद अखिलेश जी। बहुत अच्छे। श्री विजेंद्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, आज यहां पर कुछ विषय मैं आपके माध्यम से सरकार के समक्ष रखना चाहता हूं। दिल्ली के अन्दर जब से केजरीवाल सरकार दिल्ली में आयी है। दिल्ली में एक आम आदमी, गरीब आदमी का जीना मुश्किल हो गया है।

माननीय अध्यक्ष : भाई बातचीत नहीं। प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : और उसका कारण ये हैं कि आपके शासन काल में आम आदमी पार्टी के शासन काल में पेट्रोल और डीजल जिसके उपर जो वैट है उसमें लगभग जो वृद्धि है। जो आय सरकार को प्राप्त हो रही है। 2014 में 7 रूपये 10 पैसे डीजल में 30 परसेन्ट जो है वो तब से लेकर अब तक दिल्ली की सरकार दिल्ली की जनता से अतिरिक्त वैट जुटा रही है यानि कि उनकी आमदनी में, उनके सोर्सेज

में और अब भी जो वैट वढ़ रहा है पिछले कुछ समय में वो इस पेट्रोल की कीमत, डीजल की कीमत को यहां तक ले जाने में 60 परसेन्ट जो बेस रेट है, उसका 60 परसेन्ट टैक्सेशन दिल्ली की सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर लगभग किया है। दिल्ली में पेट्रोल, डीजल को सस्ता किया जा सकता है अगर दिल्ली की सरकार वैट की जो दरें हैं उसको घटा दें क्योंकि पेट्रोल की कीमत अगर बढ़ी है और सरकार उसमें वैट को अगर कम कर देती है तो दिल्ली के लोगों को डीजल और पेट्रोल सस्ता उपलब्ध कराया जा सकता है लेकिन हम देख रहे हैं कि सरकार में भारी भ्रष्टाचार है और उस भ्रष्टाचार के कारण दिल्ली के लोगों को उसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। एक तरफ मैं बताना चाहता हूं कि डेढ़ लाख करोड़ रूपये का भारत की सरकार ने गरीबों को आठ महीने तक कोरोना के दिनों में मुफ्त राशन वितरण किया। आठ महीने तक डेढ़ लाख करोड़ रूपये सरकार के खजाने से 6000 रूपया सालाना किसानों के बैंक एकाउन्ट में लगातार चार महीने में 2000 रूपये की एक किश्त किसानों के एकाउन्ट में डाली जाती है जिनसे उनको आर्थिक रूप से उसमें लाभ मिले। उनको सहयोग मिले और इसके साथ–साथ दिल्ली के अन्दर।

माननीय अध्यक्ष : अखिलेश जी बोलने दीजिए। प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : दिल्ली की सरकार आयुष्मान भारत को समय से लागू न करने के कारण और आज भी मैं चाहूंगा स्वास्थ्य मंत्री जी स्थिति स्पष्ट करें कि आयुष्मान भारत की दिल्ली में क्या स्थिति है। खुद मुख्यमंत्री जी ने सरकार ने कहा है कि हमने लागू कर दिया है। जब हम लोगों से पूछते हैं तो लोगों में अस्पष्टता है। उसका कोई स्पष्ट जवाब कहीं से मिल नहीं रहा है। इसका मतलब ये है कि दिल्ली में आज भी आयुष्मान भारत और उस पर ऑकड़े पेश करें कि आयुष्मान भारत को लेकर आपने दिल्ली में क्या किया। दिल्ली के सफाई कर्मचारियों की सैलरी रोकी जा रही है। उनको परेशान किया जा रहा है। दिल्ली में जो बार–बार स्ट्राइक हुई उसका कारण सिर्फ और सिर्फ दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार है जिसके कारण दिल्ली में सफाई कर्मचारियों को सैलरी तक उपलब्ध नहीं हो रही है। जिस तरह से नगर निगमों के रेशियो में जो पैसा काटा जा रहा है। जिस तरह से नगर निगमों का पैसा रोका जा रहा है उससे जो आम लोगों की सुविधायें हैं उसको कहीं

न कहीं उसमें हिट किया जा रहा है। दिल्ली की सरकार, दिल्ली के अन्दर..

माननीय अध्यक्ष : मंहगाई पर कुछ नहीं बोलना।

श्री विजेंद्र गुप्ता : दिल्ली के अन्दर महंगाई की जिम्मेदार दिल्ली की सरकार है। यह हमेशा का विषय है कि अगर दिल्ली में महंगाई है तो उसकी जिम्मेदार दिल्ली की सरकार है। दिल्ली की सब्जियों को लेकर, दिल्ली की दालों को लेकर, दिल्ली के अन्दर दालों की कीमतों को लेकर सरकार ने क्या योजना बनाई है कि जो महंगाई दिल्ली के अन्दर दालों को लेकर, सब्जियों को लेकर है उसके लिए दिल्ली की सरकार ने क्या योजना बनाई है? दिल्ली के लोगों को रोजमर्रा की चीजें, खाने–पीने की चीजें सस्ती मिल सके, उसको लेकर दिल्ली की सरकार ने क्या योजना बनाई है, क्या राहत दी, हम यह जानना चाहते हैं। अध्यक्ष जी, मैं आज की इस चर्चा पर इतना कहूंगा अगर एक–एक डील में दो सौ–दो सौ, चार सौ–चार सौ करोड़ रूपये की रिश्वत ली जा रही है। बसों की खरीद में दो सौ, चार सौ करोड़ रूपये की रिश्वत एक डील में ली जा रही है, एक पैतीस सौ करोड़ रूपया उनको एनुअल मेन्टेनेन्स कान्ट्रेक्ट किया जा रहा है। दिल्ली के अन्दर अगर महंगाई का कारण है तो आम आदमी पार्टी की सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार इसका मूल कारण है और जिसके कारण दिल्ली के लोगों को इस सरकार की जन–विरोधी नीतियों के कारण लोगों को ये सारी मुसीबत झेलनी पड़ रही है। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : श्री संजीव झा जी।

श्री संझीव झाः बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे पूरा देश जिस महंगाई की त्रासदी से गुजर रहा है, उसपर मुझे बोलने का मौका दिया। आज जब महंगाई पर इस सदन में चर्चा हो रही है तो मैं सबसे पहले देश के उन तमाम् किसानों को जो लगातार कई महीनों से सड़कों पर अपने तीन बिल को लेकर अलग अलग संघर्ष कर रहे, मैं उसको नमन करता हूं और मुझे लगता है कि देश के लोगों को अब ये समझाने का मौका भी है कि कई बार जब किसान सड़क पर संघर्ष कर रहे हैं तो लोगों को लगा था कि वो एमएसपी की बात कर रहे हैं। अपने प्राईस को लेकर, अपनी कीमत को लेकर, अपनी किसानी को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। बार बार

इस देश के किसान नेता कहते रहे कि बात केवल मेरी किसानी की नहीं है, बात इस देश की महंगाई की भी है। जिस तरह से जमाखोरी और जिस तरह से संसाधन को इकट्ठा करके और लोगों का शोषण होगा, मुझे लगता है कि सामने महंगाई एक बहुत बड़ा उदाहरण है। बार बार किसान नेता ये कहते रहे जो तीसरा कानून है, जिसमें ये कहा गया था वस्तु अधिनियम में जो संशोधन की बात की गयी थी, जिसमें जमाखोरी का एक लाइसेंस दिया गया था, उससे देश में महंगाई बढ़ेगी और एक सामान्य उपभोक्ता को उसका नुकसान उठाना पड़ेगा। अभी मैं कृषि मंत्रालय के एक आंकड़े को देख रहा था कि सरसों का रिकार्ड उत्पादन हुआ है, लेकिन एडिबल ऑयल के प्राईस के बारे में बहुत सारे हमारे साथियों ने बताया कि लगभग डेढ़ गुना, दो गुना प्राईस एडिबल ऑयल के बढ़े हैं तो इसका मतलब है कि रिकार्ड उत्पादन होने के बावजूद कहीं न कहीं जमाखोरी हो रही है और प्राईस डिकंट्रोल हो रहा है। प्राईस कंट्रोल में नहीं है। मुझे लगता है कि जैसा अभी दिलीप भाई कह रहे थे कि कोरोना की त्रासदी से पूरा साल 2020 लोग झेले। बहुत लोगों के रोजगार गये और फिर सामने महंगाई है। अभी राखी बहन कह रही थी कि डायन के रुप में महंगाई हमारे सामने है। मुझे लगता है कि आज ये जो महंगाई है, ये कोई अचानक नहीं हुआ। ये केन्द्र सरकार की विफलता को भी दर्शाता है और मुझे लगता है कि 2014 में इसी तमाम् नारों के साथ वो आए भी थे। उन्होंने कहा था कि चूंकि केन्द्र सरकार विफल है, इसीलिए महंगाई बढ़ती है। तमाम् तरह के मैं 2013–14 के प्रधानमंत्री जी के ट्वीट को खंगाल रहा था। उन्होंने किस तरह से उसमें बड़े अच्छे से समझाया था कि पेट्रोल का प्राईस कैसे कम हो सकता, डीजल का प्राईस कैसे कम हो सकता, महंगाई कैसे कम हो सकती है? लेकिन आज जो महंगाई का आलम है हम सब के सामने है। मैं भी कुछ आंकड़े देख रहा था। उज्जवला योजना की बड़ी चर्चा होती है। कहा गया है कि 8 करोड़ लोगों को गैस दिया गया। लेकिन मैं दूसरा आंकड़ा जो खंगाल रहा था बड़ा सरप्राइजिंग था कि उसी उज्जवला योजना में जो 8 करोड़ लोगों को यह रसोई गैस दी गयी, दूसरी बार केवल 3 परसेंट लोगों ने अपनी गैस को भरवाया। यानि केवल 24 लाख लोगों ने भरवाया, क्योंकि उनके पास पैसे नहीं हैं, गैस इतनी महंगी हो गयी। तो इसका मतलब है कि आप एक तरफ कह रहे थे कि हर घर गैस देंगे, लेकिन आपने सैलेंडर तो दे दिए, वो भराएगा कैसे। तो मुझे ये

लगता है कि इसमें कहीं न कहीं से एक व्यापार छुपा हुआ था। प्रधानमंत्री जी व्यापार बहुत अच्छे से जानते हैं और मुझे लगता है अभी अखिलेश भाई ठीक कह रहे थे कि देश में दो तरह के मॉडल हैं। एक मॉडल केन्द्र सरकार का है, जब सत्ता में आए थे तो वो कह रहे थे कि सबका साथ सबका विकास। लेकिन 7 साल में पूरे देश ने देखा है कि साथ तो सबका रहा, विकास केवल 2 का हुआ। विकास केवल अडानी और अम्बानी का हुआ, तो मुझे ये लगता है वो कोई कह रहे थे, ये नारा दे रहे हैं हम दो हमारे दो। हम दो कौन है वो तो पता है। हमारा दो केवल डीजल और पेट्रोल है, जो कमाई का जरिया बनाकर उन्होंने रखा हुआ है। तो मैं ये कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय। अभी इन्हीं के आंकड़े मैं देख रहा था कि फूड इफ्लेशन 11 परसेंट, वेजिटेबल बजट इंफ्लेशन लगभग 22 परसेंट। दाल पे इंफ्लेशन 18 परसेंट, एनुअल कंजूमर प्राईस की जो कंजप्सन 7.61 परसेंट, जो 2010 के बाद सबसे हाईयेस्ट है, तो मुझे लगता है कि आखिर ये विफलता किसकी है। देश में दो तरह के मॉडल हैं। एक केन्द्र सरकार का मॉडल जो आपको हमने बताया कि किस तरह से आम व्यक्ति को शोषण करके चंद व्यापारियों को फायदा पहुंचाया जा रहा है। दूसरी तरफ केजरीवाल मॉडल। अभी हमारे साथियों ने एलजी के अभिभाषण पर भी चर्चा की। कल बजट पर भी चर्चा होगा। अरविंद केजरीवाल जी ने इसी हाउस में बड़े अच्छे से समझाया था। एक सरकार का क्या दायित्व है। उन्होंने कहा था कि सरकार को ज्यादा उसके लिए सोचना चाहिए, जिसको ऊपर वाले ने कम दिया है। इसी प्रिंसिपल पर हमारी सरकार ने 200 यूनिट बिजली फ्री दिया, जो कि 200 यूनिट बिजली वही खर्चा करता जिसको ऊपर वाले ने कम दिया। आज पानी फ्री दे रहे हैं तो वो 20 हजार लीटर पानी वही खर्चा करता, जिसको ऊपर वाले ने कम दिया है। आज चाहे जितनी भी योजना हो हमारी, इन सभी योजनाओं का सबसे ज्यादा फायदा उसी को हो, जिसको ऊपर वाले ने कम दिया। तो मुझे लगता है कि इस महंगाई के आलम में आज दिल्ली की सरकार बिजली के जरिये, पानी के जरिये या अन्य और सुविधा योजना के जरिये 5–7 हजार रुपए बचाकर उनके पॉकेट में दे रहा है और यह एक बहुत बड़ी इकोनोमिक्स भी है कि अगर उनका वो पैसा बचता है तो कहीं न कहीं वो लगता है। चाहे वो उनके अपने भरण पोषण में लगे या महंगाई के आलम में कुछ उनको सबसिडि खाने का मौका मिल रहा है। बाकि के राज्यों में मौका नहीं मिलेगा

शायद। देखिये जब एकदम रोजगार की बात करते हैं तो मान लीजिए हम एक आम आदमी के पॉकेट में अगर पैसा है तो जाकर वो कुछ खरीदेगा तो उसका प्रोडक्शन बढ़ेगा। उसका प्रोडक्शन बढ़ेगा तो लोगों का रोजगार बढ़ेगा तो मुझे लगता है कि केन्द्र सरकार को दिल्ली से सीखना चाहिए कि एक इकोनोमी को, सेविंग को मास में पहुंचा कर किस तरह रोजगार या लोगों को फायदा पहुंचाया जा सकता है तो इसीलिए मैं ज्यादा न कहते हुए मैं बस इतना ही निवेदन करना चाह रहा हूं कि ये जो शोषण की नीति, केन्द्र सरकार की है, इसको छोड़ना चाहिए। इस देश की जनता ने बहुत भरोसा करके आपको वोट किया था। बहुत सारे नारे के साथ आप आए थे। लोग कांग्रेस की सरकार से परेशान थे और जब आपने कही बहुत हुई महंगाई की मार अबकी बार वर्तमान जो नारे आपने लगाए तो लोगों को लगा कि शायद कुछ हो सकता है। चूंकि गुजरात फेक मॉडल को आपने बेचा भी, उसकी सच्चाई सबके सामने आ रही है तो लोगों को लगा कि कुछ हो जाएगा। लेकिन जिस तरह से आप लूट मचा रहे हैं। जिस तरह से आज आम आदमी परेशान है। जिस तरह से वो हमेशा कहते थे जब कांगेस की सरकार थी तो कहते थे कि वो आम आदमी की बात तो करते हैं, आम औरत की बातें करते हैं, आम औरत का किचन बिगड़ रहा है, इसका घर चलाने की समस्याएं बढ़ गयीं। तो ऐसे प्रधानमंत्री को चिंता होनी चाहिए। मुझे लगता है जिस तरह से आज प्रधानमंत्री खुले तौर पर उद्योगपतियों से शोषण करवा रहे हैं और जिस तरह से महंगाई है, उसको रोकना चाहिए । अभी विजेन्द्र जी कुछ आंकड़े दे रहे थे कि केन्द्र ने राज्य सरकार ने क्या वैट बढ़ाये। मैं नहीं चाह रहा था कि आपकी केन्द्र सरकार के आंकड़े बताऊं कमोवेश 32 रुपए आपके बेस प्राईस हैं पेट्रोल के और 31 रुपए डीजल के और कमोवेश अगर मैं 2014 से ही तुलना करूं तो 2014 से 2021 में लगभग 8 सौ परसेंट एक्साईज बढ़ा है विजेन्द्र जी डीजल पर, लगभग ढाई सौ परसेंट बढ़ाया है आपने पेट्रोल पर, तो अगर घटाने की बारी आयी तो मुझे लगता है जिम्मेदारी पहले उसकी है, जिसने ये बढ़ाया और अगर राज्य की बात करें, दिल्ली की बात करें तो दिल्ली की सरकार जो टैक्स ले रही है उसके बदले दिल्ली की जनता को उसका फायदा मिल रहा है। आप गिनकर बता दीजिए कि केन्द्र सरकार की ऐसी कौन सी योजना या ऐसी कौन सी चीजें हैं, जिससे आम आदमी के पॉकेट में कुछ पैसा मिले, कुछ बचत हो जाए। तो मुझे लगता है दो चीजें

मैं कहना चाहता हूं, अपनी बात को समाप्त करते हुए कि केन्द्र सरकार को दिल्ली सरकार से सीखना चाहिए कि किस तरह से आम आदमी के पॉकेट में पैसे बच सकते हैं और दूसरा किस तरह से आम आदमी को लाभ पहुंचाया जा सकता है और इस महंगाई का जो आलम है, उसपर नियंत्रण रखना चाहिए। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। नेता विपक्ष श्रीमान बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी(माननीय नेता, प्रतिपक्ष): ये तो बिल्कुल खाली है मामला अध्यक्ष जीं

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं, कोई खाली नहीं, कोई बात नहीं। चार मंत्री बैठे हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अब जब सामने सदन के नेता न हों तो फिर थोड़ा सा अटपटा सा लगता है अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः मंत्री है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः डिप्टी साहब भी नहीं हैं।

माननीय अध्यक्षः कोई बात नहीं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बुलवा लेते तो अच्छा होता।

माननीय अध्यक्षः खाद्य मंत्री हैं, जिनका विषय है महंगाई का।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः यहां तो देखों इतनी डेमोक्रेसी है, खुली छूट है अपने आप अपना प्रमोशन कर लिया मंत्री जी ने।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी(माननीय नेता प्रतिपक्ष): आदरणीय अध्यक्ष जी, पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ गए उसको लेकर आम आदमी पार्टी के ओनरेबल मेंबर्स की ओर से केन्द्र में हमारी जो सरकार है उसकी बहुत आलोचना की गई है और बहुत ही धैर्य के साथ हमने उनको सुना है। लेकिन एक बात मैं आज जरूर कहना चाहता

हूं आपके माध्यम से किसी गीत की दो लाइन हैः

मझधार में नैया डोले तो माझी पार लगाये,

जब माझी नाव डुबाए तो उसे कौन बचाए।

अब दिल्ली में आप गरीब की नैया डुबा रहे हैं, अब आप सुन लीजिए, सुनिए और जवाब दिलवाइए ओनरेबल चीफ मिनिस्टर से।

माननीय अध्यक्षः चलिए–चलिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बहुत अच्छा फ्रुटफुल डिस्कशन मानना चाहिए देखो, अरे हम लोग जो डिस्कशन करते हैं न ये लोगों की शॉर्ट मैमोरी है किसी को याद नहीं रहता क्या।

माननीय अध्यक्षः समय थोड़ा गड़बड़ हो रहा है। समय अभी बोलना है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अगर हमने आपको सुना तो आप सुनने का थोड़ा माद्दा रखिए।

माननीय अध्यक्षः जरा दो मिनट प्लीज। समय बर्बाद हो रहा है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी, कोरोना काल में शराब के ठेके खोल दिए गए और शराब पर 70 परसेंट टैक्स कहेंगे या एक्साइज ड्यूटी कहेंगे सुन तो लो भई।

माननीय अध्यक्षः अभी आतिशी जी जवाब देंगी न, बोलना। उनको बोलने दो एक बार।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः 70 परसेंट कहिए कि टैक्स बढ़ा दिया या एक्साइज ड्यूटी बढ़ा दी। सैकड़ों करोड़ रुपया जो उससे आया वो प्रचार पर लुटा दिया। आदरणीय अध्यक्ष जी, जनवरी, 2015 में मुझे लगता है कि आदरणीय केजरीवाल जी की सरकार दिल्ली में आई।

माननीय अध्यक्षः फरवरी, 2015।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः फरवरी और मैं ये कह सकता हूं कि जब उनकी सरकार आई दूसरी बार तो डीजल पर वैट 12 परसेंट था और पेट्रोल पर वैट 20 परसेंट था। अरविंदकेजरीवाल की सरकार ने इस कोरोना संकट में डीजल पर जो वैट है वह 30 परसेंट कर दिया और पेट्रोल पर 20 परसेंट से बढ़ाकर 30 परसेंट कर दिया और उसके बाद जब दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने हल्ला–गुल्ला किया, तो आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने डीजल पर तो पौने सत्रह परसेंट वैट कर दिया लेकिन पेट्रोल पर आज भी 30 परसेंट है। आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं इस हाउस के सभी ओनरेबल मेंबर्स को बताना चाहता हूं 2018 में जब पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़े, उस समय भारत के फाइनेंस मिनिस्टर अरूण जेटली साहब थे और उन्होंने सभी राज्यों से अपील की कि हमारी सरकार एक्साइज पर 5 परसेंट हम कटौती करने जा रहे हैं यहां 5 रुपया कटौती करने के लिए जा रहे हैं, सभी राज्य सरकारें 5 परसेंट वैट पर कटौती करें। आदरणीय अध्यक्ष जी, आज मैं बताना चाहता हूं सभी ओनरेबल मेंबर्स को, उत्तर प्रदेश हो, हरियाणा हो उन्होंने फाइनेंस मिनिस्टर की अपील पर 5 परसेंट वैट कम कर दिया, जो आज लोग चिल्ला रहे हैं कि एक्साइज ड्यूटी बढ़ गई। दिल्ली की सरकार ने एक नया पैसा वैट पर खर्च नहीं किया ये है दिल्ली के लोगों के प्रति आपका प्रेम और यदि मैं ये कहूं सौ–सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली, तो वो उचित नहीं होगा? अरे आप जवाब तो दे दो भैया, अगर आपने फाइनेंस मिनिस्टर की अपील को भी ठुकरा दिया। सभी राज्यों ने उनकी अपील को स्वीकार किया लेकिन आपने दिल्ली के लोगों के प्रति जो आपकी जवाबदेही थी या जो आपको उनको रियायत देनी चाहिए थी, आपने नहीं दी। आज जब मंहगाई पर चर्चा हो रही है तो मैं आम आदमी पार्टी की सरकार के उस फैसले की कड़ी निंदा करना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी, दुनियाभर में जो मुल्क पेट्रोल और डीजल का उत्पादन करते हैं, आपको जानकारी होगी कि उत्पादन में कटौती हुई है। एक लाख बैरल पर डे के हिसाब से कटौती हुई है। इस बात को भी हमें ध्यान में रखना चाहिए और साथ के साथ मैं ये भी कहना चाहता हूं आपके माध्यम से कि देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने जब सरकार को जो रेवेन्यु आता है उसमें जब भारी कटौती हुई,

भारी कमी आई, उसके बावजूद भी जैसे माननीय विजेन्द्र गुप्ता जी ने कहा देश के लगभग 80 करोड़ गरीब लोगों को 8 किलो गेहूं, 2 किलो चावल, एक किलो चना मुफ्त उपलब्ध कराया जिसके ऊपर लगभग एक लाख साठ हजार करोड़ रुपया मोदी जी की सरकार ने खर्च किया है। आदरणीय अध्यक्ष जी, जन–धन खातों में देशभर में महिलाओं का खातों में 500–500 रुपये हर महीने डाले गए हैं। उज्जवला योजना के तहत महिलाओं को मुफ्त गैस के सिलेंडर भी दिए गए हैं। किसानों के खाते में भी हर साल 12–12 हजार रुपये डाले गए हैं और आदरणीय अध्यक्ष जी, इस देश में लाखों गरीबों को चाहे वो किसी भी जाति और धर्म के हो, जात और धर्म के नाम पर कोई भेद–भाव नहीं किया। मैं बधाई देना चाहता हूं भारत के प्रधानमंत्री को इस संकट की घड़ी में भी आज देश में लाखों गरीब लोगों को वो पक्के मकान बनाकर दे रहे हैं कम से कम एक परिवार को 4 लाख रुपये का जो लाभ हो रहा है तो क्या हमको प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? पूरे देश में आयुष्मान भारत योजना लागू हो गई इसी हाउस में। आदरणीय अध्यक्ष जी, डिप्टी चीफ मिनिस्टर साहब ने एश्योर किया था कि अब दिल्ली के अंदर आयुष्मान भारत योजना लागू करेंगे। जिस योजना पर देश के प्रधानमंत्री एक लाख करोड़ से ज्यादा खर्च कर रहे हैं। अगर दिल्ली में वो योजना लागू हो जाए और यदि गरीब आदमी बीमार हो तो 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी की सरकार की ओर से कराया जा सकता है। तो आखिर क्यों आश्वासन देने के बाद भी क्यों नहीं दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार ने अपनी कमिटमेंट को पूरा किया। आदरणीय अध्यक्ष जी, देशभर में गरीब लोगों को शौचालय बनाकर दिए जा रहे हैं। उस योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने दिया। गरीब आदमी जिसके पास छोटा सा जमीन का टुकड़ा है, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है वो घर नहीं बना पा रहा है। प्रधानमंत्री की जो आवास योजना है उसको दिल्ली की सरकार ने लागू नहीं होने दिया। यदि वो लागू हो जाती तो आज दिल्ली में एक झुग्गीवासी नहीं होता जिसके पास पक्का मकान नहीं होता ये है सच्चाई जो मैं इस सदन के सामने आज रखना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन में ओनरेबल मेंबर्स को बहुत सम्मान के साथ मैं एक बात कहना चाहता हूं आप वैट कम कर दीजिए, कम से कम 25–30 रुपये पर लीटर के हिसाब से पेट्रोल और डीजल की कीमतें कम हो जाएंगी और यदि

आप नहीं करेंगे, तो मैं इस सदन में बहुत अदब के साथ कह रहा हूं कि आपने वैट बहुत बढ़ाया है पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के तहत लाया जाएगा और हमारी सरकार कम से कम 25 रुपये पर लीटर पेट्रोल पर और 25 रुपये पर लीटर डीजल पर कम करेगी या तो आप ये कदम उठाइए नहीं तो हमको जीएसटी के तहत पेट्रोल और डीजल को लाना पड़ेगा। ये बात मैं कहना चाहता हूं आज।

.....व्यवधान.....

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हां, ये करना पड़ेगा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः ये करना पड़ेगा।

......व्यवधान....

माननीय अध्यक्ष : बिधूड़ी जी करिए कन्क्ल्यूड करिए प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं तो कर रहा हूं।

माननीय अध्यक्ष : नहीं आप अच्छा बोल रहे हैं आप करिए, करिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः ये हमारी बहन जो हैं न।

माननीय अध्यक्ष : वो बोलने दीजिए भई।

......व्यवधान....

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः माननीय राखी जी मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं। मैं बहुत अच्छे से आपको सुनता हूं।

सुश्री राखी बिरलाः आप गलत डायरेक्शन में जा रहे हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं गलत में नहीं जा रहा हूं।

सुश्री राखी बिरलाः क्योकि आप गलत डायरेक्शन में जा रहे हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अगर मैं गलत में जा रहा हूं तो आप मुझे करेक्ट कर देना। जब आपकी बारी आए। मैं कहता हूं ये।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्ष : राखी जी, राखी जी ...

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्ष : आतिशी जवाब देंगी, वो जवाब देंगी प्लीज नहीं अब बैठिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः देखिए हमारी बहन।

माननीय अध्यक्ष : जैन साहब जवाब।

सुश्री राखी बिरलाः केजरीवाल जी दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं और मैं ये विश्वास के साथ कहती हूं जब वो देश के प्रधानमंत्री बन जाएंगे तो 42 रुपये लीटर डीजल और पेट्रोल देश की जनता को मिलेगा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी मैं।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्ष : बैठिए राखी जी, राखी जी।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : बैठिए राखी जी बैठिए उनको बोलने दीजिए उनका जवाब मिलेगा भाई।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : राखी जी अब बैठ जाओ।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : अरे भई आप ही बोल सकते हैं क्या और नहीं बोलेंगे क्या बाद में बोलने वाले हैं न। दिलीप जी रोकिए जरा प्लीज।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः अरे भई वो जवाब नहीं देंगी क्या आतिशी जी।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष : चलिए कन्क्ल्यूड करिए, हो गया कन्क्ल्यूड करिए मुझे 5 मिनट में कन्क्ल्यूड करना है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बहन मैं यही कह सकता हूं कि जहां जीरो की बात है अगर उसका जवाब आप सुनना चाहती हैं तो एक सीट हम हारे एक आप हारे बराबर हो गए देखकर आप बताओ न। एक आप हारे चौहान बांगर एक हम शालीमार हारे तो बराबर–बराबर है मैच।

माननीय अध्यक्ष : चलो बिधूड़ी जी अब इन चीजों में मत ये आप अपना कन्क्ल्यूड करिए प्लीज, कन्क्ल्यूड करिए प्लीज प्लीज। समय देख लीजिए थोड़ा सा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, हम देश के आदरणीय प्रधानमंत्री जी को बहुत बधाई देना चाहते हैं कि उन्होंने खाद्यानों की कीमत नहीं बढ़ने दी। हम उनको बहुत–बहुत बधाई देना चाहते हैं और इस हाउस में फ्रूटफुल डिस्कशन हो मैं अंत में यही कहूंगा अपनी बहन राखी बिरला जी से जो ऑनरेबल डिप्टी स्पीकर हैं। सुभाष जी ने कहा है कदम कदम बढ़ाए जा खुशी के गीत गाए जा ये जिंदगी है कौम की तू कौम पर लुटाए जा, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : आतिशी जी।

सुश्री आतिशीः धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्ष : भई अब बातचीत नहीं थोड़ा प्लीज।

सुश्री आतिशी: धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने जो इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर मुझे बोलने का समय दिया। मैं अपनी बात शुरु करने से पहले कुछ हमारे ही देश के कुछ माननीय नेतागण, कुछ सांसद उनके कुछ ट्वीटस पढ़कर सुनाना चाहूंगी इस महंगाई के मुद्दे पर। एक हमारे अभी करंट सांसद हैं उनका एक ट्वीट है जो कहता है “massive hike in petrol prices is a prime example of a failure of the Government. This will put up a burden on hundreds of thousands of crores of people of my state” एक और हमारी सांसद हैं उनका एक ट्वीट है जो कहता है कि “yet another hike in petrol prices, the Government seems to ignore public outcry over price rise, arrogance of power unsympathetic to the needs of the poor.” उन्हीं सांसद का एक और ट्वीट “petrol price hike yet again” ये आम आदमी की सरकार now works only for खास तेल कंपनीज। एक और एक राष्ट्रीय पार्टी के प्रवक्ता हैं उन्होंने ट्वीट किया कि फाइनेंस मिनिस्टर कहते हैं कि जीडीपी फ्यूचर में बढ़ेगा पर वो जीडीपी का मतलब है गैंस, डीजल और पेट्रोल तो ये मैंने आपको कुछ ट्वीट्स पढ़कर सुनाए अध्यक्ष महोदय तो शायद जो लोग ये सारे ट्वीट सुन रहे होंगे उनको लग रहा होगा कि ये जो सारे ट्वीट्स मैं पढ़कर सुना रही हूं ये विपक्ष के अलग–अलग नेताओं के होंगे जो अभी बढ़ते हुए पेट्रोल के दाम एलपीजी के दाम पर ट्वीट कर रहे हैं पर मैं आपको बताना चाहूंगी के ये जो सारे ट्वीट्स हैं ये विपक्ष के नेताओं के नहीं हैं ये सारे ट्वीट्स भाजपा के नेताओं के हैं जो 2011 और 2014 के बीच में भाजपा के अलग–अलग नेताओं ने किए। पहला ट्वीट माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का था जब वो कह रहे थे कि पेट्रोल के बढ़ते दामों से जनता परेशान है। अगला ट्वीट माननीय मंत्री स्मृति इरानी जी का था जिन्होंने कहा के ये ‘arrogance of power’ है जो एक तरह से गरीबों की जो जरूरतें हैं उसे हम उपेक्षित कर रहे हैं। स्मृति इरानी जी थी जिन्होंने कहा कि आम आदमी की सरकार अब सिर्फ खास तेल कंपनियों के लिए काम कर रही है जो दाम इतने बढ़ते जा रहे हैं। संबित पात्रा जी ने कहा कि जीडीपी का मतलब है के गैंस, डीजल और पेट्रोल का दाम ही बढ़ रहा है एक देश की इकॉनॉमी तो बढ़ नहीं रही है। तो ये जो भारतीय जनता पार्टी के ही नेता हैं उन्होंने कुछ साल पहले जनता के सामने ये बात रखी कि अगर बार–बार गैस का दाम बढ़ेगा, पेट्रोल का

दाम बढ़ेगा, डीजल का दाम बढ़ेगा तो आम आदमी कैसे जिएगा। तो आज माननीय बिधूड़ी जी ये सवाल हम आपसे पूछना चाहेंगे क्योंकि आप यहां प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिन लोगों ने ये ट्वीट्स किए हैं वो तो यहां पर इस सदन में मौजूद नहीं हैं तो आज मेरा आपसे ये सवाल है और आपकी पार्टी से ये सवाल है तो क्या हम इन ट्वीट्स को सच्चाई मानें कि अगर तेल का दाम बढ़ रहा है तो खास तेल कंपनियों के लिए बढ़ रहा होगा के ये "arroagance of power" है जिसकी वजह से गरीबों का ध्यान नहीं रखा जा रहा, कि ये जो जीडीपी की बात होती है उसका मतलब ये है कि गैस, डीजल और पेट्रोल बढ़ रहा है क्योंकि ये आपके ही नेता कुछ साल पहले तक जो बढ़ते दाम हैं उनके बारे में बात करते थे। आपने अपने भाषण में अभी ये काफी जो एक फेमस गीत है उसमें कहा के जी 'मझदार में नैया डोले तो माझी पार लगाए, माझी जो नाव डुबाए तो उसे कौन बचाए' एक्चुअली ये बिल्कुल सही बात है। तो अगर मैं इस बात को थोड़ा सा हमारी अभी की परिस्थिति से कंपेयर करूं तो ये दिखता है कि जब हम गैस, डीजल, पेट्रोल के दाम की बात करते हैं ये दाम पूरी तरह से भारत की सरकार के हाथ में नहीं होता क्योंकि ये एक क्रूड प्राइसेज जो देश का जो इंटरनेशनली चलती हैं या जो एलपीजी प्राइसेज इंटरनेशनली चलती हैं उस पर निर्भर होता है तो बहुत सारी ऐसी चीजें होती हैं कि अगर इंटरनेशनल ऑयल प्राइसेज बढ़ गईं तो वो मझदार है जो हमारी नैया को डोल रहा है तो जो हमारे देश की सरकार है जो हमारे प्रधानमंत्री हैं उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वो देश की नाव को, देश की इकॉनॉमी को, गरीब का जो घर का बजट चल रहा है उसकी नाव को बचाएं लेकिन अगर हम जो अभी के पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ रहे हैं और मैं आपको ये आंकड़े भी शेयर कर दूंगी कि जो आज पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ रहे हैं वो ऐसे समय पर बढ़ रहे हैं जब पूरी दुनिया में क्रूड ऑयल के दाम घट रहे हैं तो जो आज नैया डुबोई जा रही है वो हमारे मांझी द्वारा ही डुबोई जा रही है, हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा ही डुबोई जा रही है क्योंकि जितना भी प्रोडक्शन क्रूड ऑयल का दुनिया में हो रहा है पिछले 2 वर्ष से क्रूड ऑयल का दाम दुनिया भर में घट रहा है बढ़ नहीं रहा है। ये सिर्फ भारत देश है जिसके माननीय प्रधानमंत्री आपकी पार्टी के हैं जिनके नेतृत्व में इस देश ने जो ऊचाइयां छुई हैं जीडीपी नहीं बढ़ा लेकिन पेट्रोल का दाम भारत के इतिहास में पहली बार 3 डिजिट तक छू गया ये इतिहास रचा

है माननीय प्रधानमंत्री ने, बिल्कुल मांझी ही डुबो रहा है, क्यों? क्योंकि दुनियाभर में तो क्रूड ऑयल के दाम गिर रहे हैं। आप देखिए कि अप्रैल 2003 में 33 रुपये लीटर पेट्रोल मिलता था और भारत ने ये पहली बार रिकॉर्ड टच किया जब 100 रुपये लीटर पेट्रोल का दाम हुआ फरवरी 24 को 2021 में। ये भारत के इतिहास में कभी नहीं हुआ तो ये श्रेय तो हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी को ही जाता है और अगर आप पेट्रोल और डीजल के बढ़ते हुए दामों को देखिए, देखिए कोई कह सकता है कि जी पेट्रोल और डीजल कौन इस्तेमाल करता है अमीर लोग इस्तेमाल करते हैं जिनके पास गाड़ियां होती हैं। जिनके पास बड़ी–बड़ी गाड़ियां होती हैं, एसयूवीज होती हैं। एक आम आदमी को क्या फर्क पड़ रहा है लेकिन जब डीजल और पेट्रोल का दाम बढ़ता है उसी से हर कमोडिटी का दाम बढ़ता है। उसी से सब्जी का दाम बढ़ता है। उसी से आलू और प्याज का दाम बढ़ता है। उसी से तेल का चावल का आटे का दाम बढ़ता है क्योंकि उस डीजल से चालित ट्रकों के माध्यम से ही देशभर में जो खाद्यान सामग्री है वो एक जगह से दूसरी जगह जाती है। तो जो महिलाएं महीने के शुरु में एक तारीख को अपने घर का बजट बनाती हैं आज उनसे उनका घर नहीं चल रहा है। न सिर्फ डीजल और पेट्रोल के दाम, टी–2–1.35.30–अंत तक–।। आप एलपीजी के सिलेंडर के दाम देखिए, एलपीजी के सिलेंडर के दाम 1 मार्च को 25 रुपये बढ़े थे, ये पिछले 3 महीने में सातवीं बार एलपीजी सिलेंडर के दाम बढ़े हैं, सातवीं बार बिधूड़ी जी। ये कोई छोटी बात नहीं है।

प्रधानमंत्री जी उज्जवला योजना की बात करते हैं। आपने भी अभी उज्जवला योजना का उदाहरण दिया। तो जैसे हमारे कुछ साथियों ने बताया भी कि अगर आप उज्जवला योजना के आंकड़े देखने जाएंगे तो जिन महिलाओं को प्रधानमंत्री जी ने उज्जवला के सिलेंडर दिए, आज वो सिलेंडर वापस कर रही हैं क्योंकि वो भरवा नहीं पा रही हैं। लेकिन मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री जी इस उज्जवला योजना के तहत एक नई ऊंचाई भी छूने वाले हैं। वो नई ऊंचाई ये है कि प्रधानमंत्री जी ने कहा कि देखो जो गांव में महिलाएं रहती हैं वो चूल्हे पर खाना बनाती हैं, वो परेशान होती हैं, उनको हमें क्लीन फ्यूल देना चाहिए, तो हम गांव की महिलाओं को चूल्हे से गैस सिलेंडर की ओर लेकर जाने वाले हैं। लेकिन जो नई ऊंचाइयां मुझे लगता है

प्रधानमंत्री जी इस बार छू देंगे कि वो शहरों में रहने वाली महिलाओं को गैस सिलेंडर से वापस चूल्हे पर ले जाएंगे क्योंकि आज जो गैस सिलेंडर के दाम हो गए हैं शहरी महिलाएं उन्हें अफॉर्ड नहीं कर सकती हैं।

आपने ये कहा कि माननीय अरविंद केजरीवाल जी जिम्मेदार है जो दाम बढ़ रहे हैं, जो महंगाई हो रही है। मेरा एक सुझाव है आपसे बिधूड़ी जी, आज आप जब घर वापस जाए तो आप एक बारी भाभी जी से जरूर बात करियेगा। आप उनसे ये जरूर पूछियेगा कि मोदी जी का सिलेंडर ज्यादा महंगा है कि केजरीवाल जी की बिजली ज्यादा महंगी है, आपको अपना जवाब वहीं पर मिल जाएगा कि महंगाई इस देश में कौन लेकर आ रहा है, इस शहर में कौन लेकर आ रहा है।... एक्चुअली वो हो सकता है ना बिधूड़ी जी को पता ना हो क्योंकि खर्चा तो घर की महिलाएं चलाती हैं तो इसीलिए मैंने सोचा कि मैं उन्हें कह दूं कि एक बारी भाभी जी से जरूर बात कर लीजियेगा। आप भाभी जी से ये भी बात करेंगे तो वो ये भी बता देंगी कि जब वो मोहल्ला क्लिनिक में जाती हैं तो दवाइयां फ्री मिलती हैं, डाक्टर पैसे नहीं लेता। अगर वो कभी डीटीसी बस में चली जाएं तो टिकट भी जीरो होता है, एक पैसा बस में भी नहीं देना पड़ता। बच्चों की स्कूल की फीस नहीं बढ़ रही, सरकारी स्कूलों में बच्चों को मुफ्त में अच्छी शिक्षा मिल रही है। बिजली, पानी आज दिल्लीवालों को मुफ्त मिल रहा है। अगर आज इस महंगाई के दौर में दिल्लीवाला अपने पैरों पर खड़ा हो पा रहा है तो वो सिर्फ और सिर्फ माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी की वजह से है, जिन्होंने बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, अस्पताल, महिलाओं के लिए बस राइड जो फ्री की है, उसकी वजह से। जो एलपीजी का, पेट्रोल का, डीजल का, सब्जी का, दाल का जो बढ़ता हुआ दाम है, जो लोगों की जेब में इतना बड़ा छेद कर दे रहा था, आज दिल्लीवाला सिर्फ मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की वजह से अपने पैरों पर खड़ा हुआ है।

बिधूड़ी जी, आपकी पार्टी ने जब 2014 में चुनाव लड़ा था तो हमारे बहुत से साथियों ने बताया कि उन्होंने एक नारा दिया था 'कि बहुत हुई महंगाई की मार, अबकी बार मोदी सरकार' तो जब आप बोल रहे थे तो मैं सोच रही थी कि शायद वो नारा थोड़ा सा गड़बड़ा गया। एक्चुअली शायद जो नारा आपकी पार्टी देना चाह रही

थी, वो नारा ये देना चाह रही थी 'अब तो थोड़ी सी हुई है महंगाई की मार, भाजपा करेगी सब हदें पार' और यही नारा है जो आपकी पार्टी आज के दिन में ना सिर्फ पूरी दिल्ली में बल्कि पूरे देश में महंगाई की हर हद पार कर रही है और देखिये आपकी ही पार्टी के नेता ने कहा था कि अगर हम आम जनता के बारे में, गरीब जनता के बारे में भूल जाएंगे तो ये हमारी arrogance है क्योंकि यही जनता है जो वोट देकर संसद में भेजती है और अगर इस तरह की महंगाई होती रही, यही जनता है जो उस संसद से निकाल कर बाहर फेंक देगी आपकी पार्टी को, ये सच्चाई है आज देश की बिधूड़ी जी। धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद आतिशी जी। श्रीमान सत्येन्द्र जैन जी, माननीय विद्युत मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री।

माननीय विद्युत मंत्री(श्री सत्येन्द्र जैन): आदरणीय अध्यक्ष महोदय,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः क्या–क्या?

माननीय विद्युत मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन): अभी कई साथियों ने महंगाई के ऊपर चर्चा की। देखिए चीनी जैसे राखी जी ने... बताया कि 20–25 रुपये किलो हुआ करती थी, अब 40–45–50 रुपये है, दुगना रेट हो गया। गैस का सिलेंडर 405 रुपये था, 819 रुपये, दुगने से भी ज्यादा हो गया। महंगाई इतनी ज्यादा बढ़ गई है, मैं आपको आज के कुछ रेट बताना चाहता हूं। ये बड़े–बड़े शहरों के, देश के बड़े शहरों के मैंने रेट अभी–भी नेट से देखे हैं। पेट्रोल दिल्ली में है 91 रुपये 17 पैसे, चेन्नई में 93 रुपये 11 पैसे, कोलकाता में 91 रुपये 35 पैसे, मुम्बई में 97 rupees 57 paise है, बैंगलोर 94 rupees 22 paise और भोपाल 99 Rupees 21 paise है। इसमें दिल्ली सबसे कम है और भोपाल सबसे ज्यादा है।... डीजल, अभी बताते है उसका रिजन आप निकाल लेंगे। डीजल के रेट दिल्ली में 81 rupees 47 paise , चेन्नई 84 rupees 45 paise है, कोलकाता 84 rupees 35 paise , मुम्बई 88 rupees 60 paise है, बैंगलोर 86 rupees 37 paise और भोपाल 89 rupees 98 paise दिल्ली और भोपाल, मतलब कि ये बड़े–बड़े मैंने शहर लिये, 6 शहरों का लिया है, बाकी भी देख सकते हैं, दिल्ली में पेट्रोल है 91 रुपये 17 पैसे और भोपाल में 99

रुपये 21 पैसे, फर्क है सिर्फ 8 रुपये महंगा है भोपाल में। डीजल, दिल्ली में 81 रुपये 47 पैसे और भोपाल में 89 rupees 98 paise यानी सिर्फ 8 रुपये, 51 पैसे महंगा है भोपाल में और भोपाल में सरकार किसकी है? भाजपा की।

मैं एक छोटी सी कहानी सुनाऊंगा आपको। हमारे कई साथियों ने जाने–अनजाने में एक बात कही कि भई 2014 में जब बीजेपी की सरकार बनी तो बीजेपी की सरकार से पहले, मतलब हमारे एक साथी जाने–अनजाने में बीजेपी की सरकार को बुरा बता रहे थे और इससे पहले वाली सरकार को कम बुरा बात रहे थे, यानि उसको बुरा बता रहे थे तो इसको ज्यादा बुरा बता रहे थे। हुआ क्या था, एक राजा था, वो बड़ा दुष्ट था। जनता के ऊपर बड़ा अत्याचार किया करता था। मरने लगा, बेटे को राजा बना दिया, कहता है पर बेटा ऐसे कुछ कर्म करना कि लोग मुझे याद करें, कुछ ऐसे कर्म करना कि बेटा मुझे याद करें। कांग्रेस भी जब जाने लगी तो बीजेपी को बोल दिया कि हमें कोई याद तो करें, हम तो बुरे तो थे पर हमें याद करें। कहते हैं चिंता मत करो, बीजेपी ने आकर इतने अत्याचार करें, इतना बुरा हाल कर दिया, कहते हैं वो ही अच्छे थे। तो वो उनको अच्छा बताने लगे। अब ये बीजेपी वाले क्या कहते हैं, बिधूड़ी जी कह रहे हैं, आपने बचाया नहीं, केजरीवाल ने बचाया नहीं। अरे किससे नहीं बचाया? कहते हैं हमसे नहीं बचाया। हद हो गई। कहते हैं हम मार रहे हैं आपने बचाया नहीं। या तो मारना बंद कर दो, वो बच अपने आप जाएंगे, कहते हैं नहीं, जनता को कंफ्यूज कर रहे हैं कि केजरीवाल नहीं बचा रहा, केजरीवाल चाहे तो आज ही बचा ले, 25 रुपये से 30 रुपये कम हो जाएंगे। मुझे लगता है अब जुमले बनाने ये भी सीख गये हैं। इस विधान सभा में हमने जुमले नहीं सुने थे अभी तक, आज जुमले सुने। कहते हैं नहीं तो हम मारना बंद कर देंगे। उन्होंने ये कहा है अभी कि देख लो या तो हमसे बचा लो, नहीं तो हम मारना बंद कर देंगे। मैं कहता हूं कि आप मारना बंद कर दो और इसको जीएसटी में ले आओ। अभी आपने कहा है कि डीजल को और पेट्रोल को हम 25 रुपये कम कर देंगे रेट, बिल्कुल सही कहा है इन्होंने अगर ये कल डीजल और पेट्रोल को जीएसटी के अंदर ले आते हैं तो 25 से 30 रुपये कम होंगे और हम इनसे कहते हैं, रिक्वेस्ट करते हैं, हाथ जोड़के प्रार्थना करते हैं कि जनता को वो आज से ये मारना बंद करें और जनता के ऊपर ये मार खत्म हो और डीजल और पेट्रोल के रेट पूरी देश में एक जैसे हो

.....व्यवधान.....

परंतु देखियेगा अब जुमलेबाजी का मतलब क्या होता है। एक साल बाद आप बैठेंगे, इस बारे में दुबारा से चर्चा करेंगे तो वो क्या कहेंगे, वो तो जुमला था जी। जीएसटी में ले आये अगर, अगर जीएसटी में ले आये तो पूरे देश में एक ही रेट होगा, भोपाल में ज्यादा कैसे करेंगे? अरे भोपाल में पेट्रोल 8 रुपये 4 पैसे महंगा है और डीजल 8 रुपये 51 पैसे दिल्ली से महंगा है, फिर ये कैसे कर पायेंगे? पूरे देश में एक ही रेट होगा ना। जीएसटी करने का मतलब क्या है? आज मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि आप डीजल को, पेट्रोल को जीएसटी में ले आइयेगा, हमारी पुरजोर डिमांड है। बिधूड़ी जी अगर आप चाहे तो, हमारे यहां से डेलिगेशन ले जाना चाहे तो हमारे सारे एमएलए जायेंगे आपके साथ, प्रधानमंत्री जी से मिलेंगे और इस काम को आप करवा दीजियेगा। दिल्ली के साथ–साथ पूरे देश का भला होगा। कम से कम जनता आपकी मार से तो बचेगी।

अध्यक्ष जी, जो महंगाई के ऊपर आज चर्चा हुई है, उस चर्चा के अंदर हमारे सभी साथियों ने बहुत सारे एग्जाम्पल्स भी दिये, बहुत सारी चीजें भी बताई। मैं फिर से एक बारी निवेदन करना चाहूंगा कि केंद्र सरकार थोड़ा संजीदा तरीके से पेश आये। अभी उन्होंने किसानों की बात की थी। कहते हैं किसानों को हमने 12 हजार रुपये दिये। तभी तो बेचारे बॉर्डर पर बैठे हैं। अरे उनकी इतनी भी सुन लो या वो तीन बिल वापस ले लो। आप तो बड़े दिल के लोग हैं। अगर वो इस बात से खुश नहीं हैं कि तुमने जो 3 बिल बनाये, वो वापस ले लो, एमएसपी भी लागू कर दो, वो भी खुश होकर अपने घर चले जाएंगे। सौ से ज्यादा किसान मर चुके हैं,... ढ़ाई सौ किसान मर चुके हैं। कम से कम आज आप जरूर फोन कर देना कि जी विधान सभा में सारी विधान सभा मान गई है और आपसे हम सहमत हैं, एक तो जीएसटी लागू करवा दें, एक किसानों के प्रति आप बड़ी सहानुभूति रखते हैं, उनकी बातें मान लें। धन्यवाद, जय हिंद, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः अब सदन की कार्यवाही 11 मार्च, 2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है। मेरा माननीय सदस्यों से प्रार्थना है आज भी 10 मिनट लेट सदन आरम्भ हुआ, कृपया इसका ध्यान रखें। चीफ व्हीप जी से विशेश रूप से आग्रह है। बहुत–बहुत धन्यवाद, जय हिंद।

(सदन की कार्यवाही दिनांक 11 मार्च, 2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, स्मैट फॉर्म्स, नई दिल्ली–110 007 द्वारा मुद्रित।